नई शिक्षा नीति के अनुसार

2024

TM

विश्वविद्यालय प्रकाशन (रजि.)
ग्वालियर
द्वारा प्रकाशित

20 प्रश्न

(परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण मॉडल प्रश्नोत्तर)

हिन्दी भाषा

(भाषा और संस्कृति)

आधार पाठ्यक्रम

तृतीय वर्ष

पाठ्यक्रम

भाषा और संस्कृति

[अधिकतम अंक - 50 अंक]

इकाई-1

(1)	भवानी प्रसाद मिश्र	–	परिचय
	पाठ	–	सतपुड़ा के जंगल
(2)	उषा प्रियंवदा	–	परिचय

पाठ – वापसी

(3) विवेकानन्द –

पाठ – शिकागो व्याख्यान

इकाई-2

(1) विद्यानिवास मिश्र –परिचय

पाठ – आँगन का पंछी

(2) महात्मा गाँधी –

पाठ – आत्मकथा के अंश

(3) विश्व के प्रमुख धर्म

इकाई-3

(1) वाक्य रचना एवं अशुद्धि शोधन।

(2) अनुवाद : अर्थ एवं प्रकार।

(3) बीज शब्द (की वर्ड/अवधारणा मूलक शब्द)

लोकतंत्र, समरसता, कला, साहित्य, अध्यात्म

अनुशंसित मूल्यांकन विधियाँ		
	अधिकतम अंक 50	न्यूनतम अंक 17

हिन्दी भाषा
(भाषा और संस्कृति)

इकाई-1

(1)
सतपुड़ा के जंगल
(भवानी प्रसाद मिश्र)

लघु एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

प्रश्न–1. 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर– 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता पाठक को प्रकृति की ऐसी अकल्पनीय दुनिया में ले जाती है जो मनोरम सौन्दर्य और आश्चर्य से भरी है। इस कविता में सतपुड़ा के जंगल का जीवंत वर्णन है। यह कविता अपने लयात्मक प्रवाह के लिए विशेष रूप से सराही जाती है।

भवानी प्रसाद मिश्र की 'सतपुड़ा के घने जंगल' एक मार्मिक कविता है। मध्य प्रदेश का यह जंगल अपनी जैविक सम्पदा के लिए बहुत प्रसिद्ध है। कवि ने जीव–जगत के बीच मनुष्य की उपस्थिति को बहुत तटस्थता से उकेरा है। उन्होंने बहुत खामोशी से हमें यह समझाया है कि पृथ्वी सभी जीवों का आश्रय है। मनुष्य इन सभी जीवों में से एक प्राणी है। पूरी कविता की बुनावट वाचिक शैली में है। अपनी ऊपरी बुनावट से यह कविता एक शिशु गीत का आनंद देती है।

प्रश्न–2. कवि ने जंगल को सात–सात पहाड़ वाले क्यों कहा है?

उत्तर– जंगल और पहाड़ एक–दूसरे के पूरक होते हैं। इन जंगलों की ओट में पहाड़ों की समानान्तर कई पंक्तियाँ फैली हुई हैं। इसीलिए सतपुड़ा के इस जंगल को "सात–सात पहाड़ वाले" कहा गया है। यानी वनस्पति के साथ पहाड़ का यह संगम इसे दुर्लभ बनाता है। पहाड़ों की इन श्रृंखलाओं में सिंह की उपस्थिति हमारे मन में कौतूहल और भय दोनों पैदा करती है। शेर की आवाज वनैले वातावरण को और स्वाभाविक बना देती है।

प्रश्न–3. इस ऊँघते जंगल में जब कवि ने प्रवेश किया तो उसे कैसा अनुभव हुआ?

उत्तर– जब कवि ने ऊँघते जंगल में प्रवेश किया तब उसने इस ध्वनि की कल्पना नहीं की थी। लेकिन यह जंगल विविध आवाजों का अजायबघर है। इन हिंसक पशुओं के बीच कवि की मजबूत कद–काठी के एक गोंड जनजाति युवक से मुलाकात होती है। कवि के अनुसार जंगल ही उसके जीवन का आधार है। सतपुड़ा का जंगल मानो उसमें एकाकार हो गया है। मुर्गे और तीतर उसके घर की शोभा बढ़ाते हैं। उसकी झोपड़ी जंगल की ही वस्तुओं से निर्मित है। महुए की सुगंध से उसकी झोपड़ी सुवासित है। होली का उल्लास और मस्ती जंगल के कठोर वातावरण को स्वप्निल बना देते हैं। लेकिन यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि मनुष्य की उपस्थिति से सतपुड़ा का जंगल रोचक और आनंदमय हो गया है।

प्रश्न–4. 'कवि ने 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता में जंगल की उपयोगिता और मानव जीवन में इसके महत्व को उद्घाटित किया है।' समझाइए।

उत्तर– कवि ने इस जंगल को हमारे लिए अत्यन्त मानवीय आनंदमय स्वरूप में प्रस्तुत किया है। जंगल ही हमारे प्राणवायु का आधार है। ये वर्षा वन हमारे जीवन के लिए, हमारे पोषण के लिए बहुत उपयोगी है। इसीलिए कवि ने इस जंगल को हमारे जीवन का आधार माना है। ये मौत का घर नहीं है।

प्राणदायिनी नदियाँ इन्हीं जंगलों और पहाड़ों से आकार ग्रहण करती हैं। 'नदी' का प्रयोग 'माँ' और संस्कृति के अर्थ में, 'द्वीप' का शिशु और व्यक्तित्व के अर्थ में और 'भूखंड' का पिता और समान के अर्थ में प्रयोग हुआ है अर्थात् कविता में प्रतीकों का एक स्तर प्राकृतिक और दूसरा मानवीय है। दोनों मिलकर प्रकृति और मनुष्य के संबंध को स्पष्ट करते हैं। ये नदी, झरने और नाले जंगल को खूबसूरत बनाते हैं। सारे पर्यटन केन्द्र इन्हीं जल धाराओं के आसपास होते हैं। परिंदों की चहचहाअट और नदियों की उद्गम भूमि भी इन्हीं जगलों में है। अरण्य, अभयारण्य और पक्षी बिहारों के एक–दूसरे के सरोकार होते हैं। कविता के अन्त में कवि का मन भी हिरन–दल के साथ कुलाँचे भरने लगता है। विविधवर्णी परिंदों के संग विचरण करने लगता है। वनैले पुष्पों के संग झूमने लगता है। रात की स्वच्छ चाँदनी की कल्पना में अठखेलियाँ करने लगता है। नए पत्ते और हरित दूर्वा कविता के अन्त में एक सम्मोहनकारी और मनोरम वातावरण की सृष्टि करते हैं। ऐसे लतायुक्त जंगल से हम विदा लेते हुए कृतज्ञता से भर उठते हैं।

प्रश्न–5. 'सतपुड़ा के जंगल' कविता में कवि ने हमें इन जंगलों में धँसने को क्यों कहा है?

उत्तर– सतपुड़ा के जंगलों में एक गहन निस्तब्धता अर्थात् शांति है। सब कुछ अलसाया–सा, अनमना–सा है। कहीं आसमान को छूते हुए साल के पेड़ हैं, तो कहीं वे आड़े–तिरछे बेतरतीब ढंग से फैल कर पंगडंडियों के बिलकुल करीब आ गए हैं। ये जंगल इतने सघन हैं कि इनमें हवा भी प्रवेश नहीं कर पाती है। ऊपर से कठोर व भयानक दिखाई देने वाले सतपुड़ा के जंगल में निडर होकर प्रवेश करो क्योंकि यहाँ किसी भी बात का भय नहीं है। भयानक होते हुए भी ये जंगल मौत के घर नहीं है। अतः कवि इन जंगलों में धँसने (प्रवेश करने) के लिए कहकर हमें निर्भयता का संदेश देता है।

प्रश्न–6. कवि ने इन जंगलों में निर्भयता से प्रवेश करने को क्यों कहा है?

उत्तर– इन जंगलों में अनेक नदी, झरने और नाले बहते हैं और पंछी, फूल, कलियाँ और हरी घास इनकी शोभा बढ़ाती है। जंगलों की शोभा, सुषमा इनमें प्रवेश करने की आकांक्षा भी जगाती है। ये जंगल अजगरों, बाघों और दुर्गम पहाड़ों से भी भरे पड़े हैं। लेकिन मनुष्य वही है जो इसका निर्भयता तथा साहसपूर्वक सामना करे और इसमें प्रवेश करे अर्थात् एक ओर जंगल में सौन्दर्य बिखरा पड़ा है और दूसरी ओर भय और कठिनाई भी है।

प्रश्न–7. कवि ने जंगलों के बिना मानव जीवन का अस्तित्व खतरे में क्यों बताया है?

उत्तर– जंगलों में स्थित पेड़, नदी, पहाड़ और हवा हमारे साथी हैं। हम इन पर निर्भर हैं। [i]के बिना मानव जाति का अस्तित्व ही खतरे में है। इन्हीं से हमारा पर्यावरण बनता है। [प]र्यावरण प्रकृति का अमूल्य उपहार है। अपनी संतुलित जिंदगी के लिए मनुष्य पेड़–पौधों, जल, वायु, पर्वत, जीव जंतुओं आदि पर निर्भर है, फिर भी अधिक–से–अधिक सुविधाओं के भोग के लालच में वह वनों का अंधाधुंध दोहन करता आ रहा है। इसका दुष्परिणाम प्राकृतिक आपदाएँ जैसे– बाढ़, भूकंप, सूखा आदि आते हैं।

इस प्रकार 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता हरियाली और पेड़ बचाने के लिए प्रेरणा देने का महत्वपूर्ण कार्य करती है।

प्रश्न–8. 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता की भाषा–शैली कैसी है?

उत्तर– 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। कवि ने सरल और प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग किया है जिसमें लयात्मकता भी है।

प्रश्न–9. 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता में दृश्यात्मकता है। कैसे?

उत्तर– इस कविता में दृश्यात्मकता है अर्थात् इसकी पंक्तियों में अनेक जीवंत चित्र हैं जो कविता को दृश्यात्मक बनाते हैं साथ ही वे इसमें चित्रों का काम करते हैं।

प्रश्न–10. इस कविता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया है। समझाइए।

उत्तर– 'सतपुड़ा के घने जंगल' एक ऐसी कविता है जिसमें पेड़, लता, हवा, पत्तों, नदी, झरने को मनुष्य के रूप में चित्रित किया गया है। साहित्य की भाषा में इसे "मानवीकरण अलंकार" कहते हैं अर्थात् जो मानव नहीं है, जड़ है– कल्पना शक्ति से उसे मानव जैसे व्यवहार करते दिखाना। मिश्रजी ने सतपुड़ा के जंगल के प्राकृतिक सौन्दर्य को दर्शाने के लिए इन जंगलों का मानवीकरण किया है। प्राकृतिक सौन्दर्य वर्णन में मानवीकरण अलंकार का सुन्दर प्रयोग हुआ है जैसे– झाड़ ऊँचे और नीचे, चुप खड़े हैं आँख मींचे।

प्रश्न–11. सतपुड़ा राष्ट्रीय अभयारण्य कहाँ स्थित है? संक्षेप वर्णन कीजिए।

उत्तर– सतपुड़ा राष्ट्रीय अभयारण्य भारत के मध्यप्रदेश राज्य के अन्तर्गत होशंगाबाद जिले में स्थित है। यह 524 वर्ग किमी. के क्षेत्र में फैला हुआ है। यह 1981 ई. में स्थापित किया गया था। राष्ट्रीय अभ्यारण्य का इलाका दुर्गम है। इसके अन्तर्गत बलुआ पत्थर के पहाड़ की चोटियों, संकीर्ण घाटियों, नालों और घने जंगलों के इलाके हैं। इस उद्यान में 1350 मीटर ऊँचे धूपगढ़ शिखर भी हैं और सपाट मैदान भी हैं। यह जैव विविधता में बहुत समृद्ध है। यहाँ वन्य पशुओं में बाघ, तेंदुआ, सांभर, चीतल, नीलगाय, काला हिरण आदि पाए जाते हैं। यहाँ पक्षियों की अनेक प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं जिनमें धनेश और मोर प्रमुख हैं।

प्रश्न–12. 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता में 'कवि ने हमें जंगल की सैर कराई है।' वर्णन कीजिए।

उत्तर– 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता में कवि बिना किसी भूमिका के हमें घने जंगल में प्रवेश कराकर जंगल की सैर कराते हैं। सतपुड़ा एक संज्ञा के रूप में प्रकट होता है। लेकिन ज्यों–ज्यों हम कविता में उतरते हैं, उसकी नवीन विशेषताएँ हमें मुग्ध करती चलती हैं। यानी जंगल का नीरव वातावरण नींद में तल्लीन है। कवि ने इन पंक्तियों में हमें यह भी संदेश दिया है कि आप इस जंगल में बगैर किसी बाधा के प्रवेश करें। कोई भी हस्तक्षेप करने से जंगल की नींद खुल जाएगी।

कवि सतपुड़ा के जंगल का आँखों देखा हाल वर्णन करते हैं। जंगली झाड़ियाँ कुछ छोटी हैं और कुछ ऊँची। जंगल और पेड़ एक ही जंगल के दो अनिवार्य हिस्से हैं। वहाँ घास और

कास भी बहुतायत में हैं। इसी के बीच साल और पलाश के पेड़ों का अन्तहीन सिलसिला है। लेकिन साल के पेड़ भी इस सतपुड़ा के जंगल में चुपचाप बिना किसी कोलाहल के खड़े हैं। इसके संग-पड़ोस में पलाश का जो पेड़ है, वह भी मौन धारण किए हुए है। वृक्ष परम्परा में पलाश एक पवित्र वैदिक पेड़ है। विविध संस्कारों में पलाश के पत्ते और उसकी टहनियाँ काम में आते हैं। इसीलिए कवि की यह अभिलाषा है कि तनिक ठहर कर इसमें 'धँसो' अर्थात् धीमे-धीमे जंगल में प्रवेश करो। इसकी मनोरमता को आँखों में भर लो। जंगल की हवा भी इसमें सहसा नहीं प्रवेश कर पाती है।

इस सुखद दृश्य के बाद कवि जंगल के कठोर और डरावने पक्ष की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं। किसी भी सिक्के के दो पहलू होते हैं। हरियाली की गोद में भी कुछ डरावने पल बैठे हुए हैं। इस मनोहारी जंगल में मकड़ियों की विविध प्रजातियाँ भी हैं। जंगल में इन मकड़ियों के रहस्यमय जाले उनके स्वाभाविक घर हैं। मच्छरों की भिनभिनाहट और दंश इस जंगल का यथार्थ है। इस जंगल के शांत वातावरण में कवि तेज हवा, पानी, आँधी से भी हमारा परिचय कराते हैं। कविता में जंगल का रूप और रंग विविध मौसम में अपने अलग-अलग तेवर में प्रकट हुआ है। इसीलिए, मिश्रजी का यह जंगल एकरस नहीं है। यह बहुरूपिया है। यह जगल अजगरों की उपस्थिति से भी समृद्ध है।

प्रश्न-13. पं. भवानी प्रसाद मिश्र जी की प्रसिद्ध रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर- (1) नीली रेखाएँ तक, (2) अनाम तुम आते हो, (3) गीतफरोश, (4) परिवर्तन के लिए, (5) चकित है, दुःख, (6) त्रिकाल संध्या, (7) पंचशती, (8) बुनी हुई रस्सी, (9) अंधेरी कविताएँ, (10) खुशबू के शिलालेख, (11) मान सरोवर, (12) व्यक्तिगत, (13) कालजयी।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(1) भवानी प्रसाद मिश्र किसके दर्शन से प्रभावित थे?
(अ) डॉ. राधाकृष्णन (ब) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
(स) महात्मा गाँधी (द) पं. जवाहर लाल नेहरू।
उत्तर- (स) महात्मा गाँधी।

(2) भवानी प्रसाद मिश्र कौन से कवि हैं?
(अ) राष्ट्रीय (ब) नई कविता एवं प्रयोगवादी
(स) रहस्यवादी (द) छायावादी।
उत्तर- (ब) नई कविता एवं प्रयोगवादी।

(3) कौन से रचनाकार गाँधी दर्शन से प्रभावित हैं?
(अ) मैथिलीशरण गुप्त (ब) भवानी प्रसाद मिश्र
(स) महादेवी वर्मा (द) जयशंकर प्रसाद।
उत्तर- (ब) भवानी प्रसाद मिश्र।

(4) भवानी प्रसाद मिश्र किन कवियों में अग्रणी हैं?
(अ) समझौतावादी (ब) मानवतावादी

(स) आदर्शवादी (द) समाजवादी।
उत्तर- (ब) मानवतावादी।

(5) भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म किस सन् में हुआ?
(अ) 1903 में (ब) 1918 में
(स) 1913 में (द) 1918 में।
उत्तर- (स) 1913 में।

(6) भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म कहाँ हुआ था?
(अ) ग्वालियर में (ब) होशंगाबाद में
(स) इन्दौर में। (द) कटनी में
उत्तर- (ब) होशंगाबाद में।

(7) भवानी प्रसाद मिश्र कौनसी पत्रिका का संपादन करते थे?
(अ) मनोरमा (ब) कल्पना
(स) सरिता (द) सारिका।
उत्तर- (ब) कल्पना।

(8) भवानी प्रसाद मिश्र ने कहाँ तक पढ़ाई की थी?
(अ) बी.ए. (ब) एम.ए.
(स) बी.एस.सी. (द) डिप्लोमा।
उत्तर- (अ) बी.ए.।

(9) भवानी प्रसाद मिश्र का निधन कब हुआ?
(अ) 1979 में (ब) 1985 में
(स) 1989 में (द) 1999 में।
उत्तर- (ब) 1985 में।

(10) जंगल में क्या चुप नहीं है?
(अ) पलाश (ब) कास
(स) हवा (द) घास।
उत्तर- (स) हवा।

(11) कविता के इस अंश में जंगल में किसका चित्र नहीं दिखाई देता?
(अ) मकड़ियों के जाल का (ब) होली के त्योहार का
(स) मच्छरों के दंश का (द) हिरन-दल का।
उत्तर- (ब) होली के त्योहार का।

(12) वन में कौन निश्चिंत है?
(अ) मुर्गे (ब) तीतर
(स) गोंड (द) झोपड़ी।
उत्तर- (स) गोंड।

(13) कविता में निम्न में से कौन-सी विशेषता गोंड जनजातियों की नहीं है?

(अ) उन्होंने मुर्गे और तीतर पाले हुए हैं (ब) झोपड़ी पर फूस डाल रखी है।
(स) वे तगड़े और काले हैं। (द) वे अनमने रहते हैं।

उत्तर– (द) वे अनमने रहते हैं।

(14) कवि सतपुड़ा के जंगल को मौत का घर नहीं मानते, क्योंकि–
(अ) यह बहुत घना है (ब) यह निर्जन है
(स) यह शांत है (द) यह सभी का पालन करता है।

उत्तर– (अ) यह बहुत घना है।

(15) जंगल ने किसे अपनी गोद में पाला है?
(अ) नदी को (ब) झरने को
(स) नाले को (द) नदी, झरने और नाले को।

उत्तर– (द) नदी, झरने और नाले को।

(16) कवि के अनुसार वृक्षों में नाना प्रकार से क्या उलझी हैं?
(अ) पंखुड़ियाँ। (ब) कलियाँ
(स) पुष्प (द) लतायें।

उत्तर– (द) लतायें।

(17) 'सतपुड़ा के घने जंगल' के लेखक .... हैं
(अ) महादेवी वर्मा (ब) हरिकृष्ण त्रिपाठी
(स) हरिशंकर परसाई (द) भवानी प्रसाद तिवारी।

उत्तर– (द) भवानी प्रसाद तिवारी।

(18) कवि ने सतपुड़ा के घने जंगलों के लिए किसका आव्हान किया है?
(अ) दौड़ने का (ब) भ्रमण करने का
(स) नौकायन का (द) चलने का।

उत्तर– (ब) भ्रमण करने।

(19) 'सतपुड़ा के घने जंगल' किस प्रदेश में पाये जाते हैं?
(अ) उत्तरप्रदेश में (ब) मध्यप्रदेश में
(स) गुजरात में (द) महाराष्ट्र में।

उत्तर– (ब) मध्यप्रदेश में।

(20) सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान कहाँ स्थित है?
(अ) राजस्थान में (ब) मध्यप्रदेश में
(स) गुजरात में (द) उत्तरप्रदेश में।

उत्तर– (ब) मध्यप्रदेश में।

(21) 'मच्छरों के दंश वाले' इस पंक्ति में 'दंश' से क्या आशय है?
(अ) दस गुना बड़े मच्छर (ब) मच्छरों का झुंड
(स) दंश वाले मच्छरे (द) दांत काटने की क्रिया।

उत्तर– (द) दांत काटने की क्रिया।

(22) 'सतपुड़ा के जंगल' कविता किस विषय पर आधारित है?
(अ) घने जंगल पर (ब) प्रकृति एवं वन्यजीवों पर
(स) जंगल में पेड़ों पर (द) आधुनिक जंगल पर।

उत्तर– (ब) प्रकृति एवं वन्यजीवों पर।

(23) 'सतपुड़ा के जंगल' कविता में मुख्य रूप से किन दो वृक्षों का वर्णन किया गया है?
(अ) पीपल और जामुन के वृक्ष (ब) नीम और पीपल के वृक्ष
(स) शाल और पलाश के वृक्ष (द) आम और सेव के वृक्ष।

उत्तर– (स) शाल और पलाश के वृक्ष।

(24) 'सतपुड़ा के जंगल' कविता में इनमें से किस जीव का वर्णन नहीं है?
(अ) मकड़ी (ब) छिपकली
(स) मच्छर (द) सांप।

उत्तर– (ब) छिपकली।

(25) 'सतपुड़ा के जंगल' कविता में काली लताओं की उपमा किससे की गई है?
(अ) गाय से (ब) बंदर से
(स) सांप से (द) भालू से।

उत्तर– (स) सांप से।

(26) 'सतपुड़ा के जंगल' कविता में किसके नींद में डूबे होने की बात कही गई है?
(अ) बंदर के (ब) सांपों के
(स) जंगल के (द) नदियों के।

उत्तर– (स) जंगल के।

(27) सतपुड़ा पर्वत मध्यप्रदेश के किस भाग में है?
(अ) पश्चिमी भाग (ब) पूर्वी भाग
(स) दक्षिणी भाग (द) उत्तरी भाग।

उत्तर– (स) दक्षिणी भाग।

(28) 'सतपुड़ा के जंगल' कविता में किस नदी का वर्णन नहीं है?
(अ) नर्मदा (ब) ताप्ती
(स) गोदावरी (द) गंगा।

उत्तर– (द) गंगा।

(29) 'सतपुड़ा के जंगल' में गोंड जाति किनको पालती है?
(अ) बिल्ली और गाय (ब) कुत्ता और भालू
(स) मुर्गे और तीतर (द) भेड़ और बकरी।

उत्तर– (स) मुर्गे और तीतर।

(30) 'सतपुड़ा के जंगल' कविता में कवि ने किस जाति का वर्णन किया है?
(अ) गोंड जाति (ब) सहरिया जनजाति
(स) मैती जनजाति (द) लकड़हारा जाति।

उत्तर– (अ) गोंड जाति।

(31) 'सतपुड़ा के जंगल' कविता में किस त्यौहार का वर्णन है?

(अ) क्रिसमस (ब) होली
(स) दीपावली (द) ईद।

उत्तर– (ब) होली।

(32) कवि के अनुसार प्रकृति के विविध स्वरूपों की मनोहारी छटा क्या है?

(अ) घने पेड़ (ब) घने जंगल
(स) घने पर्वत (द) घने सरोवर।

उत्तर– (ब) घने जंगल।

(33) 'सतपुड़ा के जंगल' कविता में कितने पहाड़ों का वर्णन है?

(अ) चार–चार पहाड़ (ब) सात–सात पहाड़
(स) बारह–बारह पहाड़ (द) दस–दस पहाड़।

उत्तर– (ब) सात–सात पहाड़।

(34) सतपुड़ा के घने जंगल में किस जाति के लोग निवास करते हैं?

(अ) ब्राह्मण (ब) क्षत्रिय
(स) शूद्र (द) गोंड।

उत्तर– (द) गोंड।

(35) 'सतपुड़ा के जंगल' कविता के अनुसार एक–दूसरे के पूरक कौन होते हैं?

(अ) जंगल और आकाश (ब) धरती और जंगल
(स) समुद्र और जंगल (द) जंगल और पहाड़।

उत्तर– (द) जंगल और पहाड़।

(36) 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता में किसका वर्णन है?

(अ) विचारों का (ब) भावात्मकता का
(स) सूचनाओं का (द) संदेशों का।

उत्तर– (ब) भावात्मकता का।

(37) कवि के अनुसार सतपुड़ा के घने वनों में कठिन तथा कष्टदायी क्या है?

(अ) दौड़ना (ब) चलना
(स) घूमना (द) गाना।

उत्तर– (ब) चलना।

(38) कवि के अनुसार सतपुड़ा के घने जंगल में चारों तरफ क्या छाये हैं?

(अ) बादल (ब) जाले
(स) ओस (द) लताएँ।

उत्तर– (ब) जाले।

(39) भारत में क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ा वन क्षेत्र कहाँ है?

(अ) मध्यप्रदेश में (ब) राजस्थान में
(स) गुजरात में (द) महाराष्ट्र में।

उत्तर– (अ) मध्यप्रदेश में।

(40) कवि ने 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता में कहाँ की यात्रा का वर्णन किया है?

(अ) पृथ्वी की यात्रा (ब) पाताल की यात्रा
(स) जंगल की यात्रा (द) आकाश की यात्रा।

उत्तर– (स) जंगल की यात्रा।

(41) जंगल अपने घनेपन के कारण कैसे दिखाई देते हैं?

(अ) सोते (ब) ऊँघते
(स) हिलते (द) रोते।

उत्तर– (ब) ऊँघते।

(42) 'सतपुड़ा के घने जंगल नींद में डूबे हुए से, उँघते अनमने जंगल।' इन पंक्तियों से लेखक का क्या आशय है?

(अ) पेड़ तथा जंगल निर्जीव ना होकर सजीव हैं
(ब) पेड़ सदा सोते रहते हैं
(स) पेड़ दिन में सोते और रात में जागते हैं
(द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (अ) पेड़ तथा जंगल निर्जीव ना होकर सजीव हैं।

(43) घने जंगल क्या सहन करते हैं?

(अ) भूकंप को (ब) आँधी तूफान को
(स) ओस (द) चक्रवात को।

उत्तर– (ब) आँधी तूफान को।

(44) सतपुड़ा के जंगल किससे भरे हैं?

(अ) बन्दरों से (ब) काँटों से
(स) अजगरों से (द) भालुओं से।

उत्तर– (स) अजगरों से।

(45) वन सजीव क्यों प्रतीत होते हैं?

(अ) हरियाली से (ब) बाघ की गर्जना से
(स) बिजली के चमकने से (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (ब) बाघ की गर्जना से।

(46) सतपुड़ा के घने जंगल कैसे हैं?

(अ) आकाश को छूते हुए से (ब) नींद में डूबे हुए से
(स) अम्बर पर फैले हुए से (द) पृथ्वी पर फैले हुए से।

उत्तर– (ब) नींद में डूबे हुए से।

(47) सतपुड़ा के घने जंगल कहाँ पर हैं?

(अ) गुजरात में (ब) महाराष्ट्र में
(स) मध्यप्रदेश में (द) उत्तरप्रदेश में।

उत्तर– (स) मध्यप्रदेश में।

(48) कविता की 'पंक दल में पले पत्ते' पंक्ति में कौन–सा अलंकार है?

(अ) उत्प्रेक्षा अलंकार (ब) श्लेष अलंकार

(स) उपमा अलंकार (द) अनुप्रास अलंकार।

उत्तर– (द) अनुप्रास अलंकार।

(2)
वापसी
(उषा प्रियंवदा)

लघु एवं दीर्घउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. गजाधर बाबू को अपनी पत्नी की कौनसी बातें याद आती हैं?

उत्तर– 'वापसी' कहानी कहानीकार उषा प्रियंवदा की एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। कहानीकार ने इस कहानी में कहानी के नायक गजाधर बाबू के विचारों का एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत कहानी के कथानक के अनुसार गजाधर बाबू एक स्टेशन मास्टर थे। रेलवे की नौकरी के कारण उन्हें अपने जीवन में प्रायः छोटे–छोटे स्टेशनों पर रहना पड़ा और परिवार से अलग रहकर काफी समय तक अकेले ही जीवनयापन करना पड़ा।

कहानी के कथानक के अनुसार गजाधर बाबू स्वभाव से बहुत स्नेही व्यक्ति थे और वे दूसरों से भी स्वयं के प्रति स्नेह की आकांक्षा रखते थे। जब बच्चे छोटे थे तब उनका परिवार उनके साथ ही नौकरी वाले स्थान पर रहता था। लेकिन बच्चों के बड़े हो जाने पर उनके बच्चे और उनकी पत्नी शहर में रहने लगे, जिससे उनकी पढ़ाई में बाधा न हो और वे नौकरी पर अकेले रहने लगे।

गजाधर बाबू जब नौकरी पर परिवार के साथ रहते थे, तब वे ड्यूटी से लौटकर बच्चे से हँसते–बोलते और पत्नी से भी मनोविनोद कर लेते थे। इस प्रकार उस समय उन्हें अपने गृहस्थ जीवन में एक आनन्द की अनुभूति होती थी, लेकिन परिवार के चले जाने पर वे एकाकी रह गए थे। आज उन्हें पत्नी की स्नेहपूर्ण बातें याद आ रही थीं। जो निम्नानुसार हैं, वे सोचते हैं कि–

'शीतकाल की दोपहर में गर्मी होने पर भी उनकी पत्नी दो बजे तक आग जलाए रखती थी और उनके स्टेशन से वापस आने पर वह उनके लिए गरम–गरम रोटियाँ सेंकती, उनके खा चुकने के बाद भी वह थोड़ा–सा कुछ और थाली में परोस देती थी और बड़े प्यार से उनसे खाने का आग्रह करती। जब वह थके–हारे बाहर से आते थे, तब वह उनकी आहट पाकर रसोई के द्वार पर निकल आती और उसकी सलज्ज आँखें मुस्करा उठती थीं।'

इस प्रकार आज नौकरी पर अकेले रहते हुए गजाधर बाबू को अपनी पत्नी की हर छोटी–सी छोटी बातें याद आ रही थीं।

प्रश्न–2. 'वापसी' कहानी में किस समस्या को उठाया गया है? संक्षेप में प्रकाश डालिए।

अथवा

'वापसी' कहानी के केन्द्रीय भाव विचार को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– कहानीकार उषा प्रियंवदा ने अपनी कहानी 'वापसी' में वर्तमान समाज में आए बदलावों का एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत कहानी का कथानक एक मध्यमवर्गीय परिवार का है। कहानी के नायक गजाधर बाबू रेलवे के स्टेशन मास्टर के पद से रिटायर होकर शहर में अपने परिवार के साथ रह रहे हैं। उनके परिवार में उनकी पत्नी, दो बेटे अमर और नरेन्द्र हैं, अमर का विवाह हो चुका है, उसकी बहू है और उनकी दो बेटियाँ– कांती और बसंती हैं। कांती की शादी हो गई और बसंती भी शादी योग्य है। सभी लोग एक साथ ही रह रहे हैं। बेटी कांती ससुराल में है।

गजाधर बाबू जब नौकरी पर थे, तब परिवार के सभी सदस्य स्वतंत्र थे और मनमाने तौर–तरीके से अपना जीवनयापन करते थे, लेकिन नौकरी से रिटायर्ड होकर गजाधर बाबू के घर वापस आने पर अब वे घर के मुखिया थे। अतः वे अपनी बेटी–बेटों एवं बहू के तौर–तरीकों को देख करके परेशान हो रहे थे, इधर उनकी पत्नी का भी उनके प्रति पहले जैसा प्रेम–भरा व्यवहार न था। उन्होंने यह अनुभव किया कि अब वे पत्नी और बच्चों के लिए धनोपार्जन के निमित्त–मात्र रह गए हैं। इसके साथ–साथ वे पत्नी बेटें एवं बेटी के द्वारा की जा रही उपेक्षा और तिरस्कार से आहत थे। यही कारण है कि उनके रिटायर्ड होने के बाद घर–वापसी की उनकी सारी खुशियाँ एक गहरी उदासीनता में डूब गईं।

अन्ततोगत्वा गजाधर बाबू ने सेठ रामजी लाल के चीनी मिल में नौकरी कर ली। वे परिवार को छोड़कर रिटायर्ड होने के बाद भी प्रायवेट नौकरी करने के लिए विवश हो गए। इस प्रकार इस कहानी में संयुक्त परिवार के विघटन की त्रासदी से व्यथित गजाधर बाबू का चित्रण किया गया है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कहानीकार ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से वर्तमान समय के समाज में संयुक्त परिवारों के विघटन की समस्या को अभिचित्रित करते हुए यह प्रतिपादित करने का सफल प्रयास किया है कि आज हमारे समाज में एक ओर पुराने विचारों और संस्कारों वाले वयोवृद्ध लोग हैं, दूसरी ओर नई पीढ़ी के युवक–युवतियाँ, जो पाश्चात्य–फैशन के तौर–तरीकों से जीने में आनन्द महसूस करते हैं और उन्हें पुराने विचार–संस्कार एवं रीति–रिवाज महत्वहीन लगते हैं। इस प्रकार आज हमारे समाज के इन दोनों पीढ़ियों में वैचारिक–भिन्नता के कारण संयुक्त परिवार विघटन की त्रासदी से ग्रसित है।

इस प्रकार कहानीकार उषा प्रियंवदा ने अपनी प्रस्तुत कहानी 'वापसी' में गजाधर बाबू के संयुक्त परिवार की स्थितियों को अभिचित्रित करके आज के भारतीय समाज के संयुक्त परिवारों में दिन–प्रतिदिन उत्पन्न होने वाले विघटन अर्थात् परिवार के बिखराव की समस्या को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। इस समस्या को अभिचित्रित करके कहानीकार ने यह स्पष्ट किया है कि आज समाज में पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के लोगों के विचारों, भावों, चिन्तन–मनन और जीवन जीने के तौर–तरीकों में गहरा अन्तराल आता जा रहा है, जिससे संयुक्त परिवार बिखर रहे हैं और प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में सीमित होता जा रहा है। यही प्रस्तुत कहानी का मुख्य केन्द्रीय भाव एवं विचार है।

प्रश्न–3. 'गजाधर बाबू' की चारित्रिक विशेष लिखिए।

अथवा

गजाधर बाबू के चारित्रिक वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– 'वापसी' कहानी कहानीकार उषा प्रियंवदा की हिन्दी के नई कहानी के दौर की एक श्रेष्ठ कहानी है। 'वापसी' कहानी का सम्पूर्ण कथानक 'गजाधर बाबू' के जीवन की गतिविधियों पर केन्द्रित है, क्योंकि वे इस कहानी के प्रमुख पात्र हैं। 'गजाधर बाबू' की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित शीर्ष बिन्दुओं के आधार पर दृष्टव्य हैं–

(1) **आदर्श एवं स्नेही व्यक्तित्व–** 'गजाधर बाबू' आदर्श एवं स्नेही व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति हैं। कहानी को प्रारम्भ में एक स्टेशन मास्टर के रूप में कार्य करते हुए आपने अपने इसी व्यक्तित्व से अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को प्रभावित कर लिया था। यही कारण है कि उनके ऑफिस में काम करने वाले गनेशी व उनके सेवाकाल में उनकी सेवा–सुश्रुषा करके उनसे आत्मीय सम्बन्ध स्थापित कर लिए थे। गजाधर बाबू का यह कथन दृष्टव्य है– 'कभी कुछ जरूरत हो तो लिखना, गनेशी।'

(2) **उत्तरदायी मुखिया–** गजाधर बाबू एक उत्तरदायी मुखिया है। उन्होंने बच्चों के बड़े होने पर उनकी पढ़ाई–लिखाई के लिए उनके रहने–पढ़ने–लिखने का सारा प्रबंध शहर में मकान लेकर कर दिया था। उन्होंने स्वयं पत्नी तथा बच्चों से अलग रहकर छोटे–छोटे स्टेशनों पर स्टेशन मास्टर की नौकरी की थी। इसके साथ उन्होंने नौकरी में रहते हुए बड़े बेटे अमर और बड़ी बेटी कांति की शादी करके उनका परिवार बसा दिया था। अब केवल छोटा लड़का नरेन्द्र और छोटी लड़की बसंती पढ़ रहे थे। गजाधर बाबू चाहते थे कि ये दोनों भी पढ़–लिखकर आत्म–निर्भर बन जावें।

(3) **स्नेही पति–** गजाधर बाबू अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करते थे। जब उनकी पत्नी उनके साथ रहती थी, तब वह भी उनसे बहुत प्यार करती थी और सेवा–सुश्रुषा करती थीं।

यही कारण है कि गजाधर बाबू को अपने रिटायरमेंट के समय पत्नी की स्नेहपूर्ण बातें याद आ रही हैं, कहानीकार के शब्दों में गजाधर बाबू की यादें दृष्टव्य हैं–

'शीतकाल की दोपहर में गर्मी होने पर भी, वह दो बजे तक आग जलाए रहती और उनके स्टेशन से वापस आने पर गरम–गरम रोटियाँ संकती। उनके खा चुकने और मना .... आँखें मुस्करा उठतीं।'

(4) **स्नेही पिता–** गजाधर बाबू को अपने बच्चों से भी बहुत स्नेह है, वे चाहते हैं कि उनके बच्चे पढ़–लिख करके आत्म–निर्भर बनें और अपने–अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह करें। गजाधर बाबू अपने बच्चों को हँसता–खेलता देखना चाहते थे और स्वयं भी उनके साथ मनोरंजन का आनन्द लेना चाहते थे। यही कारण है कि– इतवार के दिन बैठक के कमरे में सभी बच्चों को हँसते हुए कहकहे लगाते, नाचने के अभिनय की नकल करते देखकर उनके सूखे चेहरे पर स्निग्ध मुस्कान आ गई थी। इससे उनका अपने बच्चों के प्रति स्नेह प्रकट होता है।

(5) **स्नेहाकांक्षी व्यक्तित्व के धनी–** गजाधर बाबू का व्यक्तित्व स्नेह की मधुरता से परिपूर्ण है। नौकरी में रहते हुए उन्होंने अपने स्नेही व्यक्तित्व से सभी को अपना बना लिया था। वे दूसरों से स्नेह करने के साथ–साथ दूसरों से भी स्वयं के प्रति स्नेह की आकांक्षा रखते थे। रिटायरमेंट के बाद गजाधर बाबू यह आकांक्षा करते थे कि घर वापस पहुँचने पर मेरी पत्नी और मेरे बच्चे पहले की तरह ही मुझसे स्नेह करेंगे और मेरे जीवन का अन्तिम समय आनन्द से व्यतीत होगा, लेकिन उन्हें प्रत्युत्तर में परिवार से स्नेह नहीं मिला। आज उनकी पत्नी उनके प्रति पहले जैसा स्नेह–भरा व्यवहार नहीं करती थीं। वह अब केवल बच्चों की और परिवार के खर्चों की पूर्ति न होने के बारे में शिकायतें करती रहती थीं, कभी भी पास में बैठकर परामर्श की बातें नहीं करती थीं। इससे गजाधर बाबू का हृदय आहत था।

(6) **भारतीय संस्कृति के द्योतक–** गजाधर बाबू भारतीय संस्कृति के पोषक हैं। वे चाहते हैं कि बेटी बसंती पढ़े–लिखे, घर के काम में माँ का सहयोग करे और घर–गृहस्थी के सभी कामों को करना सीखे। लेकिन बसंती का मन न तो पढ़ने–लिखने में लगता है और न ही घर के कामकाज में। बेटी बसंती और अमर की बहू को भी खाना बनाना नहीं आता था, घर का सारा काम गजाधर की पत्नी करती थी। इतना ही नहीं बच्चों का रहन–सहन और खान–पान भी भारतीय संस्कृति के अनुरूप न था। घर का खर्च भी आमदनी से ज्यादा हो रहा था। आए दिन बसंती और बहू के कारण घर में नुकसान होता रहता था। इन कारणों से गजाधर बाबू दुःखी थी। इसके अलावा गजाधर बाबू पत्नी से पूर्व की भाँति आत्मीय व्यवहार की अपेक्षा करते थे, लेकिन आज पति–पत्नी के सम्बन्धों में भी खटास आ गई थी। इस प्रकार आज पारिवारिक, रिश्तों का आधार भारतीय संस्कृति के आदर्श न होकर अर्थ (धन) हो गया था।

(7) **कर्मठ एवं परिश्रमी व्यक्तित्व के धनी–** गजाधर बाबू कर्मठ एवं परिश्रमी व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति थे। इसीलिए जब वे रिटायरमेंट के बाद घर आकर अपेक्षित स्नेह एवं सम्मान नहीं पाते हैं, अपितु परिवार के द्वारा उपेक्षा की अनुभूति करते हैं। इसके साथ वे यह भी अनुभव करते हैं कि आज हमारे परिवार में पारिवारिक रिश्ते अर्थ–केन्द्रित हो गए हैं, तो वे रेलवे के स्टेशन मास्टर की नौकरी से रिटायरमेंट के बाद भी सेठ रामजी लाल की चीनी मिल में नौकरी स्वीकार कर लेते हैं, क्योंकि वे एक कर्मठ और परिश्रमी व्यक्ति हैं. शायद वे अपने इस व्यक्तित्व से अपने बच्चों को प्रेरित करना चाहते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कहानीकार ने गजाधर बाबू के चारित्रिक–वैशिष्ट्य के द्वारा वर्तमान समाज में बदलते मूल्यों के संदर्भ में संयुक्त परिवार के विघटन की समस्या की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है।

प्रश्न–4. 'वापसी' कहानी का सारांश लिखिए।

अथवा

'वापसी' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– 'वापसी' कहानी उषा प्रियंवदा जी के द्वारा रचित है। यह कहानी आज के मानव–जीवन के यथार्थ की कहानी है। इस कहानी में एक पारिवारिक घुटन की कथा है। प्रस्तुत कहानी का सारांश निम्नानुसार दृष्टव्य है–

कहानी का सारांश – 'वापसी' कहानी मध्यमवर्गीय परिवार में रहने वाले एक रिटायर्ड वृद्ध सज्जन गजाधर बाबू की विवशता, उदासी और अकेलेपन की मर्म भरी कहानी है, इसमें परिवार की दो पीढ़ियों के आन्तरिक वैषम्य (जनरेशन गैप) को बड़ी सूक्ष्मता से अभिचित्रित किया गया है।

गजाधर बाबू एक सेवानिवृत्त वृद्ध सज्जन हैं। उनकी विवशता, उदासी और अकेलेपन की व्यथा को इस कहानी में मार्मिकता पूर्वक अभिचित्रित किया गया है। गजाधर बाबू रेलवे में स्टेशन मास्टर थे। उन्होंने 35 वर्षों तक नौकरी की। अब रिटायर होकर घर जाने का समय आ गया था। उनके नौकर गनेशी ने सब तैयारी कर दी। बिस्तर बाँध दिया। गजाधर बाबू अपने बच्चों से मिलने के लिए तड़प रहे थे। वे बहुत प्रसन्न ते। एक लम्बी अवधि आपने अकेले ही रहकर व्यतीत की थी। अकेले क्षणों में उन्होंने कितनी ही कल्पनाएं की थीं। आज वे सब साकार हो रही थीं। वे हमेशा छोटे–स्टेशनों पर रहे थे। बच्चे शहर में रहे ताकि पढ़–लिखकर होशियार और किसी योग्य हो जावें। पत्नी बच्चों के साथ रहती थी। पत्नी सीधी–सादी थी। जब गजाधर बाबू घर आते हैं तो वह बड़ा स्वागत करती थी। इन्हीं बातों को याद करके गजाधर बाबू घर जाने की खुशी में थे।

गजाधर बाबू घर पहुँचते हैं। घर पहुँचकर उनकी सारी आशाएं धूमिल हो गईं। वे अनुभव करते हैं कि अमर, उसकी बहू, नरेन्द्र और पुत्री बसन्ती सभी मानों उन्हें भूल चुके हैं। उनका आना सभी को कष्ट दे रहा है। वे देखते हैं कि उनकी बेटी–बहू सभी काम से जी चुराती हैं। बड़े बेटे अमर की बहू कुछ भी नहीं करती थी। उनकी पुत्री बसन्ती कॉलेज में पढती थी, इसलिए वह भी काम करना पसन्द नहीं करती थी। गजाधर बाबू को घर का रंग–ढंग पसन्द न आया। वे चाहते थे कि उनकी पुत्री अब सयानी हो गई है, इसलिए वह अधिक समय तक घर में रहकर घर के कामों में सहयोग करे। इसीलिए वे बसन्ती को बुलाकर कहते हैं कि आज से शाम का खाना उसे स्वयं और सुबह का खाना उसकी भाभी को बनाना होगा। बसन्ती द्वारा पढ़ने की बात कहने पर वे बड़े प्रेमपूर्वक समझाकर कहते हैं कि उनकी माँ पर इतनी उम्र में इतना अधिक काम डालना ठीक नहीं है। किन्तु बसन्ती को उनकी बातें अच्छी नहीं लगती है। एक दिन बसन्ती कहीं बाहर जा रही थी। गजाधर बाबू उसे रोकते हैं, वह उस समय तो रुक जाती है, परन्तु पिछले दरवाजे से आने–जाने लगती है।

गजाधर बाबू का घर छोटा था। उस घर में पहले से ही ऐसी व्यवस्था हो चुकी थी कि गजाधर बाबू के लिए कोई स्थान नहीं बचा था। अतः गजाधर बाबू की चारपाई बैठक में लगा दी गई। गजाधर बाबू देख रहे थे कि घर में काम करने वालों की कमी नहीं है। इसलिए उन्होंने नौकर हटा दिया। वे अपनी पत्नी से घर के खर्च कम करने की बात भी कहते हैं। परन्तु पत्नी कहती है– 'सभी खर्चे तो वाजिब–वाजिब हैं, किसका पेट काटूँ ? यही जोड़–गाँठ करते–करते बूढ़ी हो गई। न मन का पहिना, न ओढ़ा।' गजाधर बाबू को यह बात खटक जाती है। गजाधर बाबू की बात का विरोध बसन्ती, अमर, नरेन्द्र और स्वयं उनकी पत्नी ने भी किया। सभी का कहना था– 'भला बाबू जी को हमारे काम में दखल देने की क्या आवश्यकता है ?' पत्नी का भी कहना था– 'ठीक है, आप बीच में न पड़ा कीजिए। बच्चे बड़े हो गए हैं। हमारा जो कर्त्तव्य था, कर रहे हैं। पढ़ा रहे हैं, शादी कर देंगे।' यह सब गजाधर बाबू की इच्छा के विपरीत था। उन्हें स्नेह चाहिए था, ऐसा स्नेह, जो त्याग करने के पश्चात् संतान से मिलता है। वैसा स्नेह, उन्हें नहीं मिला जिससे उनका हृदय आहत हो गया।

गजाधर बाबू रोजाना घूमने जाते थे। एक दिन वे घूमकर लौटते हैं तो देखते हैं कि उनकी चारपाई बैठक से हटा दी गई है और उनकी पत्नी के कमरे में लगा दी गई है। वे चुपचाप आकर खाट पर लेट गए। उन्हें रेलवे वाला क्वार्टर याद आने लगा। इस समय वे घर के लोगों के विभिन्न स्वरों को सुन रहे थे। इन स्वरों में बहू और सास में छोटी झड़प, खुले नल की आवाज, रसोई घर के बरतनों की खड़खड़ाहट आदि थी। अमर, बहू और बसन्ती की शिकायत भी थी। गजाधर बाबू बड़े दुःखी होते हैं। उन्होंने वहाँ से चल देना ही उचित समझा। उन्हें गनेशी की याद आती है। वे सोचते हैं कि इन अपनों से तो बेगाने ही भले हैं। एक दिन वे अपनी पत्नी को सेठ रामजीलाल की शक्कर–मिल में नौकरी मिलने की सूचना देते हैं और वे अपनी पत्नी को भी साथ चलने को कहते हैं, पर वह नहीं जाती है। वह कहती है– 'मैं चलूंगी तो यहाँ क्या होगा ? इतनी बड़ी गृहस्थी, फिर सयानी लड़की....।' नरेन्द्र उनके कपड़े बाँध देता है, और रिक्शे में बिठाकर उन्हें विदा कर देता है। बहू अमर से पूछती है– 'सिनेमा ले चलिएगा न ?' बसन्ती उछलकर कहती है– 'भइया हमें भी।' गजाधर बाबू जी की पत्नी चौके में जाती हैं और नरेन्द्र से कहती हैं– 'अरे नरेन्द्र, बाबू जी की चारपाई कमरे से निकाल दे। उसमें चलने तक की जगह नहीं है।'

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि इस कहानी में एक रिटायर्ड वयोवृद्ध सज्जन स्वभाव वाले गजाधर बाबू की विवशता, उदासी और अकेलेपन की व्यथा का मार्मिक चित्रण किया गया है। इस प्रकार कहानी में ऊषा जी ने अत्यन्त सूक्ष्म और व्यापक अन्तः दृष्टि से आधुनिक परिवार का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है।

प्रश्न–5. 'वापसी' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिये।

उत्तर– 'वापसी' कहानी तात्विक दृष्टि से एक सफल कहानी है। शहर की आधुनिकता ने जीवन के मूल्यों का विघटन कर दिया और परस्पर के सम्बन्ध बिखर गये हैं। रूढ़ियों और परम्पराओं से मुक्ति पाने की छटपटाहट आज भी मनुष्य में है। आज के संघर्ष में मनुष्य अजनबी–सा हो रहा है। उसे अकेलेपन की स्थिति व्यथित कर रही है, इसी को 'वापसी' कहानी में व्यक्त किया गया है। वापसी कहानी की तात्विक समीक्षा इस प्रकार हैं–

(1) **कथावस्तु–** वापसी–कहानी की कथावस्तु पारिवारिक है। गजाधर बाबू 35 साल की रेल्वे–सेवा के पश्चात् सेवा–निवृत्त हुये हैं। उन्हें रेल्वे का क्वार्टर छोड़ते हुये दुःख हो रहा था, परन्तु प्रसन्नता इस बात की है वह अपने परिवार के लोगों के साथ रहेंगे।

वे घर जाते हैं, परन्तु घर का वातावरण बदला हुआ है। घर का पूरा कार्य उनकी पत्नी करती है तथा जवान बेटी बसन्ती बैठी रहती है। वे इस वातावरण में अपने आपको मिला नहीं पाते। उन्हें बेटी का रात में बाहर रहना अच्छा नहीं लगता है। वे पुत्री तथा बहू से खाना एवं अन्य छोटे–मोटे कार्यों को करने के लिये कहते हैं। घर में एक विद्रोह–सा हो जाता है। बड़ा लड़का अपनी पत्नी के साथ अलग होना चाहता है। गजाधर बाबू नहीं समझ पाते कि किस प्रकार अपने अन्दर परिवर्तन लावें। पत्नी उन्हें किसी भी कार्य में हस्तक्षेप करने से मना करती है और वे चुप हो जाते हैं। हर कार्य पूर्ववत् होने लगता है, परन्तु वे एक बात पर जब नौकर को निकाल देते हैं, तो घर में तूफान खड़ा हो जाता है। ठीक उसी दिन उन्हें नियुक्ति पत्र मिला, जिसमें रामजीलाल सेठ ने चीनी मिल में काम करने को लिखा था। वे पत्नी को साथ चलने को कहते हैं, परन्तु वह तैयार नहीं होती है। अन्त में गजाधर बाबू स्वयं चले जाते हैं।

कथानक का प्रारम्भ पात्र–परिचय से शुरू होकर वातावरण पर चला जाता है। आरोह की स्थिति उस समय आती है जब वे अपने परिवार में अपने को अलग–सा पाते हैं। परिवार के विचारों की स्वतंत्रता उन्हें खटकती है। वे इन्हीं मानसिक संघर्षों में उलझे हुये हैं। बड़े पुत्र का अलग होने का कार्यक्रम कहानी की चरम सीमा है तथा वहीं से अवरोह की स्थिति प्रारंभ हो जाती है। कहानी का अन्त उनके पुनः सेवाकार्य में आने पर होता है। इसे ही कहानीकार ने 'वापसी' कहा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कथावस्तु में कहानी कला के सभी विशेषताओं का समावेश है। अतः कथानक की दृष्टि से यह कहानी पूर्ण सफल है।

(2) **पात्र तथा चरित्र–चित्रण**– गजाधर बाबू कहानी के प्रमुख पात्र हैं। इनके अतिरिक्त नरेन्द्र, बसन्ती, पत्नी एवं बहू आदि सहायक पात्र हैं। गजाधर बाबू के विचार पुराने हैं, परिणामस्वरूप वे अपने ही परिवार में अपने को नहीं मिला पाते। अपने ही मकान में वे पराये–से रह जाते हैं। अन्त में वे रामजीलाल सेठ की चीनी मिल में काम करने चले जाते हैं। पूरे परिवार में प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है। गनेशी गजाधर बाबू का नौकर है, यह अपने प्रेम का परिचय इस ढंग से देता है कि आँखें भर आती हैं:

'यह डिब्बा कैसा है गनेशी?' उन्होंने पूछा। गनेशी बिस्तर बाँधता हुआ, कुछ गर्व, कुछ दुख, कुछ लज्जा से बोला, 'घर–वाली ने साथ को कुछ बेसन के लड्डू रख दिये हैं। कहा, बाबूजी को पसन्द थे, अब कहाँ हम गरीब लोग आपकी, कुछ खातिर कर पायेंगे।'

इस पर गनेशी बिस्तर में रस्सी बाँधते हुये कहता है–

'कभी–कभी हम लोगों की भी खबर लेते रहियेगा।'

बसन्ती कॉलेज–छात्रा के रूप में चित्रित है। वह पढ़ने में कम, सिनेमा एवं लड़कों से बातें करने में ज्यादा आनन्द लिया करती है। बहू का चित्रण भी आधुनिक बहू के रूप में किया गया है। वह काम में कम, परन्तु पति एवं उनके दोस्तों के साथ बैठक करने में ज्यादा आनन्द लेती है तथा भोजन पकाना अपनी शान के विरुद्ध समझती है। एक दिन भोजन पकाने की बात में उसने अपने पति के साथ अलग रहने की धारणा बना ली थी। अमर की माँ का चित्रण एक ऐसी माँ के रूप में किया गया है, जो सब कुछ जानते–बूझते हुये भी अपने को संभाले है, जबकि वह आधुनिक सभ्यता का उसने विरोध करने वाली है, परन्तु जानती है कि उसका वश नहीं चल सकता है, अतः मौन को स्वीकार कर लिया है।

इस प्रकार पात्र तथा चरित्र–चित्रण की दृष्टि से वापसी कहानी पूर्ण रूप से सफल है।

(3) **कथोपकथन**– कथोपकथन संक्षिप्त एवं मार्मिक हैं। गजाधर बाबू के जाने के समय का वार्तालाप उदाहरण स्वरूप लिया जा सकता है–

'यह डिब्बा कैसा है गनेशी?' उन्होंने पूछा।

गनेशी बिस्तर बाँधता हुआ, कुछ गर्व, कुछ दुख, कुछ लज्जा से बोला, 'घरवाली ने कुछ बसन के लड्डू रख दिये हैं। कहा– बाबूजी को पसन्द थे, अब कहाँ हम गरीब लोग आपकी कुछ खातिर कर पायेंगे।'

'कभी–कभी हम लोगों की खबर लेते रहियेगा।' गनेशी बिस्तर में रस्सी बाँधता हुआ बोला।

'कभी कुछ जरूरत हो तो लिखना गनेशी! इस अगहन तक बिटिया की शादी कर दो।'

गनेशी ने अँगोछे से आँखें पोंछी, 'अब आप लोग सहारा न दोगे, तो कौन देगा! आप यहाँ रहते तो शादी में कुछ हौसला रहता।'

पति–पत्नी के बीच का वार्तालाप तनावपूर्ण स्थिति को प्रकट करता है–

'बहू क्या किया करती है?' गजाधर बाबू ने पूछा।

'पड़ी रहती है। बसन्ती को तो, फिर कहो कि कॉलेज जाना होता है।'

बसन्ती मुँह लटकाकर बोली, 'बाबू पढ़ना भी तो होता है।'

गजाधर बाबू ने प्यार से समझाया, 'तुम सुबह पढ़ लिया करो। तुम्हारी माँ बूढ़ी हुई, उसके शरीर में अब वह शक्ति नहीं बची है, तुम हो, तुम्हारी भाभी है, दोनों को मिलकर काम में हाथ बँटाना चाहिये।'

(4) भाषा–शैली– कहानी की भाषा स्वाभाविक सरल खड़ी बोली है। तत्सम, तद्भव देशज, अंग्रेजी, उर्दू के शब्द भी हैं। वह प्रवाहमयी एवं सशक्त है। शैली विवरणात्मक, भावात्मक, चित्रात्मक और व्यंग्यात्मक है।

(5) **उद्देश्य**– कहानी का मूल उद्देश्य दो पीढ़ियों के अन्तर को अभिचित्रित करना है, जो व्यक्ति मुखिया है, बूढ़ा हो जाने पर ही सबसे बेकार एवं सारहीन हो जाता है। कहानी के उद्देश्य में यह भी है कि परिस्थिति के अनुकूल व्यक्ति को कार्य करना चाहिये।

उपर्युक्त 'वापसी' कहानी की तात्विक समीक्षा से स्पष्ट है कि प्रस्तुत कहानी कहानी–कला के सभी तत्वों की दृष्टि से पूर्ण रूप से सफल एवं प्रभावी बन पड़ी है।

प्रश्न–6. 'वापसी' कहानी के मूल प्रतिपाद्य का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

'वापसी' कहानी के 'मूल प्रतिपाद्य' पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– 'वापसी' कहानी कहानीकार उषा प्रियंवदा के द्वारा विरचित है। इस कहानी में कहानीकार ने आधुनिक समाज में आए मूल्यगत बदलावों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

'वापसी' कहानी हिन्दी की 'नयी–कहानी' के दौर की एक श्रेष्ठ कहानी है। इस कहानी की लेखिका उषा प्रियंवदा हैं, जिनका 'नयी कहानी' के त्रयी–कहानीकारों में महत्वपूर्ण स्थान हैं। आपने अपनी इस कहानी में आधुनिक समाज के मानव–जीवन के यथार्थ को अभिचित्रित किया है। आज हम देखते हैं कि पूरी दुनियाँ में सारे नाते–रिश्ते स्वार्थ पर आधारित हैं। समाज की इस स्थिति को देखकर ऐसा लगता है कि जैसे कि आज के जीवन में कोई किसी का नहीं है, न कोई किसी का पिता और न कोई किसी का पति है।

आज हमारे जीवन में पैसा ही 'सब–कुछ है' ऐसा मान लिया गया है। फलतः आदमी पैसा कमाने की मशीन बन गया है, जिस दिन यह मशीन पैसा कमाना बन्द कर देती है, उस दिन परिवार के लिए वह महत्वहीन हो जाता है। आज हमारे समाज के संयुक्त परिवारों की इसी स्थिति को प्रस्तुत कहानी में विभिन्न घटनाओं के माध्यम से अभिचित्रित किया गया है। 'वापसी' कहानी में कहानीकार ने उक्त समस्या को ही अपना मूल प्रतिपाद्य बनाया है।

'वापसी' कहानी का मूल प्रतिपाद्य और उसका विश्लेषण– 'वापसी' कहानी एक मध्यमवर्गीय गजाधर बाबू के परिवार की पारिवारिक घुटन की कहानी है। इस कहानी में

परिवार के मुखिया गजाधर बाबू जीवन–भर परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नोट छापने की मशीन बने रहते हैं। वे अपने घर–परिवार से दूर पराए लोगों के बीच में इसलिए रहते हैं, जिससे वे अपने बेटों–बेटियों के जीवन को सुखी बना सकें। लेकिन जब वे रिटायर होकर अपनों के बीच में सुखी जीवन बिताने की आशा से पहुँचते हैं, तब उन्हें परिवार में घुटनभरा वातावरण मिलता है। परिवार के लोगों से यहाँ तक प्रेम करने वाली पत्नी से भी उन्हें झूठी–सहानुभूति एवं प्रेम भी नहीं मिलता है। इसके विपरीत परिवार के लोग भी गजाधर बाबू से दूरी बना लेते हैं। यहाँ तक उनका बड़ा बेटा अमर तो परिवार से अलग होकर जाना चाहता है। इस प्रकार पुरानी पीढ़ी की भारतीय संस्कृति के विचारों एवं आदर्शों पर चलने वाले गजाधर बाबू अपने ही घर में अपनों के लिए पराये हो जाते हैं। बेटों–बेटियों के साथ–साथ उनकी स्वयं की पत्नी भी उनसे दूरी बना लेती है। इस प्रकार गजाधर बाबू परिवार में पत्नी, बेटों, बेटी एवं बहू की उपेक्षा एवं तिरस्कार से आहत हो जाते हैं। फलतः परिवार में व्याप्त घुटन के कारण परिवार में विघटन अर्थात् बिखराव की त्रासदी उत्पन्न हो जाती है और गजाधर बाबू स्वयं इस त्रासदी के शिकार हो जाते हैं, उन्हें अपना घर और अपनों को छोड़कर पुनः वापस चीनी मिल में नौकरी करने के लिए जाना पड़ता है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में अभिचित्रित संयुक्त परिवार के विघटन की त्रासदी, अर्थ–केन्द्रित रिश्तों की अल्पकालिकता तथा परिवार में धन के कारण बदलते रिश्तों में आपसी विश्वास की कमी को प्रतिपादित करना ही कहानीकार का मूल प्रतिपाद्य रहा है, जिसका विश्लेषण उपर्युक्त विवेचन में किया गया है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(1) लेखिका ऊषा प्रियंवदा का जन्म कहाँ हुआ?
(अ) कानपुर (ब) इलाहाबाद
(स) बनारस (द) लखनऊ।
उत्तर– (अ) कानपुर।

(2) 'वापसी' कहानी की कहानीकार कौन हैं?
(अ) सुभद्रा कुमारी चौहान (ब) ऊषा प्रियंवदा
(स) महादेवी वर्मा (द) कृष्णा सोबती।
उत्तर– (ब) ऊषा प्रियंवदा।

(3) वर्ष 2007 में लेखिका ऊषा प्रियंवदा को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया?
(अ) भारत रत्न पुरस्कार (ब) पद्मश्री पुरस्कार
(स) पद्म विभूषण (द) मोटूरि सत्यानारायण पुरस्कार।
उत्तर– (द) मोटूरि सत्यानारायण पुरस्कार।

(4) ऊषा प्रियंवदा इनमें से किस रूप में प्रसिद्ध हैं?
(अ) आंचलिक कथाकार (ब) प्रवासी कथाकार
(स) ऐतिहासिक कथाकार (द) प्रायोगिक कथाकार।

उत्तर– (ब) प्रवासी कथाकार।

(5) 'वापसी' कहानी कौनसे वास्तविक स्वरूप को दर्शाती है?
(अ) आत्मीय सम्बन्ध (ब) मित्रता के सम्बन्ध
(स) मानवीय सम्बन्ध (द) दुश्मनी के सम्बन्ध।
उत्तर– (स) मानवीय सम्बन्ध।

(6) वापसी कहानी में किसकी वापसी होती है?
(अ) बसंती की (ब) गजाधर बाबू की
(स) नरेन्द्र की (द) अमर की।
उत्तर– (ब) गजाधर बाबू की।

(7) आधुनिकता ने मनुष्य को कैसा बना दिया है?
(अ) आत्मीय (ब) सहनशील
(स) मिलनशील (द) स्वार्थी और मानवताहीन।
उत्तर– (द) स्वार्थी और मानवताहीन।

(8) 'वापसी' कहानी चित्रण करती है–
(अ) पारिवारिक घुटन का (ब) ईर्ष्या का
(स) मातृत्व का (द) ममत्व का।
उत्तर– (अ) पारिवारिक घुटन का।

(9) वापसी कहानी में गजाधर बाबू की वापसी कहाँ से होती है?
(अ) बस स्टैंड से (ब) रेलवे की नौकरी से
(स) पोस्ट ऑफिस से (द) चीनी मिल की नौकरी से।
उत्तर– (ब) रेलवे की नौकरी से।

(10) 'वापसी' कहानी के गजाधर बाबू कहाँ नौकरी करते हैं?
(अ) शिक्षा विभाग में (ब) पर्यटन विभाग में
(स) रेलवे में (द) बैंक में।
उत्तर– (स) रेलवे में।

(11) वापसी कहानी में गजाधर बाबू के सबसे बड़े लड़के का क्या नाम था?
(अ) अमर (ब) विकास (स) अमन (द) अनुज।
उत्तर– (अ) अमर।

(12) गजाधर बाबू कैसे व्यक्ति थे?
(अ) अत्यन्त लोभी (ब) अत्यन्त क्रोधी
(स) अत्यन्त मूर्ख (द) अत्यन्त स्नेही।
उत्तर– (द) अत्यन्त स्नेही।

(13) 'वापसी' कहानी है–
(अ) सामाजिक (ब) पारिवारिक
(स) दार्शनिक (द) ऐतिहासिक।

उत्तर– (ब) पारिवारिक।

(14) गजाधर बाबू ने अपना सम्पूर्ण जीवन बिताया–

(अ) जंगल में (ब) गाँव में
(स) घर के बाहर। (द) घर में।

उत्तर– (स) घर के बाहर।

(15) गजाधर बाबू के कुल कितने बच्चे थे?

(अ) दो बच्चे थे (ब) तीन बच्चे थे
(स) चार बच्चे थे (द) पाँच बच्चे थे।

उत्तर– (स) चार बच्चे थे।

(16) अपना क्वार्टर छोड़ते हुए गजाधर बाबू को हुआ–

(अ) अत्यन्त दुख (ब) अत्यन्त हर्ष
(स) भटकाव (द) मन विचलित हुआ।

उत्तर– (अ) अत्यन्त दुख।

(17) गजाधर बाबू की पुत्री का नाम क्या था?

(अ) आरती (ब) सुधा
(स) बसंती (द) शीला।

उत्तर– (स) बसंती।

(18) 'वापसी' कहानी के संवाद कैसी भाषा में लिखे गये हैं?

(अ) सरल बोलचाल की भाषा में
(ब) कठिन भाषा में (स) रोचक भाषा में
(द) क्लिष्ट भाषा में।

उत्तर– (अ) सरल बोलचाल की भाषा में।

(19) गणेशी ने गजाधर बाबू को ले जाने हेतु क्या बनाया था?

(अ) आटे के लड्डू (ब) गाजर का हलवा
(स) बेसन के लड्डू (द) बूँदी के लड्डू।

उत्तर– (स) बेसन के लड्डू।

(20) गजाधर बाबू को पसंद है–

(अ) जलेबी (ब) बर्फी
(स) रसगुल्ला (द) बेसन के लड्डू।

उत्तर– (द) बेसन के लड्डू।

(21) इनमें से कौनसी रचना ऊषा प्रियंवदा द्वारा रचित नहीं है?

(अ) वनवास (ब) एक कोई दूसरा
(स) झाँसी वाली रानी (द) फिर बसंत आया।

उत्तर– (स) झाँसी वाली रानी।

(22) गजाधर बाबू ने शाम का खाना बनाने की जिम्मेदारी किसे सौंपी?

(अ) नरेन्द्र को (ब) अमर को
(स) बसंती को (द) बहू को।

उत्तर– (स) बसंती को।

(23) 'वापसी' कहानी में किस परिवार का चित्रण है?

(अ) अति निम्नवर्गीय (ब) निम्नवर्गीय
(स) मध्यमवर्गीय (द) उच्चवर्गीय।

उत्तर– (स) मध्यमवर्गीय।

(24) गजाधर बाबू ने अपनी नौकरी में कितने वर्ष अकेले व्यतीत किए थे?

(अ) 20 वर्ष (ब) 25 वर्ष
(स) 30 वर्ष (द) 35 वर्ष।

उत्तर– (द) 35 वर्ष।

(25) नरेन्द्र ने खाना न खाने का गुस्सा किस पर उतारा?

(अ) शीला पर (ब) अपनी पत्नी पर
(स) गजाधर बाबू पर (द) अपनी माँ पर।

उत्तर– (स) गजाधर बाबू पर।

(26) घरेलू नौकर को काम से किसने हटाया?

(अ) गजाधर बाबू की पत्नी ने (ब) बसंती ने
(स) अमर ने (द) गजाधर बाबू ने।

उत्तर– (द) गजाधर बाबू ने।

(27) 'वापसी' कहानी में दो पीढ़ियों के बीच क्या चित्रित किया गया है?

(अ) आन्तरिक कलह (ब) आन्तरिक कटुता
(स) आन्तरिक वैमनस्य (द) आन्तरिक विरोध।

उत्तर– (स) आन्तरिक वैमनस्य।

(28) 'वापसी' कहानी में कहानीकार ने कैसी भाषा का प्रयोग किया है?

(अ) व्यंग्यात्मक भाषा (ब) बोलचाल की ग्रामीण भाषा
(स) खड़ी भाषा (द) बोलचाल की सहज भाषा।

उत्तर– (द) बोलचाल की सहज भाषा।

(29) कहानीकार ने 'वापसी' कहानी में कौनसी विदेशी भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है?

(अ) अंग्रेजी (ब) फ्रेंच
(स) इटेलियन (द) टर्की।

उत्तर– (अ) अंग्रेजी।

(30) 'वापसी' कहानी की भाषा शैली पूर्णतः सहायक है–

(अ) भावात्मक विकास में (ब) कथात्मक विकास में
(स) सम्पूर्ण विकास में (द) आचरणात्मक विकास में।

उत्तर– (ब) कथात्मक विकास में।

(31) 'वापसी' कहानी में मुहावरों और व्यंजनात्मकता से युक्त भाषा .... है–

(अ) रोचक व प्रवाहमयी (ब) असहनीय
(स) अनुकरणीय (द) कटु।

उत्तर– (अ) रोचक व प्रवाहमयी।

(32) 'वापसी' कहानी में गजाधर बाबू कहाँ के लिए निकल गये थे?

(अ) खरीदारी करने (ब) विदेश यात्रा पर
(स) नौकरी के लिए (द) घर के लिए।

उत्तर– (स) नौकरी के लिए।

(33) वापसी कहानी का उद्देश्य है–

(अ) बाह्य वैमनस्यता को उभारना (ब) आन्तरिक वैमनस्यता को उभारना
(स) बाह्य वैमनस्यता को दबाना (द) आन्तरिक वैमनस्यता को दबाना।

उत्तर– (ब) आन्तरिक वैमनस्यता को उभारना।

(34) वापसी कहानी दो पीढ़ियों के .... पर आधारित है।

(अ) स्वतंत्र लेखन पर (ब) स्वयं की अभिव्यक्ति पर
(स) स्वतंत्र विचारों पर (द) अन्तर्द्वन्द्व पर।

उत्तर– (द) अन्तर्द्वन्द्व पर।

(3)
शिकागो व्याख्यान
(स्वामी विवेकानन्द)

लघु उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न–1. शिकागो व्याख्यान में स्वामी विवेकानंद ने जो स्रोत कहा था, उसकी दो पंक्तियों में व्याख्या कीजिये।

उत्तर– शिकागो व्याख्यान में स्वामी विवेकानंद के स्रोत के अनुसार– जैसे विभिन्न नदियाँ भिन्न–भिन्न स्रोतों से निकलकर समुद्र में मिल जाती हैं, उसी प्रकार हे प्रभो! भिन्न–भिन्न रुचि के अनुसार विभिन्न टेढ़े–मेढ़े अथवा सीधे रास्ते से जाने वाले लोग अन्त में तुझमें ही आकर मिल जाते हैं।

रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम्।
नृणामेको गम्यस्त्वमसि, पयसामर्णव इव।।

प्रश्न–2. गीता के उपदेश में क्या कहा गया है, जो स्वामी विवेकानंद ने अपने व्याख्यान में कहा था?

उत्तर– स्वामी विवेकानंद ने अपने व्याख्यान में कहा था– जो कोई मेरी ओर आता है, चाहे किसी प्रकार से हो, मैं उसको प्राप्त होता हूँ। लोग भिन्न–भिन्न मार्ग द्वारा प्रयत्न करते हुये अन्त में मेरी ही ओर आते हैं।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।

प्रश्न–3. धार्मिक एकता के विषय में स्वामी विवेकानंद ने क्या कहा था?

उत्तर– धार्मिक एकता के बारे में स्वामी जी के विचार थे कि सभी धर्मों का अपना एक वैशिष्ट्य है और उसी की रक्षा करते हुये प्रत्येक धर्म वृद्धि को प्राप्त करता है। धार्मिक एकता किसी एक धर्म की विजय और बाकी धर्मों का विनाश होने में नहीं है। किसी के धर्म–परिवर्तन को धार्मिक एकता नहीं कहा जा सकता है। बीज भूमि में बो दिया गया और मिट्टी, वायु और जल उसके चारों ओर रख दिये गये, तो क्या वह बीज मिट्टी हो जाता है? अथवा वायु का जल बन जाता है? नहीं वह तो वृक्ष ही होता है। वह अपनी वृद्धि के नियम से ही बढ़ता है। वायु, जल और मिट्टी को अपने से पचाकर, उनको उभ्दिज पदार्थ में परिवर्तित करके एक वृक्ष बन जाता है।

प्रश्न–4. धर्म महासभा ने जगत के समक्ष क्या सिद्ध किया?

उत्तर– स्वामी विवेकानन्द के अनुसार धर्म महासभा से संसार को यह शिक्षा मिली कि शुद्धता, पवित्रता एवं दयाशीलता किसी सम्प्रदाय–विशेष की एकान्तिक सम्पत्ति नहीं है एवं प्रत्येक धर्म ने श्रेष्ठ एवं अतिशय उन्नतचरित्र स्त्री–पुरुषों को जन्म दिया है।

प्रश्न–5. प्रत्येक धर्म की पताका पर क्या लिखा होगा?

उत्तर– स्वामीजी कहते हैं कि शीघ्र ही सारे प्रतिरोधों के बावजूद प्रत्येक धर्म की पताका पर यह लिखा रहेगा– 'सहायता करो, लड़ो मत, परभाव–ग्रहण न कि परभाव–विनाश, समन्वय और शान्ति न कि मतभेद और कलह।'

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न–1. शिकागो व्याख्यान में स्वामी विवेकानंद ने क्या संदेश दिया था? 300 शब्दों में लिखिये।

उत्तर– शिकागो व्याख्यान का संदेश यही है कि साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता और उनकी वीभत्स वंशधर धर्मान्धता ने इस सुन्दर पृथ्वी की कई सभ्यताओं का विध्वंस किया है इसलिये इस सत्य को समझकर कि जिस प्रकार भिन्न–भिन्न नदियाँ भिन्न–भिन्न स्त्रोतों से निकलकर सागर में मिल जाती हैं, उसी प्रकार सभी धर्मों के अपने–अपने नियम सिद्धान्त होने के बावजूद भी उनमें समसुरता हो। कोई भी धर्म दूसरे धर्म का विनाश या नीचा दिखाने का न सोचते हुये दूसरों के सारभाग को आत्मसात करें। इस धर्म–महासभा ने जगत के समक्ष यह सिद्ध कर दिया है कि शुद्धता, पवित्रता और दयाशीलता किसी सम्प्रदाय–विशेष की एकान्तिक सम्पत्ति नहीं है। प्रत्येक धर्म में श्रेष्ठ एवं उन्नतचरित्र स्त्री–पुरुष हैं। कोई यह नहीं सोच सकता कि केवल उसका धर्म जीवित रहेगा बाकी धर्म नष्ट हो जायेंगे क्योंकि शीघ्र ही सारे प्रतिरोधों के बावजूद प्रत्येक धर्म की पताका पर यह लिखा रहेगा– ''सहायता करो, लड़ो मत, 'परभाव-ग्रहण, न कि परभाव–विनाश' समन्वय और शान्ति न कि मतभेद और कलह।''

प्रश्न–2. शिकागो व्याख्यान में स्वामी विवेकानंद ने किन–किनकी ओर से धन्यवाद दिया था? बताइये।

उत्तर– शिकागो व्याख्यान में स्वामी विवेकानन्द ने सन्यासियों की प्राचीन परम्परा की ओर से, धर्मों की माता की ओर से एवं सभी सम्प्रदायों एवं मतों के कोटि–कोटि हिन्दुओं की ओर से धन्यवाद दिया था। स्वामी विवेकानंद ने कहा– उन महानुभावों को मेरा धन्यवाद है, जिनके विशाल हृदय तथा सत्य के प्रति अनुराग ने पहले इस अद्भुत स्वप्न को देखा और फिर उसे कार्यरूप में परिणित किया। उन उदार भावों को मेरा धन्यवाद, जिनसे यह सभामंच आप्लावित होता रहा है। इस प्रबुद्ध श्रोतामण्डली को मेरा धन्यवाद, जिसने मुझ पर अविकल कृपा रखी है और जिसने मत–मतान्तरों के मनोमालिन्य को हल्का करने का प्रयत्न करने वाले प्रत्येक विचार का सत्कार किया है। इस समसुरता में कुछ बेसुरे स्वर भी बीच–बीच में सुने गये हैं। उन्हें मेरा विशेष धन्यवाद, क्योंकि उन्होंने अपने स्वरवैचित्र्य से इस समरसता को और भी मधुर बना दिया है।

प्रश्न–3. स्वामी विवेकानंद अपने धर्म के प्रति गर्व का अनुभव क्यों कर रहे थे?

उत्तर– स्वामी विवेकानन्द को ऐसे देश का व्यक्ति होने पर गर्व अनुभव हुआ, जिसने इस पृथ्वी को समस्त धर्मों को और देशों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है। इस देश ने अपने वक्ष में यहूदियों के विशुद्धतम अवशिष्ट अंश को स्थान दिया था। ऐसे धर्म के अनुयायी होने में विवेकानन्द गर्व का अनुभव करते हैं, जिसने महान जरथुष्ट जाति के अवशिष्ट अंश को शरण दी और जिसका पालन वह अब तक कर रहा है।

प्रश्न–4. स्वामी विवेकानंद ने अपने व्याख्यान में बीज के बारे में क्या कहा था?

उत्तर– स्वामी विवेकानंद ने अपने व्याख्यान में कहा कि सभी धर्मों का अपना एक वैशिष्ट्य है और उसी की रक्षा करते हुये प्रत्येक धर्म वृद्धि को प्राप्त करता है। धार्मिक एकता किसी एक धर्म की विजय और बाकी धर्मों का विनाश होने में नहीं है। किसी के धर्म–परिवर्तन को धार्मिक एकता नहीं कहा जा सकता है। बीज भूमि में बो दिया गया और मिट्टी, वायु और जल उसके चारों ओर रख दिये गये, तो क्या वह बीज मिट्टी हो जाता है? अथवा वायु का जल बन जाता है? नहीं वह तो वृक्ष ही होती है। वह अपनी वृद्धि के नियम से ही बढ़ता है। वायु, जल और मिट्टी को अपने से पचाकर, उनको उभ्दिज पदार्थ में परिवर्तित करके एक वृक्ष बन जाता है।

प्रश्न–5. मानव समाज की उन्नत अवस्था में कौन–सी बाधायें हैं?

उत्तर– स्वामी विवेकानन्द के अनुसार मानव समाज की उन्नत अवस्था में बाधायें हैं– साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता और उनकी वीभत्स वंशधर धर्मान्धता। स्वामी जी ने साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता और धर्मान्धता का विरोध किया है और उसे सभ्यताओं का विनाश करने वाली दानवी माना है। वे मानते हैं कि जैसे विभिन्न नदियाँ भिन्न–भिन्न स्रोतों से निकलकर समुद्र में मिल जाती हैं। उसी प्रकार सभी धर्म परमेश्वर की ओर ही ले जाते हैं। स्वामीजी ने इस बात का भी विरोध किया कि कोई एक धर्म बाकी धर्मों के विनाश से विजय प्राप्त नहीं कर सकता है। धर्म–परिवर्तन का विरोध करते हुये उन्होंने कहा कि प्रत्येक धर्म को अपना अस्तित्व बनाये रखकर अन्य धर्मों से अच्छी बातें ग्रहण करके स्वयं को पुष्ट करते रहना चाहिये। इस धर्म महासभा ने यह सिद्ध कर दिया है कि शुद्धता, पवित्रता और दयाशीलता किसी सम्प्रदाय विशेष की एकान्तिक सम्पत्ति नहीं है, क्योंकि प्रत्येक धर्म ने श्रेष्ठ और उच्चचरित्र के स्त्री–पुरुषों को जन्म दिया है। सच्चा धर्म वही है जो सहिष्णुता और सार्वभौम स्वीकृति की शिक्षा देता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(1) **स्वामी विवेकानंद के गुरू कौन थे?**

(अ) स्वामी रामकृष्ण परमहंस (ब) आचार्य विनोबा भावे
(स) शंकराचार्य (द) महर्षि अरविंद।

उत्तर– (अ) स्वामी रामकृष्ण परमहंस।

(2) **स्वामी विवेकानंद का जन्मदिन किस रूप में मनाया जाता है?**

(अ) बाल दिवस (ब) मातृ दिवस
(स) संन्यासी दिवस (द) युवा दिवस।

उत्तर– (द) युवा दिवस।

(3) **राष्ट्रीय युवा दिवस कब मनाया जाता है?**

(अ) 12 जनवरी को (ब) 12 फरवरी को
(स) 12 अगस्त को (द) 12 अक्टूबर को।

उत्तर– (अ) 12 जनवरी को।

(4) **स्वामी विवेकानन्द अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में कहाँ रहे थे?**

(अ) कोलकाता में (ब) बेलूर मठ में
(स) कश्मीर में (द) काशी मठ में।

उत्तर– (ब) बेलूर मठ में।

(5) **स्वामी विवेकानंद ने शिकागो व्याख्यान किस दिन दिया था?**

(अ) 11 सितम्बर, 1893 (ब) 11 सितम्बर, 1896
(स) 11 सितम्बर, 1897 (द) 11 सितम्बर, 1894

उत्तर– (अ) 11 सितम्बर, 1893

(6) **शिकागो शहर कौनसे देश में स्थित है?**

(अ) इंग्लैण्ड (ब) जापान
(स) चीन (द) यू.एस.ए.।

उत्तर– (द) यू.एस.ए.।

(7) **स्वामी विवेकानंद ने शिकागो व्याख्यान में श्रोताओं को क्या कह कर सम्बोधित किया था?**

(अ) माताओं और बहनों (ब) अमेरिकावासी बहनों तथा भाइयों
(स) अमेरिका के श्रोताओं (द) अमेरिका के भाइयों।

उत्तर– (ब) अमेरिकावासी बहनों तथा भाइयों।

(8) **स्वामी विवेकानन्द को राम कृष्ण परमहंस के पास जाने की सलाह किसने दी?**

(अ) महात्मा गाँधी ने (ब) दयानन्द सरस्वती ने

(स) महर्षि देवेन्द्रनाथ ने (द) महर्षि वेदव्यास ने।

उत्तर– (स) महर्षि देवेन्द्रनाथ ने।

(9) बोस्टन में स्वामी विवेकानन्द की मुलाकात किससे हुई?

(अ) जॉन हेनरी राइट (ब) अब्राहम लिंकन

(स) महात्मा गाँधी (द) जवाहरलाल नेहरू।

उत्तर– (अ) जॉन हेनरी राइट।

(10) शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद ने किस देश के प्रतिनिधि के रूप में व्याख्यान दिया था?

(अ) मॉरीशस (ब) श्रीलंका

(स) भारत (द) अमेरिका।

उत्तर– (स) भारत।

(11) स्वामी विवेकानन्द ने विश्व धर्म संसद में कहाँ व्याख्यान दिया था?

(अ) बर्लिन में (ब) शिकागो में

(स) लंदन में (द) मास्को में।

उत्तर– (ब) शिकागो में।

(12) स्वामी विवेकानन्द जी ने शिकागो व्याख्यान में क्या संदेश दिया?

(अ) भाई–चारे का (ब) नैतिकता का

(स) मातृ–प्रेम का (द) भ्रातृ–प्रेम का।

उत्तर– (ब) नैतिकता का।

(13) शिकागो में अपने भाषण में स्वामी विवेकानन्द ने अपने भाषण की शुरूआत किस शब्दों से की था?

(अ) ब्रदर्स एंड सिस्टर्स ऑफ अमेरिका (ब) माई फ्रेन्ड्स

(स) देवियो एवं सज्जनो (द) लेडीज एंड जेन्टलमैन।

उत्तर– (अ) ब्रदर्स एंड सिस्टर्स ऑफ अमेरिका।

(14) विवेकानन्द ने किस शहर से विश्व धर्म ग्रंथ की सदस्यता ग्रहण की?

(अ) इंग्लैण्ड (ब) बर्लिन

(स) शिकागो (द) कोलकाता।

उत्तर– (ब) बर्लिन।

(15) स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो के सम्बोधन में किस भाषा में भाषण दिया था?

(अ) बंगाली भाषा में (ब) अंग्रेजी भाषा में

(स) हिन्दी भाषा में (द) संस्कृत भाषा में।

उत्तर– (ब) अंग्रेजी भाषा में।

(16) स्वामी विवेकानन्द ने ब्रह्माण्ड की तुलना किससे की थी?

(अ) शून्य से (ब) पाई से

(स) ओमेगा से (द) दशमलव से।

उत्तर– (अ) शून्य से।

(17) विवेकानन्द ने किस महापुरुष के नाम पर अपने विचारों को प्रस्तुत किया?

(अ) बाबा रामदेव (ब) रामकृष्ण परमहंस

(स) महर्षि दयानन्द (द) सत्यमित्रानन्द।

उत्तर– (ब) रामकृष्ण परमहंस।

(18) विवेकानन्द के द्वारा स्थापित मठ का नाम क्या है?

(अ) राधाकृष्ण मठ (ब) गोरखपुर मठ

(स) बेलूर मठ (द) उपरोक्त सभी।

उत्तर– (स) बेलूर मठ।

(19) शिकागो में प्रसिद्ध है–

(अ) दवाखाना (ब) कसाईखाना

(स) मुर्गीखाना (द) चिड़ियाघर।

उत्तर– (ब) कसाईखाना।

(20) स्वामी विवेकानन्द जी के जन्म के समय का नाम क्या था?

(अ) राजेन्द्रनाथ (ब) वीरेन्द्रनाथ

(स) सुरेन्द्रनाथ (द) नरेन्द्रनाथ।

उत्तर– (द) नरेन्द्रनाथ।

(21) 'विवेकानन्द आधुनिक भारत के निर्माता हैं' यह किसने कहा?

(अ) महात्मा गाँधी ने (ब) सुभाष चन्द्र बोस ने

(स) सरदार पटेल ने (द) रविन्द्रनाथ टैगोर ने।

उत्तर– (ब) सुभाष चन्द्र बोस ने।

(22) विवेकानन्द ने रामकृष्ण परमहंस से पहली मुलाकात पर कौनसा प्रश्न पूछा?

(अ) क्या आप ही भगवान हैं? (ब) क्या आपने भगवान को देखा है?

(स) क्या भगवान सचमुच होता है? (द) क्या आप भगवान को जानते हैं?

उत्तर– (ब) क्या आपने भगवान को देखा है?

(23) स्वामी विवेकानन्द जी ने शिकागो में कितने शब्द लम्बा भाषण दिया था?

(अ) 200 शब्द लम्बा (ब) 300 शब्द लम्बा

(स) 400 शब्द लम्बा (द) 500 शब्द लम्बा।

उत्तर– (अ) 200 शब्द लम्बा।

(24) स्वामी विवेकानन्द ने कितने वर्ष की आयु में गेरुआ वस्त्र धारण किया था?

(अ) 15 वर्ष (ब) 20 वर्ष

(स) 25 वर्ष (द) 30 वर्ष।

उत्तर– (स) 25 वर्ष।

(25) स्वामी विवेकानन्द का जन्म हुआ कब था?

(अ) 12 जनवरी, 1863 (ब) 12 फरवरी, 1863

(स) 12 मार्च, 1863 (द) 12 अप्रैल, 1863

उत्तर– (अ) 12 जनवरी, 1863

(26) कितने वर्ष की आयु से स्वामी विवेकानन्द ने भारतवर्ष की यात्रा शुरू की थी–

(अ) 20 वर्ष (ब) 21 वर्ष

(स) 22 वर्ष (द) 25 वर्ष।

उत्तर– (द) 25 वर्ष।

(27) स्वामी विवेकानन्द ने बंगाली में संगीत पर कौनसा ग्रंथ संकलित किया?

(अ) स्वर संगीत (ब) संगीत कल्पतरु

(स) तेलुगू संगीत (द) बंगाली संगीत।

उत्तर– (ब) संगीत कल्पतरु।

(28) स्वामी विवेकानन्द की मातृभाषा कौनसी थी?

(अ) उर्दू भाषा (ब) बंगाली भाषा

(स) अंग्रेजी भाषा (द) तेलुगू भाषा।

उत्तर– (ब) बंगाली भाषा।

(29) स्वामी विवेकानन्द का निधन हुआ–

(अ) 4 जुलाई, 1902 को (ब) 10 जुलाई, 1932 को

(स) 5 जुलाई, 1985 को (द) 15 जुलाई, 1920 को।

उत्तर– (अ) 4 जुलाई, 1902 को।

(30) शिकागो व्याख्यान में स्वामी विवेकानन्द ने शून्य की तुलना किससे की थी?

(अ) पृथ्वी से (ब) अनन्त ब्रह्माण्ड से

(स) पाताल से (द) आकाश से।

उत्तर– (ब) अनन्त ब्रह्माण्ड से।

(31) स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो व्याख्यान में अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड के नायक को सनातन धर्म में .... कहा जाता है–

(अ) श्री विद्या (ब) श्री कृष्ण विद्या

(स) श्री वैभव विद्या (द) महा विद्या।

उत्तर– (द) महा विद्या।

(32) स्वामी विवेकानन्द रॉक मेमोरियल कहाँ स्थित है?

(अ) कोलकाता में (ब) दिल्ली में

(स) मुंबई में (द) कन्याकुमारी में।

उत्तर– (द) कन्याकुमारी में।

(33) स्वामी विवेकानन्द की माता का नाम क्या था?

(अ) भगवती देवी (ब) निर्मला देवी

(स) कमला देवी (द) भुवनेश्वरी देवी।

उत्तर– (द) भुवनेश्वरी देवी।

(34) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार ब्रह्माण्ड का नाद है–

(अ) अहः (ब) अरे

(स) ॐ (द) अहं।

उत्तर– (स) ॐ।

(35) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार हम किसके उपासक हैं?

(अ) अहः ब्रह्म (ब) अहं ब्रह्मा

(स) नाद (द) रूप ब्रह्म।

उत्तर– (स) नाद।

(36) स्वामी विवेकानन्द ने स्नातक की परीक्षा कब उत्तीर्ण की?

(अ) 1881 में (ब) 1882 में

(स) 1884 में (द) 1886 में।

उत्तर– (स) 1884 में।

(37) स्वामी विवेकानन्द ने अपनी ऐतिहासिक भारत की यात्रा कब प्रारंभ की?

(अ) 1886 में (ब) 1887 में

(स) 1891 में (द) 1894 में।

उत्तर– (स) 1891 में।

(38) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार स्त्रीलिंग किसका पालक है?

(अ) सृष्टि का (ब) बच्चों का

(स) नवयुवकों का (द) बुजुर्गों का।

उत्तर– (अ) सृष्टि का।

(39) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार पुल्लिंग सृष्टि का .... है।

(अ) सृजक (ब) पालक

(स) बाधक (द) कारक।

उत्तर– (द) कारक।

(40) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार सृष्टि में उभयलिंग क्या कर रहा है?

(अ) संचालन (ब) संचारण

(स) संवाहन (द) संधारण।

उत्तर– (ब) संचारण।

(41) 'वेदांत सोसाइटी ऑफ इंडिया' की स्थापना स्वामी विवेकानन्द ने कब की?

(अ) 1892 में (ब) 1894 में

(स) 1896 में (द) 1898 में।

उत्तर– (ब) 1894 में।

(42) बेलूर रामकृष्ण मठ कौनसी नदी के किनारे स्थापित किया गया था?

(अ) ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे (ब) हुगली नदी के किनारे

(स) गंगा नदी के किनारे (द) यमुना नदी के किनारे।

उत्तर– (स) गंगा नदी के किनारे।

(43) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार प्रकाश बिन्दु किस रंग का है?

(अ) हरा (ब) लाल

(स) पीला (द) नीला।

उत्तर– (द) नीला।

(44) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार कितने कोटि ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति होती है?

(अ) हज़ार कोटि (ब) लाख कोटि

(स) अनन्त कोटि (द) करोड़ कोटि।

उत्तर– (स) अनन्त कोटि।

(45) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड उत्पत्ति को कहते हैं–

(अ) विस्फोट (ब) टनों विस्फोट

(स) सहस्र विस्फोट (द) महाविस्फोट।

उत्तर– (द) महाविस्फोट।

(46) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार जब अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का लय होता है, तब उसे कहते हैं–

(अ) निपात (ब) महानिपात

(स) महाविस्फोट (द) लय विस्फोट।

उत्तर– (ब) महानिपात।

(47) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार ब्रह्माण्डों की गति, विपत्ति, व्युपत्ति काल परिस्थिति होती है–

(अ) अनिश्चित (ब) सुनिश्चित

(स) निश्चित (द) कैलकुलेटेड पूर्व सुनिश्चित।

उत्तर– (द) कैलकुलेटेड पूर्व सुनिश्चित।

(48) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार नीलकाल की सुन्दर प्रकृति का संचारण होता है–

(अ) पातालधाम पर (ब) आकाशधाम पर

(स) धराधाम पर (द) मुक्तिधाम पर।

उत्तर– (स) धराधाम पर।

(49) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार हमें सम्मान करना चाहिए–

(अ) वायुधाम का (ब) जलधाम का

(स) आकाशधाम का (द) धराधाम का।

उत्तर– (द) धराधाम का।

(50) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है–

(अ) पक्षियों का संरक्षण करना (ब) पशुओं का संरक्षण करना

(स) जल का संरक्षण करना (द) प्रकृति का संरक्षण करना।

उत्तर– (द) प्रकृति का संरक्षण करना।

(51) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार, सुबह उठकर प्रणाम करना चाहिए–

(अ) ईश्वर को (ब) माता पिता को

(स) गंगा नदी को (द) धरती को।

उत्तर– (द) धरती को।

(52) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार माथे पर किसका तिलक लगाना चाहिए?

(अ) हल्दी का (ब) धूल का

(स) कुमकुम का (द) चन्दन का।

उत्तर– (ब) धूल का।

(53) स्वामी विवेकानन्द का जन्म कहाँ हुआ था?

(अ) दिल्ली में (ब) मुंबई में

(स) बनारस में (द) कलकत्ता में।

उत्तर– (द) कलकत्ता में।

(54) स्वामी विवेकानन्द के शिकागो व्याख्यान के बाद सभागार कितने मिनट तक तालियों से गूँजता रहा?

(अ) 25 मिनट (ब) 30 मिनट

(स) 35 मिनट (द) 40 मिनट।

उत्तर– (अ) 25 मिनट।

(55) जितना बड़ा संघर्ष होगा उतनी ही शानदार .... होगी।

(अ) हार (ब) जीत

(स) स्थल (द) पहल।

उत्तर– (ब) जीत।

(56) शिकागो व्याख्यान के अनुसार स्वयं को कमजोर समझना सबसे बड़ा ...... है।

(अ) पाप (ब) पुण्य

(स) स्वाभिमान (द) वरदान।

उत्तर– (अ) पाप।

(57) स्वामी विवेकानन्द का ध्येय वाक्य था–

(अ) उठो और सो जाओ (ब) उठो जागो और पूजा करो

(स) उठो और काम से लगो (द) उठो जागो लक्ष्य प्राप्त करो।

उत्तर– (द) उठो जागो लक्ष्य प्राप्त करो।

(58) 'शिकागो व्याख्यान' के अनुसार जो व्यक्ति किसी सांसारिक वस्तु से व्याकुल नहीं होता उसे .... प्राप्त होता है–

(अ) पुरस्कार (ब) अमरत्व

(स) मैडल (द) साधुत्व।

उत्तर– (ब) अमरत्व।

इकाई-2

(1) आँगन का पंछी

(विद्यानिवास मिश्र)

लघु एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

प्रश्न–1. विद्यानिवास मिश्र का उपनाम क्या है?

उत्तर– भ्रमरानन्द।

प्रश्न–2. 'आँगन का पंछी' किसकी रचना है?

उत्तर– 'आँगन का पंछी' विद्यानिवास मिश्र जी का ललित निबंध है।

प्रश्न–3. 'आँगन का पंछी' निबंध साहित्य की कौनसी विधा में लिखा गया है?

उत्तर– 'आँगन का पंछी' हिन्दी साहित्य की निबंध विधा (ललित निबंध) में लिखा गया है।

प्रश्न–4. 'आँगन का पंछी' में गौरैया पक्षी किसका प्रतीक है?

उत्तर– एक प्रकार से घर के आँगन में गौरैया का ढीठ होकर चहचहाना दाने चुनकर मुंडेर पर बैठना, हर शाम और हर सुबह हर कहीं तिनके बिखेरना और घूम–फिर कर फिर रात में घर ही में बस जाना अपनी बढ़ती चाहने वाले गृहस्थ के लिए बच्चों की किलकारी, मीठी शरारत और निर्भय उच्छृंखलता का प्रतीत है।

प्रश्न–5. कौनसा घर निर्वंश–सा हो जाता है?

उत्तर– गाँव में यह कहा जाता है– जिस घर में गौरैया अपना घोंसला नहीं बनाती वह घर निर्वंश–सा हो जाता है।

प्रश्न–6. विद्यानिवास मिश्र द्वारा विरचित निबंध 'आँगन का पँछी' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिये।

अथवा

विद्यानिवास मिश्र के विचारों को 'आँगन का पंछी' निबंध के संदर्भ में व्यक्त कीजिये।

उत्तर– विद्यानिवास मिश्र ने आँगन के पंछी निबंध में घर में रहने वाली सामान्य चिड़िया गौरैया के बारे में अपने विचार व्यक्त किये हैं– उनके विचारानुसार जिस घर में गौरैया अपना घोंसला नहीं बनाती वह घर निर्वंश हो जाता है मिश्र जी लिखते हैं–

एक तरह से घर के आँगन में गौरैयों का ढीठ होकर चहचहाना, दाने चुगकर मुंडेरी पर बैठना, हर साँझ हर सुबह हर कहीं तिनके बिखेरना, और घूम–फिरकर फिर रात में घर ही में बस जाना अपनी बढ़ती चाहने वाले गृहस्थ के लिए बच्चों की किलकारी, मीठी शरारत और निर्भय उच्छलता का प्रतीक है। फूल तो बहुत–से होते हैं– एक–से–एक चटकीले, एक–से–एक खुशबू वाले, एक–से–एक कँटीले, पर बेला, गुलाब, जूही, चमेली, कुमुद, कमल बहुत कम आँगनों में मिलते हैं और अकिंचन से अकिंचन आँगन में भी तुलसी की वेदी जरूर मिलती है, और उस वेदी पर तुलसी की मंजरी जरूर खिलती है। जिस तरह गौरैये में कोई रूप–रंग की विशेषता नहीं, कण्ठ में कोई विशेष प्रकार की विहलता नहीं, उड़ान भरने की भी कोई विशेष क्षमता नहीं, महज आँगन में फुदकने का उछाह है, उसी प्रकार तुलसी के पौधों में न तो सघन छाँह की शीतलता है, न गंध का जादू, न रूप का शृंगार, केवल आँगन का दुःख–दर्द बँटाने की मन में बड़ी उत्कण्ठा है। तुलसी की पूजा के लिए तो खैर शास्त्रीय आधार है, पर गौरैया के लिए मात्र जनविश्वास का यह उपहार–भर है कि वह पक्षियों में ब्राह्मण है, इसीलिए इतनी ढीठ, इतनी निर्भय, इतनी आत्मीय और इतनी मंगलास्पद है। जो लोग चिड़ियों का शिकार करते भी हैं, वे गौरैया नहीं मारते, गौरैया मारना पाप समझते हैं। मैंने अपनी ससुराल के बड़े आँगन में देखा है कि वहाँ गौरैयों के लिए धानों की मोजर आँगन के चारों ओर ओरियों के नीचे बराबर लटकायी रहती हैं और धान की मंजरियों की यह पंक्ति रीतती नहीं। शायद इसलिए कि गौरैयों को भी इनके प्रति मोह हो। बहरहाल उसे बड़े आँगन में बराबर धान सुखाया जाता है और उस पर बराबर गौरैयों के दल–के–दल आते रहते हैं, जरा–सी देर में जरा–से इशारे से ये दल तितर–बितर हो जाते हैं पर जरा–सी आँख ओझल होते ही, फिर वहीं जम जाते हैं। घर में रहते हुए भी ये स्वच्छन्द रहते हैं। वह आँगन बड़ा तो है पर भरा नहीं है साल में केवल कभी–कभी यह आँगन मेहमान की तरह आये हुये बच्चों से भरता है, पर आँगन उनसे भरने वाला है या उनसे भर चुका है, मानो इसी आशा और इसी स्मृति में इन गौरैयों को ऐसा प्यार दिया जाता है।

फिर वे चीन के इस अभियान से दुःखी होते हैं जिसमें चीन की सरकार ने गौरैयों को उड़ा–उड़ाकर मारने का प्रयास किया वहाँ लोग बन्दूक के धमाके से गौरैयों को तब तक उड़ाते थे तब तक कि वे थककर गिर नहीं पड़ते एवं बाद में उनका वध कर दिया जाता है। वे इस प्रकार से पीड़ित हुए उनका कहना है कि गौरैया दाना चुगने के नुकसान से अधिक लाभ इस तरह पहुँचाती है कि वह उन तमाम कीटों को साफ कर देती है जो फसल के लिये अत्यन्त घातक बनते। वे कहते हैं यह कौन से पंचशील का उदाहरण है– क्योंकि जितना व्यय उन गोलियों में हुआ उतना धन का अनाज गौरैयों ने नहीं खाया होगा। उनके अनुसार हमारे देश में भी अनेक कुतर्की लोग हैं जो बन्दर, चिड़ियों, चूहे इत्यादि के नुकसान पर नियंत्रण का सुझाव देते हैं। किन्तु चीन की क्रूरता को मिश्र जी निम्न शब्दों द्वारा व्यक्त करते हैं जो व्यंग्यपूर्ण है–

पर चीन के ये सयाने तो इस मात्र नियंत्रण तक संतुष्ट नहीं है, वे निर्मूलन में विश्वास करते हैं। सृष्टि के संतुलन बनें– बिगड़े, यहाँ तक कि मनुष्य जिसलिए यह कर रहा है, वह भी उसे मिले न मिले, पहले वह अपने दिल का गुबार तो उतार लें। और चीन प्रज्ञापारमिता का देश है, बुद्ध की मैत्री का देश है, नये युग में मनुष्य के उद्धार का दावा करने वाला देश है, और है सह–अस्तित्व, परस्पर सहयोग और प्रेम की कसम खाने वाला देश! लगता यह है कि चीन में जैसे कोई घर न रह गया हो, किसी घर और किसी आँगन के लिए कोई मुहब्बत न रह गयी हो, किसी घर और किसी आँगन में मुक्त हँसी न रह गयी हो, उसमें बच्चे न रह गये हों, और अगर रह भी गये हों तो किसी बच्चे के चेहरे पर विश्वास की चमक न रह गयी हो। तभी तो गौरैयों के साथ नादिरशाही बदला लिया जा रहा है। उनका अपराध केवल यही है कि वे निःशंक है और निःशंक होकर वे हर घर में आनन्द के दाने बिखेर जाती हैं, जितने

दाने लेती हैं, उन्हें चौगुना करके आनन्द में परिवर्तित कर हर आँगन में मुक्तहस्त होकर लुटा जाती हैं।

मेरी छोटी पुत्री मिनी, गौरैया को देखकर नाचती है। उन्हें बुलाती है, धमकाती है जैसे दो चरम आनन्दकारी अभिव्यक्तियाँ ओत-प्रोत हो गई हों। अतः यह अभियान अनेक मिनियों के विरूद्ध चलाया गया अभियान प्रतीत होता है राजनीति की सतह पर इसे सोचना गलत होगा। आप लोग बच्चों के हर्ष पर क्यों प्रहार करते हैं? इसी से मन में आक्रोश होता है मिश्र जी अन्त में लिखते हैं–

मन में यह आक्रोश आता है पर फिर सोचता हूँ यह आक्रोश प्रतिगामिता है। मुझे धरती और धरती की परम्परा की बात-भर करनी चाहिए, धरती के आनन्द के उत्तराधिकारियों की बात करने पर आनन्दवादी कहा जाता हूँ– मेरे एक मार्क्सवादी मित्र ने मुझे यही संज्ञा दे रखी है। पर क्या करूँ, गँवार आदमी हूँ, क्या कहने से क्या समझा जाएगा, यह जानता ही नहीं, केवल जब कहे बिना रहा नहीं जाता तभी कहता हूँ। गौरैयों ने विवश किया, तुलसी ने विवश किया, मिनी ने विवश किया, तब मुझे कहना पड़ा। इन तीनों में मुझे सीता की सुधि आती है, इन तीनों में मुझे धरती का दुलार छलकता नजर आता है, इसलिये मुझे उस दुलार के नाम पर यह गुहार लगानी पड़ती है कि धरतीवादियों, धरती वही नहीं है जो तुम्हारे पैरों के नीचे है। धरती की विरासत सँभालना आसान नहीं, उस विरासत के असंख्य शिशुओं के साथ अपनी गोद में भरने वाली व्यापक सत्ता है। धरती की विरासत सँभालना आसान नहीं, उस विरासत के असंख्य साझीदारों को मिलाये बिना तुम घर के कर्त्ता नहीं बन सकते। यह गौरैया, यह तुलसी, यह मेरी और मेरी ही नहीं, तुम्हारी भी-मिनी तो उस विरासत की असली मालिक है, यही है वे बिना माँगे अपनी मिल्कियत लुटा देती हैं। उनके प्रति कृतज्ञ बनो, अपने आप तुम्हारी बढ़ती होगी!

प्रश्न–7. डॉ. विद्यानिवास मिश्र की भाषा–शैली पर अपने विचार प्रकट करिये।

अथवा

डॉ. विद्यानिवास मिश्र का हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्थान निर्धारित करते हुये उनकी भाषा–शैली पर प्रकाश डालिये।

उत्तर– स्वातन्त्र्योतर युग के श्रेष्ठ निबन्धकारों में विद्यानिवास मिश्र का नाम उल्लेखनीय । संस्कृत भाषा के विद्वान होने के साथ-साथ आप लोक-जीवन की ओर विशेष आकर्षित रहे हैं। परिणामतः संस्कृत साहित्य का उज्ज्वल वैभव और पांडित्य के साथ-साथ लोक-जीवन की सरसता भी आपके लेखन का एक महत्वपूर्ण तत्व है। उनके साहित्य के सम्बन्ध में **डा. जयचन्द्रराय** का मत है– 'उनके लेखन में शास्त्र-सम्पदा और लोक-संस्कृति एवं लोकाचार आदि का सहज स्वाभाविक सम्मिलन हो गया है।'

मिश्र जी का निबन्ध–साहित्य– मिश्र जी का निबन्ध साहित्य अत्यन्त विस्तृत है। हम यहाँ उस समूचे निबन्ध साहित्य की मूलभूत विशेषताओं का ही उल्लेख कर रहे हैं।

डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना ने मिश्रजी के निबन्धों के वर्गीकरण के दो आधार रखे हैं–

1. रचना प्रक्रिया की दृष्टि से विभाजन–

(1) **वैयक्तिक निबन्ध–** इनमें से 'चितवन की छाँह', 'तुम चन्दन हम पानी', 'आँगन का पंछी और बनजारा मन' आदि संकलनों के निबन्ध इसी कोटि के हैं।

(2) **समीक्षात्मक निबन्ध–** 'हिन्दी की शब्द सम्पदा', 'रीति–विज्ञान' के संकलित निबन्ध इसी कोटि के हैं।

2. वर्ण्य–विषय की दृष्टि से विभाजन–

(1) **भावात्मक निबन्ध–** इनमें कल्पना की उड़ान के साथ व्यंग्य-विनोद भी है और आत्म-प्रकाशन को भी महत्व दिया गया है। 'आँगन का पंछी', 'नया दौर', 'डेरी बनाम खेती', 'नर–नारायण', 'बर्फ और धूप' आदि इसी कोटि के निबन्ध हैं।

(2) **विचारात्मक निबन्ध–** इनमें परम्परा का गम्भीर चिन्तन, नये-नये आन्दोलनों की सार्थकता, राष्ट्रभाषा की समस्या और भारतीय जन-जीवन और राजनैतिक जीवन की समस्याओं पर विचार हुआ है। 'युद्ध और व्यक्तित्व', 'राष्ट्रभाषा की समस्या', 'विवाह–धूम', 'आम्र–मंजरी' आदि इसी कोटि के निबन्ध हैं।

(3) **समीक्षात्मक निबन्ध–** ये बहुत कम हैं जो केवल 'रीति–विज्ञान' में ही संकलित हैं।

(4) **वर्णनात्मक निबन्ध–** इन निबन्धों में दर्शनीय स्थलों, तीर्थों, मेले-तमाशों आदि का वर्णन है, जिसमें कल्पना का पर्याप्त योग है। इस श्रेणी के निबन्धों में 'संस्कृति की पाषाणी', 'मलय के अंचल में' आदि प्रसिद्ध हैं।

(5) **संस्मरणात्मक निबन्ध–** मित्रों, साहित्यकारों के जीवन की स्मृतियों को जिन निबन्धों में समेटा गया है, वे इसी श्रेणी के हैं। 'हिन्दी के अपराजेय योद्धा : भैया साहब', 'हिमालय ने उन्हें बुला लिया' आदि प्रसिद्ध हैं।

ललित निबन्धों के क्षेत्र में– मिश्र जी का ललित निबन्ध-लेखक के रूप में विशिष्ट स्थान है। इनके निबन्धों में लालित्यपूर्ण शैली के साथ, मानव-जीवन की विषमताओं एवं राजनैतिक विसंगतियों पर करारा व्यंग्य है।

मिश्र जी के निबन्धों की कुछ प्रमुख विशेषतायें– डॉ. सक्सेना ने इनके निबन्धों की 5 विशेषताओं की ओर संकेत किया है। हम यहाँ उनका संक्षेप में उल्लेख कर रहे हैं–

(1) **बुद्धि तत्व–** यद्यपि मिश्रजी ने भावात्मक निबन्ध अधिक लिखे हैं जिनमें कल्पना के वैभव के साथ भावुकता का समावेश है, किन्तु उनके निबन्धों में बौद्धिक चिन्तन का भी प्राधान्य है। उदाहरण के लिये, 'पार्थिव धर्म', 'आज की सांस्कृतिक विपन्नता' आदि।

(2) **अनुभूति तत्व–** इनके ललित निबन्धों में अत्यधिक भावुकता एवं रागात्मकता के कारण अनुभूति तत्व अधिक तीव्र और प्रखर हो गया है। परिणामस्वरूप ये निबन्ध जीवन एवं जगत् की गहन अनुभूतियों के भण्डार बन गये हैं तथा उनमें लेखक की संवेदनशीलता, भाव-प्रवणता एवं आवेगशीलता की झलक विद्यमान है। ये निबन्ध 'प्रभुत्व–ज्वर अस्पताल', 'बर्फ और धूप', 'शिरीष का आग्रह' आदि हैं।

(3) **कल्पना तत्व–** इनके ललित निबन्धों में कल्पना का विलास भी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। **डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना** के शब्दों में, 'आपके मन की तरंगों ने कल्पना-सागर में उमड़ते हुये जैसे-जैसे मादक क्रीड़ायें की हैं और सहृदय पाठकों के हृदय-तट को जिस तरह

अपने थपेड़ों से उद्वेलित एवं विह्वल किया है, वह किसी से छिपा नहीं है। आपकी गहन अनुभूति कल्पना के पंख लगाकर इन निबन्धों में इतनी उड़ी है कि उसके आगे गरुड़ का वेग भी मात खा जाता है।'

कल्पना तत्व की प्रधानता वाले निबन्ध हैं– 'अंधी जनता और लंगड़ा जनतंत्र', 'बसन्त आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं', 'संस्कृति की पाषाणी'।

(4) अहं तत्व– व्यक्तित्व की छाप से युक्त होने के कारण इनमें यह तत्व विशेष रूप से आ गया है। 'ड्योढ़े दर्जे का खातिमा', 'मेरी रूमाल खो गई', 'युद्ध और व्यक्तित्व' आदि में यह तत्व विशेष रूप से समाहित हुआ है।

भाषा–शैलीगत वैशिष्ट्य

(क) भाषागत वैशिष्ट्य– मिश्र जी की भाषा में विविधता है, विलक्षणता है, चमत्कारप्रियता और कवित्वमयी सरसता है। विविधता युक्त होने के कारण आपका शब्द-चयन अनूठा है–

(1) संस्कृत तत्सम शब्द– वे संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित हैं। अतः इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग होना नितान्त स्वाभाविक है– आतिथेय, स्तवक, प्रत्याख्यान, प्रातराश, स्पृहा, रस-स्राव साफल्य व धरित्री, कंटकाकीर्ण, परिपार्श्व आदि।

(2) प्रचलित शब्द– हिन्दी के प्रचलित शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग हुआ है– बुलबुला, टंकना, सड़ांध, उभार, ऊंचे आदमी, चिट, मंच, कृपया, चर्चा आदि।

(3) लोक–भाषा बोली के शब्द– इस प्रकार के शब्दों के प्रयोग से भाषा की अभिव्यंजना शक्ति में पर्याप्त वृद्धि हुई है– जून, अदहन, बरिच्छा, झपका, कुसाइत, फुआ, बौड़म, घुरवा, भटा, रपटा, आदि।

(4) उर्दू फारसी के शब्द– उन्हें ऐसे शब्दों से कोई परहेज नहीं था। उनके निबन्धों में इस प्रकार के शब्दों की भरमार है– फतवा, बगावत, अंदाज, उसूल, दायरा, कायम, गनीमत, रोशनी, खूबियाँ, तारीफ, महसूस, कोशिश आदि।

(5) अंग्रेजी शब्द– यत्र-तत्र उन्होंने प्रचलित अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया है– मीटिंग, जीप, लंच, डिनर, वोट, पैंडिल, पार्टी, कैबरे, रेस्तरां, फैशन, गारन्टी आदि।

(6) उद्धरण प्रयोग– संस्कृत के विद्वान होने के कारण मिश्र जी ने अपने निबन्धों में संस्कृत काव्य के उद्धरणों का प्रयोग करके, भाषा सौन्दर्य की वृद्धि की है, यथा–

'कामये..नाशतम्।'

(7) मुहावरों का प्रयोग– आपके निबन्धों में मुहावरों का अति सुन्दर ढंग से प्रयोग हुआ है– हाथ फैलाना, रौब गालिब करना, आँख भौं नचाना, हेकड़ी भूल जाना, इशारे पर नाचना।

(8) सूक्ति प्रयोग– इनसे भाषा में गहन गम्भीरता समाहित हो गयी है। साथ ही अर्थ-गौरव और उक्ति-वैचित्र्य का भी समावेश हो गया है–

(i) वाक् परस्पर व्यवहार का प्रकृष्ट साधन है।

(ii) पार्थिव कल्याण परमार्थ का पहला सोपान है।

(9) लाक्षणिकता– डॉ. सक्सेना के अनुसार इससे उनकी भाषा में गूढ़ता, गहनता एवं गुरुता के साथ-साथ महान् अर्थवता का विकास हुआ है। प्रयोग दृष्टव्य है–

(i) अब तो तीसरा दर्जा भी बिना बाप का हो गया।

(ख) शैलीगत वैशिष्ट्य– आपने अपने निबन्धों में कई शैलियों का प्रयोग किया है। उनमें से कुछ की विशिष्टताओं का उल्लेख करना उपयुक्त रहेगा–

(1) **विश्लेषणात्मक शैली–** किसी भाव, चिन्तन, काव्य की विवेचना करते समय इस शैली का प्रयोग हुआ है। 'रीति-विज्ञान' में 'राम की शक्ति-पूजा' की शैली में वैज्ञानिक व्याख्या करते हुये इसी शैली का प्रयोग हुआ है।

(2) **वर्णनात्मक शैली–** किसी तथ्य, भाव, दृश्य का वर्णन करते समय इस शैली का प्रयोग किया गया है। इसकी भाषा सरल और गठी हुई है– 'बिरजू महाराज तब उभर रहे थे और उन्हीं का कार्यक्रम प्रस्तुत करने जा रहा था कि दर्शकों में से एक बहुत ऊँचे आदमी ने चिट भिजवाई।'

(3) **व्याख्यात्मक शैली–** यह शैली लोक-जीवन की सरसता से भी युक्त है– 'नदी का जल, घिरा तो रहता नहीं, वह हमेशा 'चंचल' है, वहीं है कि कभी कम और कभी ज्यादा।'

(4) **लाक्षणिक शैली–** इस शैली के प्रयोग से एक विशिष्ट प्रकार की सरसता आ गई है– 'इनका मूल्य-बोध एक धुली स्लेट है, जिस पर जो अंक चाहे आप चढ़ा दीजिये, फिर उसे मिटा दीजिये।'

(5) **काव्यात्मक शैली–** इस शैली की भाषा शुद्ध एवं आलंकारिकता से युक्त है। इसमें लालित्य है। वाक्य गढ़े हुये और भावपूर्ण हैं– 'हमारी पूरी जिन्दगी बड़ी बेमेल बुनावट के कारण बीच-बीच में उघड़ती जा रही है'

(6) **व्यंग्यात्मक शैली–** इस शैली में भाषा तीखी और तराशपूर्ण है, जो तीखा प्रहार करने में समर्थ है– 'नये-नये बछेड़ों को घुमा-फिराकर प्रशिक्षित किया जा रहा है'

(7) **धारा शैली–** इस शैली में गद्य-काव्य का-सा आनन्द दिखायी देता है– 'आम्र-मंजरियों का रस पी-पीकर सुरीले कंठ नयी-नयी तानों को बिखेर तो रहे हैं'

(8) **तरंग शैली–** वाक्यों की लड़ियाँ-सी पिरो दी जाती हैं जो काव्य की-सी सरसता उत्पन्न कर देती है– 'पहले फूल आते हैं, तब पल्लव आते हैं, तब भौंरे आते हैं और तब कोयल बोलती है।'

मूल्यांकन– यह निर्विवाद सत्य है कि ललित निबन्धकारों की श्रेणी में वे प्रथम पंक्ति के ही लेखक हैं। उनके निबन्ध विषय की नवीनता और शैली की उत्कृष्टता के कारण हिन्दी की अक्षय निधि बन गये हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(1) **'आँगन का पंछी' निबंध हिन्दी साहित्य की कौनसी विधा में लिखा गया है?**

(अ) निबंध (ब) उपन्यास

(स) कहानी (द) संस्मरण।

उत्तर– (अ) निबंध।

(2) **'आँगन का पंछी' निबंध के रचयिता का नाम है–**

(अ) विद्यानिवास मिश्र (ब) विद्याधर मातेले

(स) विद्यापति (द) विद्याधर तिवारी।

उत्तर– (अ) विद्यानिवास मिश्र।

(3) विद्यानिवास मिश्र कौन से निबंधकार हैं?

(अ) ललित निबंधकार (ब) व्यंग्य निबंधकार
(स) समीक्षा निबंधकार (द) आलेख निबंधकार।

उत्तर– (अ) ललित निबंधकार।

(4) विद्यानिवास मिश्र का उपनाम है–

(अ) मुकुलानन्द (ब) भ्रमरानन्द
(स) मुक्तानन्द (द) अतुलानन्द।

उत्तर– (ब) भ्रमरानन्द।

(5) विद्यानिवास मिश्र निबंधकार के अलावा .... भी हैं।

(अ) कथाकार (ब) कवि
(स) कहानीकार (द) उपन्यासकार।

उत्तर– (ब) कवि।

(6) विद्यानिवास मिश्र का पहला निबंध संग्रह कब प्रकाशित हुआ?

(अ) 1970 में (ब) 1976 में
(स) 1980 में (द) 1985 में।

उत्तर– (ब) 1976 में।

(7) विद्यानिवास मिश्र ने ललित निबंध लेखन का कब से प्रारंभ किया?

(अ) 1940 से (ब) 1950 से
(स) 1956 से (द) 1960 से।

उत्तर– (स) 1956 से।

(8) विद्यानिवास मिश्र का जन्म कब हुआ था?

(अ) 30 जनवरी, 1927 (ब) 14 जनवरी, 1926
(स) 28 जनवरी, 1926 (द) 20 जनवरी, 1930

उत्तर– (स) 28 जनवरी, 1926

(9) विद्यानिवास मिश्र ने एम.ए. की पढ़ाई कहाँ की थी?

(अ) बनारस (ब) इलाहाबाद
(स) गोरखपुर (द) कानपुर।

उत्तर– (ब) इलाहाबाद।

(10) विद्यानिवास मिश्र का जन्म कहाँ हुआ था?

(अ) इलाहाबाद में (ब) कानपुर में
(स) हैदराबाद में (द) गोरखपुर में।

उत्तर– (द) गोरखपुर में।

(11) विद्यानिवास मिश्र का निधन कब हुआ?

(अ) 10 जनवरी, 2004 (ब) 25 फरवरी, 2005
(स) 14 फरवरी, 2005 (द) 28 फरवरी, 2007

उत्तर– (स) 14 फरवरी, 2005

(12) विद्यानिवास मिश्र कौनसे समाचारपत्र के सम्पादक रहे?

(अ) हिन्दुस्तान (ब) दैनिक भास्कर
(स) नवभारत टाइम्स (द) टाइम्स ऑफ इंडिया।

उत्तर– (स) नवभारत टाइम्स।

(13) विद्यानिवास मिश्र मर्मज्ञ .... थे।

(अ) प्राच्य संस्कृति के (ब) ग्रामीण संस्कृति के
(स) क्रीड़ा संस्कृति के (द) कला एवं भारतीय संस्कृति के।

उत्तर– (द) कला एवं भारतीय संस्कृति के।

(14) 'आंगन का पंछी' कौनसी भाषा में लिखा गया है?

(अ) फारसी में (ब) हिन्दी में
(स) संस्कृत में (द) उर्दू में।

उत्तर– (ब) हिन्दी में।

(15) गौरैया द्वारा घोंसला नहीं बनाये जाने वाले घर को क्या कहा जाता है?

(अ) उस घर को शांत माना जात है
(ब) उस घर को बड़ा भाग्यशाली माना जाता है
(स) उस घर को श्रापित माना जाता है
(द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (स) उस घर को श्रापित माना जाता है।

(16) इस वाक्य को पूरा कीजिए 'गौरैया गगन के पंछी नहीं .... के पंछी हैं?'

(अ) तालाब (ब) आंगन
(स) पेड़ (द) पाताल।

उत्तर– (ब) आंगन।

(17) 'आंगन के पंछी' पाठ में विद्यानिवास मिश्र ने किस पक्षी को पक्षियों का ब्राह्मण बताया है?

(अ) गौरैया को (ब) चिड़िया को
(स) चील को (द) कोयल को।

उत्तर– (अ) गौरैया को।

(18) 'चीन में एक नया पुरुषार्थ जागा है' यह खबर लेखक को कैसे मिली?

(अ) टीवी समाचार से (ब) अखबार में पढ़ा
(स) रेडियो समाचार से (द) चीन जाकर स्वयं देखा।

उत्तर– (ब) अखबार में पढ़ा।

(19) विद्यानिवास मिश्र ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा कहाँ से पूर्ण की?

(अ) बनारस से (ब) गोरखपुर से
(स) इलाहाबाद से (द) लखनऊ से।

उत्तर– (ब) गोरखपुर से।

(20) गाँव में कहा जाता है कि जिस घर में गौरैया अपना घोंसला नहीं बनाती वह क्या हो जाता है?

(अ) परेशान (ब) सुनसान
(स) निवंश (द) वीरान।

उत्तर– (स) निवंश।

(21) सन् 1952 में विद्यानिवास मिश्र द्वारा रचित पहले निबंध का शीर्षक क्या था?

(अ) पीपल के बहाने (ब) माटी के शहर
(स) गाँव का मन (द) चितवन की छांव।

उत्तर– (द) चितवन की छांव।

(22) 'आंगन के पंछी' पाठ में गौरैयों से क्या सीखा जा सकता है?

(अ) चहचहाना/शोरगुल करना (ब) फसलें बौंद करने का तरीका
(स) घोंसला बनाने का तरीका (द) स्वतंत्रता और खुश रहना।

उत्तर– (द) स्वतंत्रता और खुश रहना।

(23) गौरैया को पूज्य और उनको मारना पाप क्यों माना जाता है?

(अ) जन विश्वास के कारण (ब) धार्मिक विश्वास के कारण
(स) अंध विश्वास के कारण (द) इनमें से सभी।

उत्तर– (अ) जन विश्वास के कारण।

(24) इनमें से कौनसी विद्यानिवास मिश्र की रचना नहीं है?

(अ) नेताजी का चश्मा (ब) गाँव का मन
(स) परम्परा बंधन नहीं (द) कदम की फूली डाल।

उत्तर– (अ) नेताजी का चश्मा।

(25) गौरैया को मारना .... समझा जाता है।

(अ) वीरता (ब) महापाप
(स) दुःसाहस (द) साहस।

उत्तर– (ब) महापाप।

(26) चीन में गौरैया के वध के लिए किस चीज का उपयोग किया जा रहा है?

(अ) बंदूक की गोली का (ब) लाठी और डंडे का
(स) ईंट और पत्थर का (द) पक्षी पकड़ने वाले जाल का।

त्तर– (अ) बंदूक की गोली का।

(27) आंगन में बच्चों की किलकारियों की तुलना किस आवाज से की गई है?

(अ) तोते की आवाज से (ब) गौरैया की आवाज से
(स) कौए की आवाज से (द) रोने की आवाज से।

उत्तर– (ब) गौरैया की आवाज से।

(28) पाठ के आधार पर इनमें से किस देश ने गौरैया के वध करने की योजना बनाई थी?

(अ) चीन ने (ब) पाकिस्तान ने
(स) जापान ने (द) भारत ने।

उत्तर– (अ) चीन ने।

(29) 'जिन घरों में गौरैया अपना घोंसला नहीं बनाती वो घर .... हो जाते हैं।'

(अ) सम्पन्न (ब) मशहूर
(स) निर्वंश (द) खुशहाल।

उत्तर– (स) निर्वंश।

(30) सैनिक .... लेकर गौरेया का शिकार करने गये थे।

(अ) कटार (ब) तलवार
(स) बन्दूक (द) हथियार।

उत्तर– (स) बन्दूक।

(31) विद्यानिवास मिश्र के अनुसार हमारे देश में कैसे लोग रहते हैं?

(अ) सयाने (ब) बौने
(स) लम्बे (द) मूर्ख।

उत्तर– (अ) सयाने।

(32) आंगन में कौन–सा पौधा अवश्य मिलता है?

(अ) मनी प्लांट का पौधा (ब) तुलसी का पौधा
(स) नीम का पौधा (द) पीपल का पौधा।

उत्तर– (ब) तुलसी का पौधा।

(33) 'आंगन के पंछी' पाठ में लेखक ने गौरैया की तुलना किस पौधे से की है?

(अ) तुलसी (ब) गेंदा
(स) चमेली (द) गुलाब।

उत्तर– (अ) तुलसी।

(2)

सत्य के साथ मेरे प्रयोग

(महात्मा गाँधी)

लघु उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न–1. गाँधी जी दूसरे लड़कों की पट्टी में देखकर चोरी (नकल) करने को उचित क्यों नहीं मानते थे?

उत्तर– गाँधी जी बचपन में बहुत ही शर्मीले थे। वे पाठशाला में अपने काम से काम ही रखते थे। अपनी आत्म कथा में गाँधी जी लिखते हैं कि मैं पाठशाला घंटी बजने के समय पहुँचता और पाठशाला के बन्द होते ही घर भागता। बालक गांधी में सत्य एवं ईमानदारी के

संस्कार बचपने से ही ओतप्रोत थे। किसी भी परिस्थिति में वे इनसे मुँह नहीं मोड़ते थे। इसलिये किसी दूसरे की पट्टी (स्लेट) से नकल करना गाँधी जी को चोरी तथा असत्यता प्रतीत हुई। गाँधी जी के अनुसार, मैंने यह माना था कि शिक्षक तो यह देख रहे हैं कि हम एक–दूसरे की पट्टी में देखकर चोरी न करें। सब लड़कों के पाँचों शब्द सही निकले और अकेला मैं बेवकूफ ठहरा। शिक्षकों ने मुझे मेरी बेवकूफी बाद में समझायी, लेकिन मेरे मन पर उनके समझाने का कोई असर न हुआ। मैं दूसरे लड़कों की पट्टी में देखकर चोरी करना कभी न सीख सका।

प्रश्न–2. गाँधी जी को बचपन में ही राम–नाम जपने की प्रेरणा किसने और क्यों दी?

उत्तर– 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' नामक आत्म कथा में गाँधी जी लिखते हैं– 'मुझे भूत–प्रेत आदि का डर लगता था। रम्भा (मेरी आया) ने मुझे समझाया कि इसकी दवा राम–नाम है। मुझे तो राम–नाम से भी अधिक श्रद्धा रम्भा पर थी, इसलिये बचपन में भूत–प्रेतादि के डर से बचने के लिये मैंने राम–नाम जपना शुरू किया। यह जप अधिक समय तक नहीं चला। पर बचपन में जो बीज मुझमें बोया गया, वह नष्ट नहीं हुआ। आज राम–नाम मेरे लिये अमोघ शक्ति है। मैं मानता हूँ कि उसके मूल से रम्भा बाई का बोया हुआ बीज है।'

प्रश्न–3. विलायत जाने पर गाँधी जी ने माँ के समक्ष क्या प्रतिज्ञा की थी?

उत्तर– गाँधी जी ने विलायत जाने के पूर्व अपनी माँ के समक्ष माँस, मदिरा तथा स्त्री–संग से दूर रहने की प्रतिज्ञा की। तब माताजी ने उन्हें विलायत (विदेश) जाने की आज्ञा दी।

प्रश्न–4 सभ्य कहलाने के लिये गाँधी जी ने विलायत में क्या–क्या प्रयत्न किये?

उत्तर– गाँधी जी ने विलायत में सभ्य कहलाने व दिखने हेतु 'आर्मी और नेवी' स्टोर में अपने कपड़े सिलवाये। उन्नीस शिलिंग की (उस जमाने के हिसाब से तो यह कीमत अधिक ही कही जायेगी) 'चिमनी' टोपी सिर पर पहनी। उन्होंने दोनों जेबों में लटकाने लायक सोने की एक बढ़िया चेन खरीदी। बँधी–बँधायी टाई पहनना शिष्टाचार में शुमार न था, इसलिये उन्होंने टाई बाँधने की कला सीखी। उनके बाल मुलायम नहीं थे, इसलिये उन्हें अच्छी तरह मुड़े हुये रखने के उद्देश्य से ब्रश करने में अधिक समय लगाते थे। गाँधी जी ने वहाँ नृत्य सीखने का निश्चय किया। वायेलीन बजाना सीखा इसके लिये तीन पौण्ड वायोलिन खरीदने में गँवाये और कुछ उसे बजाना सीखने हेतु भी खर्च किये। भाषण करना सीखने के लिये एक तीसरे शिक्षक का घर खोजा। उन्हें भी एक गिन्नी भेंट की। बेल की 'स्टैण्डर्ड एलोक्युशनिष्ट' नामक पुस्तक भी खरीदी।

प्रश्न–5. विलायत में 'सादा जीवन' बिताने से गाँधी जी को व्यक्तिगत रूप से क्या लाभ ?

उत्तर– गाँधी जी ने विलायत में पुनः परीक्षा देने की तैयारी के साथ ही रहन–सहन में एक सादगी लाने का प्रयास शुरू किया। वे लिखते हैं कि सादगी से मेरा जीवन नीरस न होकर उल्टे, इन फेर–फारों के कारण मेरी आन्तरिक और बाह्य स्थिति के बीच एकता पैदा हुई, कौटुम्बिक स्थिति के साथ मेरी रहन–सहन का मेल बैठा, जीवन अधिक सारमय बना और मेरे आत्मानन्द का पार न रहा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न–1. वाल–विवाह के विषय में गाँधी जी ने किन–किन कुरीतियों की ओर संकेत किया है? वर्णन कीजिये।

उत्तर– अपनी आत्म कथा में गाँधी जी लिखते हैं– हिन्दू–संस्कारों में विवाह संस्कार की बहुत महत्ता है। वर–कन्या के माता–पिता विवाह में खूब धन लुटाते हैं और व्यर्थ समय भी लुटाते हैं। विवाह की महीनों पहले से तैयारियाँ होती हैं। घर में सबके कपड़े बनते हैं, गहने बनते हैं, जाति–भोज के खर्च के हिसाब बनते हैं, पकवानों के प्रकारों की होड़ लग जाती है। औरतें, गला हो चाहे न हो, तो भी गाने गा–गाकर अपनी आवाज बैठा लेती हैं, बीमार भी पड़ती हैं, पड़ोसियों की शांति भंग होती है। बेचारे पड़ोसी भी अपने यहाँ विवाह का प्रसंग आने पर यही सब करते होते हैं, इसलिये वे शोरगुल, जूठन तथा दूसरी गन्दगियाँ, सब कुछ उदासीन भाव से सह लेते हैं।

प्रश्न–2. गांधी जी ने अन्नाहार से होने वाले जिन लाभों का उल्लेख किया है, उन्हें सार–रूप में बताइये।

उत्तर– गाँधी जी लिखते हैं कि मनुष्य को पशु–पक्षियों पर जो प्रभुत्व प्राप्त हुआ है, वह उन्हें मारकर खाने के लिये नहीं, बल्कि उनकी रक्षा के लिये है, अथवा जिस प्रकार मनुष्य एक–दूसरे का उपयोग करते हैं, पर एक–दूसरे को खाते नहीं, उसी प्रकार पशु–पक्षी भी उपयोग के लिये हैं, खाने के लिये नहीं। विज्ञान की दृष्टि से और मनुष्य की शरीर–रचना को देखकर कई लोग इस परिणाम पर पहुँचे कि मनुष्य को भोजन पकाने की आवश्यकता ही नहीं है, उसे केवल वनपक्व फल ही खाने चाहिये तथा दूध उसे केवल माता का ही पीना चाहिये। दाँत निकलने के बाद उसको चबा सकने योग्य खुराक ही लेनी चाहिये। वैद्यक (डॉक्टर) दृष्टि से गाँधी जी ने मिर्च–मसालों का त्याग सुझाया और व्यावहारिक अथवा आर्थिक दृष्टि से उन्होंने बताया कि कम से कम खर्च वाली खुराक़ केवल अन्नाहार ही हो सकती है।

प्रश्न–3. 'सत्य के पुजारी' के लिये मौन का महत्व क्या है? समझाइये।

उत्तर– सत्य के प्रत्येक पुजारी के लिये मौन रखना आवश्यक है। मनुष्य जाने–अनजाने भी प्रायः अतिशयोक्ति करता है, अथवा जो कहने योग्य है उसे छिपाता है, या उसे दूसरे ढंग से कहता है। ऐसे संकटों से बचने के लिये भी व्यक्ति का मितभाषी होना आवश्यक है। कम बोलने वाला बिना विचारे नहीं बोलेगा, वह अपने प्रत्येक शब्द को तौलेगा फिर बोलेगा। अक्सर मनुष्य बोलने के लिये अधीर हो जाता है और फिर वह कुछ भी कह उठता है जो उसे नहीं कहना चाहिये। इसलिये व्यक्ति पहले जो बात कहनी है उस बात पर विचार करे, फिर बोले।

प्रश्न–4. 'सत्य और अहिंसा' के विषय में गांधी जी के विचारों को संक्षेप में बताइये।

उत्तर– गाँधी जी लिखते हैं कि सत्य को मैंने जिस रूप में देखा है, जिस मार्ग से देखा है, उसी तरह प्रकट करने का मैंने सतत् प्रयत्न किया है और पाठकों के लिये उसका वर्णन करके चित्त में शांति का अनुभव किया है, क्योंकि मैंने आशा यह रखी है कि इससे पाठकों में सत्य और अहिंसा के प्रति अधिक आस्था उत्पन्न होगी। सत्य के प्रयोग करते हुये मैंने आनन्द लूटा है और आज भी लूट रहा हूँ।

सत्य से भिन्न कोई परमेश्वर है, ऐसा मैंने कभी अनुभव नहीं किया। यदि इन प्रकरणों के पन्ने-पन्ने से यह प्रतीति न हुई हो कि सत्यमय बनने का एकमात्र मार्ग अहिंसा ही है, तो मैं इस प्रयत्न को व्यर्थ समझता हूँ।

ऐसा व्यापक सत्य-नारायण के प्रत्यक्ष दर्शन के लिये जीवमात्र के प्रति आत्मवत् प्रेम की परम आवश्यकता है और जो मनुष्य ऐसा करना चाहता है, वह जीवन के किसी भी क्षेत्र से बाहर नहीं रह सकता। यही कारण है कि सत्य की मेरी पूँजी मुझे राजनीति में खींच लायी है। जो मनुष्य यह कहता है कि धर्म का राजनीति के साथ कोई संबंध नहीं है, वह धर्म को नहीं जानता, ऐसा कहने में मुझे संकोच नहीं होता और न ऐसा कहने में मैं अविनय करता हूँ।

प्रश्न-5. गांधी जी ने जीव-मात्र के एक्य के लिये आत्म-शुद्धि को प्रधानता क्यों दी है? ट कीजिये।

उत्तर- गाँधी जी लिखते हैं कि बिना आत्मशुद्धि के जीव-मात्र के साथ ऐक्य सध ही नहीं ता। आत्म-शुद्धि के बिना अहिंसा-धर्म का पालन सर्वथा असंभव है। अशुद्ध आत्मा परमात्मा के दर्शन करने में असमर्थ है। अतएव जीवन-मार्ग के सभी क्षेत्रों में आत्म शुद्धि की आवश्यकता है। यह शुद्धि साध्य है, क्योंकि व्यष्टि और समष्टि के बीच ऐसा निकट का संबंध है कि एक की शुद्धि अनेकों की शुद्धि के बराबर हो जाती है और व्यक्तिगत प्रयत्न करने की शक्ति तो सत्य-नारायण (भगवान) ने सबको जन्म से दी है।

लेकिन मैं प्रतिक्षण यह अनुभव करता हूँ कि शुद्धि का यह मार्ग विकट है। शुद्ध बनने का अर्थ है मन से, वचन से और काया से निर्विकार बनना, राग-द्वेषादि से रहित होना। इस निर्विकारता तक पहुँचने का प्रतिक्षण प्रयत्न करते हुये भी मैं पहुँच नहीं पाया हूँ, इसलिये लोगों की स्तुति मुझे भुलावे में नहीं डाल सकती। उलटे, यह स्तुति प्रायः तीव्र वेदना पहुँचाती है। मन के विकारों को जीतना संसार को शस्त्र-युद्ध से जीतने की अपेक्षा मुझे अधिक कठिन मालूम होता है। हिन्दुस्तान आने के बाद भी मैं अपने भीतर छिपे हुये विकारों को देख सकता हूँ, शर्मिंदा हुआ हूँ, किन्तु हारा नहीं हूँ। सत्य के प्रयोग करते हुये मैंने आनन्द लूटा है और आज भी लूट रहा हूँ। लेकिन मैं जानता हूँ कि अभी मुझे विकट मार्ग तय करना है। इसके लिये मुझे शून्यवत् बनना है। मनुष्य जब तक स्वेच्छा से अपने को सबसे नीचे नहीं रखता, तब तक उसे मुक्ति नहीं मिलती। अहिंसा नम्रता की पराकाष्ठा है और यह अनुभव-सिद्ध बात है कि इस नम्रता के बिना मुक्ति कभी नहीं मिलती। ऐसी नम्रता के लिये प्रार्थना करते हुये और उसके लिये संसार की सहायता की याचना करता हूँ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(1) महात्मा गाँधी का पूरा नाम क्या था?
(अ) महादेव प्रसाद गाँधी (ब) मोहनदास करमचन्द गाँधी
(स) प्यारेलाल गाँधी (द) मगनलाल गाँधी।

उत्तर- (ब) मोहनदास करमचन्द गाँधी।

(2) महात्मा गाँधी का जन्म .... हुआ था।
(अ) जूनागढ़ में (ब) पोरबंदर में
(स) सूरत में (द) राजकोट में।

उत्तर- (ब) पोरबंदर में।

(3) महात्मा गाँधी का जन्म कब हुआ?
(अ) 2 अक्टूबर, 1862 (ब) 2 अक्टूबर, 1867
(स) 2 अक्टूबर, 1869 (द) 2 अक्टूबर, 1892

उत्तर- (स) 2 अक्टूबर, 1869

(4) गाँधी जी ने 'सत्य के प्रयोग' आत्मकथा लिखना कब प्रारंभ किया था?
(अ) 15 नवम्बर, 1925 (ब) 29 नवम्बर, 1925
(स) 20 दिसम्बर, 1925 (द) 25 दिसम्बर, 1925

उत्तर- (ब) 29 नवम्बर, 1925

(5) महात्मा गाँधी के राजनीतिक गुरु कौन थे?
(अ) रवीन्द्रनाथ टैगोर (ब) गोपाल कृष्ण गोखले
(स) स्वामी विवेकानन्द (द) रामकृष्ण परमहंस।

उत्तर- (ब) गोपाल कृष्ण गोखले।

(6) 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' पुस्तक के लेखक कौन हैं?
(अ) महात्मा गाँधी (ब) जवाहर लाल नेहरू
(स) रवीन्द्रनाथ टैगोर (द) हरिवंशलाल बच्चन।

उत्तर- (अ) महात्मा गाँधी।

(7) जाति-पाँति तथा अमीरी-गरीबी का भेदभाव भुलाकर एक ही पंक्ति में बैठकर भोजन करने को कहते हैं-
(अ) पंगत (ब) संगत
(स) भण्डार (द) लंगर।

उत्तर- (द) लंगर।

(8) पिताजी के द्वारा क्रय की गई किस पुस्तक पर गाँधी जी की दृष्टि बचपन में पड़ी थी?
(अ) रामायण (ब) गीता
(स) श्रवण पितृ-भक्ति नाटक (द) श्रीमदभागवत् पुराण।

उत्तर- (स) श्रवण पितृ-भक्ति नाटक।

(9) 'ऐसे जियो जैसे कि तुम कल मरने वाले हो, ऐसे सीखो कि तुम हमेशा के लिए जीने वाले हो।' यह कथन किसका है?
(अ) सुभाष चन्द्र बोस (ब) महात्मा गाँधी
(स) लाला लाजपत राय (द) सरदार पटेल।

उत्तर- (ब) महात्मा गाँधी।

(10) महात्मा गाँधी का जन्मस्थल कहाँ है?
(अ) अहमदाबाद (ब) गाँधी नगर

(स) सूरत (द) पोरबंदर।

उत्तर– (द) पोरबंदर।

(11) किस नाटक को देखकर गाँधी जी ने बचपन में सत्य–पालन करने का निश्चय किया था?

(अ) श्रवण पितृ–भक्ति नाटक (ब) भक्त प्रहलाद
(स) हरिश्चन्द्र (द) अमर पुत्र ध्रुव।

उत्तर– (स) हरिश्चन्द्र।

(12) साबरमती आश्रम किस राज्य में स्थित है?

(अ) गुजरात में (ब) महाराष्ट्र में
(स) उत्तरप्रदेश मे (द) मध्यप्रदेश में।

उत्तर– (अ) गुजरात में।

(13) वर्धा आश्रम किस राज्य में स्थित है?

(अ) तमिलनाडु में (ब) राजस्थान में
(स) गुजरात में (द) महाराष्ट्र में।

उत्तर– (द) महाराष्ट्र में।

(14) गाँधी जी ने पहला सत्याग्रह कब किया?

(अ) सितम्बर 1890 में (ब) सितम्बर 1902 में
(स) सितम्बर 1906 में (द) सितम्बर 1912 में।

उत्तर– (स) सितम्बर 1906 में।

(15) महात्मा गाँधी द्वारा सन् 1920 में किस आन्दोलन की शुरूआत की गई थी?

(अ) सत्याग्रह आन्दोलन (ब) 'करो या मरो' आन्दोलन
(स) नमक आन्दोलन (द) असहयोग आन्दोलन।

उत्तर– (द) असहयोग आन्दोलन।

(16) गाँधी जी ने विवाह को लेकर किस प्रकार की निजी हानि होने की चर्चा की है?

(अ) एक साल व्यर्थ हो गया (ब) पढ़ाई छूट गई
(स) पढ़ाई में मन नहीं लगा (द) पिताजी की सेवा नहीं कर पाया।

उत्तर– (अ) एक साल व्यर्थ हो गया।

(17) गाँधी जी को किस भाषा में सीखने में अधिक रस आया?

(अ) गुजराती (ब) हिन्दी
(स) संस्कृत (द) अंग्रेजी।

उत्तर– (स) संस्कृत।

(18) गाँधी जी ने अपनी आत्मकथा किस भाषा में लिखी?

(अ) संस्कृत में (ब) हिन्दी में
(स) अंग्रेजी में (द) गुजराती में।

उत्तर– (द) गुजराती में।

(19) गाँधी जी की आत्मकथा का नाम है–

(अ) जर्नी ऑफ माय लाइफ (ब) विंग्स ऑफ फायर
(स) सत्य के साथ मेरे प्रयोग (द) अन्टू दि लास्ट।

उत्तर– (स) सत्य के साथ मेरे प्रयोग।

(20) गाँधी जी के मतानुसार किस गुण के बिना मुक्ति नहीं मिलती है?

(अ) सत्य के बिना (ब) मनजाप के बिना
(स) नम्रता के बिना
(द) भीतर छुपे हुये विकारों को जीतने के बिना।

उत्तर– (द) भीतर छुपे हुये विकारों को जीतने के बिना।

(21) महात्मा गाँधी को टाइम्स मैगजीन ने 'मैन ऑफ द ईयर' कब घोषित किया था?

(अ) 1930 में (ब) 1935 में
(स) 1936 में (द) 1939 में।

उत्तर– (अ) 1930 में।

(22) गाँधी जी के 'करो या मरो' नारे का सम्बन्ध किस आन्दोलन से है?

(अ) दांडी यात्रा (ब) भारत छोड़ो आन्दोलन
(स) असहयोग आन्दोलन (द) खिलाफत आन्दोलन।

उत्तर– (ब) भारत छोड़ो आन्दोलन।

(23) महात्मा गाँधी ने 'भारत छोड़ो आन्दोलन' कब चलाया?

(अ) 1940 में (ब) 1942 में
(स) 1947 में (द) 1949 में।

उत्तर– (ब) 1942 में।

(24) कौन–सा नारा महात्मा गाँधी द्वारा दिया गया है?

(अ) करो या मरो (ब) अहिंसा परमो धर्म
(स) तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा
(द) स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

उत्तर– (अ) करो या मरो।

(25) महात्मा गाँधी को राम–नाम जपने की प्रेरणा .... दी थी–

(अ) मांताजी ने (ब) मित्रों ने
(स) धाय रम्भा ने। (द) उनके गुरु ने।

उत्तर– (स) धाय रम्भा ने।

(26) महात्मा गाँधी ने अपना जीवन .... में चलाया था–

(अ) अविवेक के मार्ग (ब) विवेक के मार्ग
(स) असत्य के मार्ग (द) सत्य के मार्ग।

उत्तर– (द) सत्य के मार्ग।

(27) गाँधी जी को कौनसी उपाधि दी गई थी?

(अ) महात्मा (ब) महावीर

(स) दानी (द) पुण्यात्मा।

उत्तर– (अ) महात्मा।

(28) महात्मा गाँधी को 'बापू' सम्बोधन किसने दिया?

(अ) जवाहर लाल नेहरू (ब) रवीन्द्रनाथ टैगोर

(स) सुभाष चन्द्र बोस (द) सरदार पटेल।

उत्तर– (अ) जवाहर लाल नेहरू।

(29) गाँधी जी के पिता का नाम क्या था?

(अ) हीरा लाल गाँधी (ब) छविराम गाँधी

(स) करमचन्द गाँधी (द) मनोहर दास गाँधी।

उत्तर– (स) करमचन्द गाँधी।

(30) साबरमती आश्रम कहाँ पर स्थित है?

(अ) बड़ौदा में (ब) सूरत में

(स) अहमदाबाद में (द) गाँधी नगर में।

उत्तर– (स) अहमदाबाद में।

(31) महात्मा गाँधी को ''राष्ट्रपिता'' किसने कहा?

(अ) जवाहर लाल नेहरू (ब) सुभाष चन्द्र बोस

(स) बाल गंगाधर तिलक (द) रवीन्द्रनाथ टैगोर।

उत्तर– (ब) सुभाष चन्द्र बोस।

(32) महात्मा गाँधी ने 'अजातशत्रु' किसे कहा था?

(अ) लाला लाजपत राय (ब) बाल गंगाधर तिलक

(स) सुभाष चन्द्र बोस (द) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

उत्तर– (द) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

(33) भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान महात्मा गाँधी को बंदी बनाकर कहाँ रखा गया था?

(अ) लाल किले में (ब) अहमदाबाद जेल में

(स) तिहाड़ जेल में (द) आगा खाँ पैलेस में।

उत्तर– (द) आगा खाँ पैलेस में।

(34) महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका में कितने वर्ष रहे?

(अ) 10 वर्ष (ब) 18 वर्ष

(स) 20 वर्ष (द) 21 वर्ष।

उत्तर– (द) 21 वर्ष।

(35) ऑल इंडिया खिलाफत कॉन्फ्रेंस का अध्यक्ष किसे चुना गया था?

(अ) महात्मा गाँधी को (ब) सर सैयद अहमद खाँ को

(स) लाला लाजपत राय को (द) राजेन्द्र प्रसाद को।

उत्तर– (अ) महात्मा गाँधी को।

(36) 'सत्य के प्रयोग' है–

(अ) निबंध (ब) यात्रा संस्मरण

(स) आत्मकथा (द) जीवनी।

उत्तर– (स) आत्मकथा।

(37) महात्मा गाँधी के मतानुसार किस गुण के बिना मुक्ति नहीं मिलती है?

(अ) सत्य के बिना (ब) मंत्र जाप के बिना

(स) नम्रता के बिना (द) मंदिर में जाए बिना।

उत्तर– (स) नम्रता के बिना।

(38) महात्मा गाँधी को किस भाषा को सीखने में रूचि थी?

(अ) अंग्रेजी (ब) संस्कृत

(स) हिन्दी (द) गुजराती।

उत्तर– (ब) संस्कृत।

(39) गाँधी जी ने कौनसे नाटक को देखकर बचपन में ही सत्य का पालन करने का निश्चय किया था?

(अ) अमरपुत्र ध्रुव (ब) हरिश्चन्द्र

(स) भक्त प्रहलाद (द) श्रवण पितृ भक्ति नाटक।

उत्तर– (ब) हरिश्चन्द्र।

(40) पिताजी के द्वारा खरीदी गई कौनसी पुस्तक पर गाँधी जी की दृष्टि बचपन में पड़ी थी–

(अ) गीता (ब) श्रीमदभागवत पुराण

(स) रामायण (द) महाभारत।

उत्तर– (ब) श्रीमदभागवत पुराण।

(41) महात्मा गाँधी के अनुसार हमारे जीवन का प्राण–तत्व क्या है?

(अ) सत्य (ब) काम

(स) मोह (द) इच्छाएँ।

उत्तर– (अ) सत्य।

(42) महात्मा गाँधी ने अपनी 'सत्य के प्रयोग' पुस्तक का .... नाम रखा।

(अ) आत्मा (ब) परमात्मा

(स) लघुकथा (द) आत्मकथा।

उत्तर– (द) आत्मकथा।

(43) गाँधी जी के अनुसार सत्य तक पहुँचने के लिए .... आवश्यक है–

(अ) आत्मनिर्भर होना (ब) अहिंसा

(स) विनम्र होना (द) आत्मज्ञानी होना।

उत्तर– (ब) अहिंसा।

(44) महात्मा गांधी की 'सत्य के प्रयोग' पुस्तक के आधार पर सत्य व प्रेम से .... जीता जा सकता है।

(अ) जग को (ब) शत्रु को
(स) जमीन को (द) मुकदमे को।
उत्तर– (अ) जग को।

(45) गाँधी जी के अनुसार हमें कर्तव्य, सत्य व भावना को कहाँ अपनाना चाहिए?
(अ) समाज में (ब) जीवन में
(स) कचहरी में (द) परिवार में।
उत्तर– (ब) जीवन में।

(46) गाँधी जी के अनुसार सत्य कितने प्रकार का होता है?
(अ) दो (ब) तीन
(स) चार (द) पाँच।
उत्तर– (अ) दो।

(47) 'सत्य के प्रयोग' किसकी रचना है?
(अ) लालबहादुर शास्त्री (ब) जवाहरलाल नेहरू
(स) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (द) महात्मा गाँधी।
उत्तर– (द) महात्मा गाँधी।

(48) गाँधी जी के अनुसार दो प्रकार के सत्य कौन से हैं?
(अ) प्रायोगिक–अप्रायोगिक (ब) चलन–प्रचलन
(स) व्यावहारिक–वास्तविक (द) उपरोक्त सभी।
उत्तर– (स) व्यावहारिक–वास्तविक।

(49) गाँधी जी की हत्या किसने की थी?
(अ) नाथूसिंह गोडसे ने (ब) छविराम गोडसे ने
(स) सीताराम गोडसे ने (द) नाथूराम गोडसे ने।
उत्तर– (द) नाथूराम गोडसे ने।

(50) शहीद दिवस कब मनाया जाता है?
(अ) 27 जनवरी को (ब) 30 जनवरी को
(स) 14 फरवरी को (द) 30 अक्टूबर को।
उत्तर– (ब) 30 जनवरी को।

(51) गाँधी जी को महात्मा की उपाधि किसने दी थी?
(अ) लालबहादुर शास्त्री ने (ब) रविन्द्रनाथ टैगोर ने
(स) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने (द) जवाहरलाल नेहरू ने।
उत्तर– (ब) रविन्द्रनाथ टैगोर ने।

(52) महात्मा गाँधी का निधन कब हुआ?
(अ) 5 जनवरी, 1930 (ब) 10 जनवरी, 1935
(स) 15 जनवरी, 1940 (द) 30 जनवरी, 1948
उत्तर– (द) 30 जनवरी, 1948

(3)

विश्व के प्रमुख धर्म एवं महत्वपूर्ण विशेषतायें

(1)

हिन्दू धर्म

लघु एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

प्रश्न–1. सत्य का नैतिक स्वरूप क्या है?

उत्तर– नैतिक गुणों में सत्य का सर्वोपरि स्थान है। महात्मा गाँधी तो सत्य को ही ईश्वर मानते थे। उनके मत में जो सत्य बोलते हैं, वे ही ईश्वर की सच्ची पूजा करते हैं। 'सत्यमेव जयते' अर्थात् सत्य की ही विजय होती है। संभव है कि सत्य का मार्ग कंकरीला लगे, किन्तु झूठ के राजमार्ग पर चलने से अच्छा है, सत्य के मार्ग पर चलना। सत्य के इस गुण को कुरान, बाइबिल, गुरुग्रंथ साहब, जैन धर्म और बौद्ध धर्म में स्वीकार किया गया है। अनेक महापुरुषों ने सत्य के बल पर ही उच्च स्थान पाया है। सत्य को वाणी का तप कहा गया है।

प्रश्न–2. प्रेम और श्रद्धा में अन्तर क्या है?

उत्तर– प्रेम चिरस्थायी मानवीय गुण है। क्षण–क्षण में घटने–बढ़ने वाला प्रेम सच्चा प्रेम नहीं होता। सच्चे प्रेम में समर्पण की झलक मिलती है। प्रेम विश्व की सबसे बड़ी शक्ति है। श्रद्धा से आशय है– ईश्वर, गुरुजन, श्रेष्ठजनों के प्रति सच्चा प्रेम, आदर–भाव, सच्चा विश्वास, सच्ची निष्ठा प्रदर्शित करना। श्रद्धा कार्य ही मनुष्य की सफलता की कुंजी है।

प्रश्न–3. क्षमा को दैवीय गुण क्यों कहा गया है?

उत्तर– क्षमाशीलता– कहा जाता है, मानव गलतियों का पुतला है। उसे क्षमा करना एक दैवीय गुण है। विश्व के महान पुरुषों ने इसी गुण के कारण शत्रुओं के साथ भी प्रेम का व्यवहार किया है। क्षमा भावना दूसरों के प्रति प्रेम और अहिंसा प्रकट करने का एक ही रूप है। वास्तव में देखा जाये तो हर व्यक्ति में कुछ–न–कुछ अच्छाई तो अवश्य ही रहती है, चाहे वह कितना भी बुरा क्यों न हो। अतः जिसने हमें हानि पहुँचाई है, उसे क्षमा कर उसे अच्छाई को जागृत करने का अवसर देना ही क्षमा है।

प्रश्न–4. मातृशक्ति के सम्मान का विशेष महत्व क्या है?

उत्तर– भारतीय दर्शन, संस्कृति और परम्परा में स्त्री का स्थान पुरुषों से भी ऊँचा है। नारी देवी है, माँ है, बहन है, पुत्री भी है। इसकी पूजा देवताओं ने भी की है। कहा भी गया है, जहाँ स्त्री का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का वास होता है– 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।' अतः हमें भी नारी का सम्मान करना चाहिये। माता कभी कुमाता नहीं हो सकती।

श्रवण अपने अंधे माता–पिता को डोली में बिठाकर उनकी इच्छानुसार तीर्थयात्रा कराता रहा है, इसलिये उसका नाम आज भी अमर है। शिवाजी के व्यक्तित्व को गढ़ने में उनकी

जीजा बाई की प्रमुख भूमिका थी। महात्मा गाँधी ने भी विदेश जाने से पूर्व माँ के समक्ष प्रतिज्ञा की थी कि वे इंग्लैण्ड जाकर माँस, मदिरा का सेवन नहीं करेंगे।

प्रश्न–5. समाज–सेवा का वास्तविक स्वरूप क्या है?

उत्तर– नैतिकता का भाव जिनके अंदर कूट–कूटकर भरा हो, वे ही समाज–सेवा के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। जो फल अनेक प्रकार की तपस्याओं, साधनाओं, उपासनाओं से प्राप्त नहीं हो पाता है, वह सेवा द्वारा सहज ही प्राप्त हो जाता है। हमारे ऋषि, मुनियों, अवतारों, पुरुषों का जीवन–मंत्र सेवा ही रहा है। 'नर सेवा नारायण सेवा' उनका ध्येय वाक्य रहा है।

सेवा–कार्य हेतु किसी निवेश, योग्यता या धन की आवश्यकता नहीं पड़ती। आवश्यकता है, तो केवल प्रबल इच्छा की। कर्त्तव्यपरायणता का दूसरा नाम ही समाज–सेवा है। समाज–सेवा का प्रारंभ माता–पिता की सेवा से ही किया जाना चाहिये। वहीं से सेवा का पाठ पढ़कर व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र–सेवा का व्रत ले सकता है। अपने घर में दीपक जलाकर ही दूसरे के घर में रोशनी करने की चिंता करनी चाहिये। यहीं से सेवा–भावना का विस्तार होता है। घर हो या बाहर, विद्यालय हो या बाजार सेवा तो प्रत्येक स्थान पर खड़ी होकर हमें पुकारती है। मानव–सेवा ही सच्ची ईश्वर–पूजा है। कभी–कभी दैवीय–प्रकोप और अप्रत्याशित आपदायें आ जाती हैं, जिससे हजारों देशवासी संकट में पड़ जाते हैं। ऐसे समय में हमें राहत–कार्यों में तन, मन और धन से सहयोग करना चाहिये।

'इस मिट्टी से तिलक करो, यह धरती है बलिदान की।' इन भावनाओं के साथ हजारों बार राष्ट्र–भक्तों ने अपने शीश चढ़ाये हैं। सेवा का भाव केवल समाज तथा राष्ट्र तक ही सीमित नहीं रहकर प्रत्येक मानव, पशु–पक्षी, प्रकृति, संस्कृति सभी के प्रति होना चाहिये। सेवा का यही भाव 'विश्वबंधुत्व' की भावना को पुष्ट करता है।

प्रश्न–6. सभी धर्मों के मध्य नैतिकता किस प्रकार एक सेतु का काम करती है?

उत्तर– हिन्दू जीवन–पद्धति के इन नैतिक मूल्यों से ही आज हम विश्व के सामने 'अनेकता में एकता' के सिद्धान्तों को व्यवहार में ढालकर प्रस्तुत करते आ रहे हैं। नैतिकता एक भाव है, जिसका संबंध धर्म और अध्यात्म से है। इस दृष्टि से हमें सभी धर्मों द्वारा प्रतिपादित नैतिक प्रतिमानों को ठीक से आत्मसात् करना होगा।

कहने का आशय यह है कि हिन्दू–धर्म ने नैतिकता को काल–निरपेक्ष माना जबकि मूल्य का भाव काल–सापेक्ष है। अतः नैतिक भावना ही सभी धर्मों में व्याप्त नैतिक–शिक्षा की साझा पूंजी है। ध्यान रहे, नैतिकता तो धर्म के बिना भी रही सकती है किन्तु कोई धर्म नैतिकता के बिना नहीं रह सकता। सभी धर्मों के मध्य नैतिकता एक सेतु का काम करती है।

(2)

जैन धर्म

लघु एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

प्रश्न–1. 'जिन' शब्द से क्या आशय है?

उत्तर– जैन धर्म हमारे जीवन मे अहिंसा और तपश्चर्या की अत्यन्त गहराई से प्रतिष्ठा करने वाला धर्म है, जो भारत में शताब्दियों पूर्व से विद्यमान है। जैन धर्म में कुल चौबीस तीर्थंकर हुये हैं, जिन्होंने श्रमण परम्परा का प्रवर्तन किया है। चौबीसवें तीर्थंकर भगवान वर्धमान महावीर आज से 2600 वर्ष पूर्व हुये थे। उन्होंने अपने श्रम और कठोर तप से कैवल्य ज्ञान को प्राप्त किया। उनकी ध्यान साधना इतनी गहरी थी कि उन्होंने उसके प्रभाव से अपने पूर्वजन्म के समस्त कर्म–बंधनों को काट दिया और 'जिन' कहलाये जिससे इस धर्म का नामकरण जैन धर्म हुआ है। समस्त इन्द्रियों को जीत लेने के कारण ही वर्धमान को 'जिन' कहा गया।

प्रश्न–2. जैन धर्म शाकाहार पर क्यों बल देता है?

उत्तर– अहिंसा का अर्थ है जीव–मात्र के जीवनाधिकार की रक्षा करना और उसके दायित्व के प्रति चैतन्य होना। कुछ अन्य धर्म भी अहिंसा को जीवन–मूल्य की तरह स्वीकार करते हैं लेकिन जैन धर्म में अहिंसा केवल पुरुषों और पशुओं तक ही सीमित नहीं है बल्कि उसके अन्तर्गत वह सब कुछ सम्मिलित है जो पृथ्वी पर विद्यमान है, जैसे– मिट्टी, रेत, शैवाल, आग–पानी, कीटाणु, वायरस इत्यादि। भगवान महावीर ने पृथ्वी को भी एकेन्द्रिय जीव कहा है। इसलिये पृथ्वी की रक्षा भी हम तभी कर पायेंगे जब हम इसके प्रति भी अहिंसा की भावना रखेंगे।

यही कारण है कि जैन धर्मावलम्बी पूर्णतः शाकाहारी होते हैं और किसी आसन पर बैठने के पूर्व पिच्छी से सफाई करते हैं जिससे जीव हिंसा न हो अन्यथा अनचाहे ही पुनः कर्मबंधन में बाँधना पड़ेगा।

प्रश्न–3. परिग्रह से क्या आशय है?

उत्तर– परिग्रह का अर्थ है– वस्तुओं से आसक्ति और उनका निजी स्वार्थ में संग्रह। काला धन, चोरबाजारी, अवैध जमाखोरी को रोकने के लिये इन जीवन–मूल्यों का उपदेश किया गया है, जिससे सभी वस्तुयें सभी लोगों को समान रूप से उपलब्ध हो सकें और सभी अपने जीवन की रक्षा कर सकें। इसके लिये अपरिग्रह आवश्यक है।

प्रश्न–4. 'जियो और जीन दो', पर अपने विचार प्रकट कीजिये।

उत्तर– सम्यकत्व का अर्थ है– जीवन को भली–भाँति संतुलित करना। पृथ्वी पर मनुष्य का जीवन अशांति में जीने के लिये कल्पित नहीं हुआ है, बल्कि उसे समरसता की दिशा में ले जाने की भावना से सृजित है। यही मूल लक्ष्य है जो 'जियो और जीने दो' की महान् प्रेरणा बनकर आज हमारे लोकतंत्र को पुष्ट और शक्तिशाली बनाता है। यही हमारे कर्मों का संकेतक और उत्प्रेरक है अन्यथा कर्म की समस्त दिशायें सत्प्रेरणा के अभाव में खो जायेंगी। उग्रवाद, आतंकवाद, क्रूरता, स्वार्थपरता, भोगवाद, हिंसावाद, अलगाववाद, उपभोक्तावाद और कट्टरपंथ से ग्रस्त वर्तमान विश्व को इस सत्यप्रेरणा की अत्यन्त आवश्यकता है।

दकियानूस, असहिष्णु, साम्प्रदायिक, रूढ़िबद्ध और संकीर्ण हो चली मानव–आत्मा को जीवन के विराट–तत्व का दिग्दर्शन कराने हेतु जीव और अजीव के बीच अन्तर्निहित सम्बन्ध को उद्घाटित करना अत्यंत आवश्यक है। समाज में लेन–देन का व्यापार जितना ही स्थूल और प्रकट है, उतना ही प्रकृति से लेन–देन का व्यवहार प्रच्छन्न और ओझल है। प्रकृति से जो हम ग्रहण कर रहे हैं वह हमें सामान्य तौर पर दिखाई नहीं देता, इसलिये हम उसके संरक्षण के प्रति सचेष्ट नहीं रहते। इसे गहराई से समझना होगा और नैतिक शिक्षा के माध्यम से

मनुष्य और प्रकृति के सह–संबंध को सभी के मन में भली प्रकार से बैठाना होगा, तभी विश्व–शांति संभव हो सकेगी।

प्रश्न–5. अपरिग्रह की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर– भगवान महावीर के चिन्तन में तीन अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्व हैं, जिनमें जैन धर्म का सार समाविष्ट है। इनमें से एक है– अपरिग्रह। जैन धर्म में 'परस्परोग्रही जीवनम्' कहा गया है। इसमें जिस सत्य का निर्वचन किया है उसमें प्रकृति के सभी अंगों की जैविक एकता की अन्तरानुभूति का विषय बनाया गया है जो स्वयं एक प्रकार की तपश्चर्या है। इन अनुभूति के बिना जीवन–जगत् के पारस्परिक साहचर्य को नहीं समझा जा सकता। वस्तुओं में आसक्ति और उनका निजी स्वार्थ में संग्रह करना, काला धन, चोर बाजारी, अवैध जमाखोरी को रोकने के लिये इन जीवन–मूल्यों का उपदेश दिया गया है, जिससे सभी वस्तुयें सभी लोगों को समान रूप से उपलब्ध हो सकें और सभी अपने जीवन की रक्षा कर सकें इसके लिये अपरिग्रह आवश्यक है।

प्रश्न–6. अहिंसा का स्थान सबसे बढ़कर क्यों है?

उत्तर– जैन धर्म में अहिंसा का स्थान सर्वोपरि है। गृहस्थ और श्रमण दोनों को ही इसका पालन करना पड़ता है। आपने देखा होगा जैन धर्म के प्रतीक चिन्ह खुली हुई हथेली पर 'अहिंसा' लिखा रहता है, जिसका अर्थ है– 'रुकें और अहिंसा का पालन करें।' अहिंसा का अर्थ है जीव–मात्र के जीवनाधिकार की रक्षा करना और उसके दायित्व के प्रति चैतन्य होना। कुछ अन्य धर्म भी अहिंसा को जीवन–मूल्य की तरह स्वीकार करते हैं लेकिन जैन धर्म में अहिंसा केवल पुरुषों और पशुओं तक ही सीमित नहीं है बल्कि उसके अन्तर्गत वह सब कुछ सम्मिलित है जो पृथ्वी पर विद्यमान है, जैसे– मिट्टी, रेत, शैवाल, आग–पानी, कीटाणु, वायरस इत्यादि। भगवान महावीर ने पृथ्वी को भी एकेन्द्रिय जीव कहा है। इसलिये पृथ्वी की रक्षा भी हम तभी कर पायेंगे जब हम इसके प्रति भी अहिंसा की भावना रखेंगे।

जैन धर्म के अनुसार मानसिक हिंसा भी वास्तविक हिंसा की तरह ही एक नैतिक बुराई है, इसलिये मन, वचन और कर्म की शुद्धता का आग्रह है, जिससे शाश्वत प्रेम और करुणा का अनुभव किया जा सके। वस्तुतः अहिंसा का अर्थ केवल स्वयं को हिंसा से मुक्त रखना ही यथेष्ठ नहीं है। यदि आप स्वयं हिंसा न कर दूसरों से अपनी इच्छापूर्ति के लिये हिंसा करवाते हैं तो आप भी नैतिक रूप से इसके लिये सीधे उत्तरदायी हैं क्योंकि दूसरे व्यक्ति ने आपकी प्रेरणा से ही हिंसा कार्य किया है। लेकिन यह मत समझिये कि अहिंसा केवल यहीं तक सीमित ह। यदि आप परोक्ष रूप से दूसरों द्वारा किये गये हिंसा कार्य का किसी भी रूप में समर्थन करते हैं तो फिर आपके यह कहने का भी कोई अर्थ नहीं है कि 'न तो मैं स्वयं हिंसा करता हूँ और न ही किसी अन्य से करवाता हूँ।' चूँकि आपसे हिंसक कृत्य के समर्थन में हिंसा और उसकी क्रूरता का परोक्ष समर्थ किया है। इसलिये उसके भागी भी आप ही हैं। इसलिये अहिंसा एक महाव्रत है, जिसमें हिंसा का मन, वचन और कर्म से पूर्णतया निषेध किया गया है। जैन धर्म में अहिंसा का स्वरूप अत्यन्त गहन और अन्य सभी जीवन–मूल्यों से गहराई से जुड़ा हुआ है।

(3)
बौद्ध धर्म

लघु एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

प्रश्न–1. बौद्ध धर्म में अहिंसा को समझाइये।

उत्तर– सभी प्राणियों को मन, वचन एवं कर्म से किसी प्रकार का कष्ट न देना अहिंसा है। बौद्ध धर्म का अनुयायी अहिंसा के पालन में 'जीव हिंसा से विरक्त रहूँगा', ऐसा व्रत लेता है। सभी प्राणियों के प्रति प्रेम हिंसा एवं मैत्री का व्यवहार अहिंसा का आचरण है। यदि कोई अहिंसा का व्रत लेता है तो वह समाज का बहुत बड़ा कल्याण करता है। यदि कोई किसी को कष्ट पहुँचाता है तो वह हिंसा है। मारपीट, बलात्कार, पिशुनवचन, परुषवचन ये सभी हिंसा है। जिस भी कार्य से किसी व्यक्ति या समाज की हानि हो तो वह हिंसा कहलाती है। बौद्ध धर्म ग्रन्थ धम्मपद में यह कहा गया है कि इस संसार में हिंसा को वैरभाव से शांत नहीं किया जा सकता लेकिन अबैर से बैर शांत होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि बौद्ध अहिंसा की भावना को जागृत करके ही लोक–कल्याण संभव है।

प्रश्न–2. बौद्ध मानवतावादी दृष्टि क्या है?

उत्तर– बौद्ध का व्यक्तित्व मानवता के सर्वोत्तम पथ–प्रदर्शक के रूप में है। उनके उपदेश सुकर्म मार्ग पर लोगों का पथ–प्रदर्शन करते हैं। मानवता का आशय है– अपने एवं पराये में कोई भेद न करना। बौद्ध धर्म ग्रंथ बोधिचर्यावतार में कहा गया है कि पहले आदर से परात्मसमता की भावना करनी चाहिये। जैसे मैं अपनी पालना करता हूँ वैसी ही मुझे सबकी पालना करनी चाहिये, क्योंकि जैसे दुःख मुझे बुरा और सुख अपने को अच्छा लगता है वैसे ही सबको ही दुःख बुरा एवं सुख अच्छा लगता है। इसलिये बौद्ध आचार्य शांतिदेव कहते हैं कि जैसे मैं अपना दुःख दूर करता हूँ वैसे ही मुझे दूसरों का दुःख दूर करना है, क्योंकि दुःख तो दुःख ही है। मुझे दूसरे जीवों पर अनुग्रह करना है क्योंकि जैसा जीव मैं हूँ, वैसे वे भी हैं। यह एक मानवतावादी दृष्टि है जो सभी मानव–मात्र के लिये हितकर, मंगलकारी एवं सुखमय व्यवहार है। बौद्ध धर्म में मानवता की पहली आवश्यकता समता का व्यवहार है, जहाँ समता नहीं वहाँ मानवता नहीं। मानवता का मूल करुणा एवं मैत्री का संयोग है। करुणा मानवता के मूल में है, मैत्री का सहयोग मानवता की प्रतिष्ठापना करता है।

प्रश्न–3. बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य क्या हैं?

उत्तर– चार आर्य सत्य एवं अष्टांगिक मार्ग बौद्ध धर्म की आधारशिला हैं। चार आर्य सत्य एवं अष्टांगिक मार्ग का विवरण निम्न प्रकार से है–

(1) **दुःख–** प्रथम आर्यसत्य संसार दुःखमय है। यह संसार दुःख से पूर्ण है जन्म, जरा, बीमारी एवं मृत्यु, अप्रिय का संयोग एवं प्रिय का वियोग दुःख हैं।

(2) **दुःख समुदाय–** इन दुःखों का कारण है, इन समस्त दुःखों की उत्पत्ति किन्हीं कारणों से होती है। इच्छा अभिलाषा, लालसा, बौद्ध की भाषा में तृष्णा ही समस्त दुःखों का कारण है। तृष्णा से ही समस्त दुःखों की उत्पत्ति होती है।

(3) **दुःख निरोध (निर्वाण)**– इन दुःखों का निरोध किया जा सकता है। कारण के नष्ट कर देने से कार्य स्वतः नष्ट हो जाता है। इन दुःखों का कारण इच्छा, अभिलाषा, लालसा या तृष्णा है। इनका त्याग कर देने से दुःख समाप्त हो जाते हैं।

(4) **दुःख निरोध मार्ग**– दुःखों को त्याग करने का मार्ग है। इस मार्ग को आर्य अष्टांगिक मार्ग कहते हैं।

प्रश्न–4. बौद्ध पंचशील सिद्धान्त का नैतिक स्वरूप समझाइये।

उत्तर– आज के समाज की सम्यक दिशा प्रदान करने में बौद्ध पंचशील सिद्धान्त पूर्णतः सक्षम है। विश्वबंधुत्व एवं विश्व–प्रेम का एकमात्र यही सम्यक साधन है। यह एक ओर तो विश्व–शांति एवं सद्भाव के लिये उपयोगी है तो दूसरी ओर जनसामान्य एवं भिक्षु सभी जड़ों के लिये भी उपयोगी है। पंचशील का आशय– अहिंसा, सत्यवादिता, ब्रह्मचर्य, चोरी न करना एवं मद्यपान के निषेध से है। आज के समाज में इन मूल्यों का सुख एवं शांति की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रश्न–5. बौद्ध धर्म के अनुसार परिवार के प्रति नैतिक कर्त्तव्य समझाइये।

उत्तर– बौद्ध धर्म के ग्रंथ दीर्घनिकाय के सिगालोवाद सुत्त में परिवार के प्रति नैतिक सदाचार पर बल दिया गया है। गृहस्थ का परिवार के लोगों के लिये पारस्परिक कर्त्तव्य ऐसे जीवन मूल्य हैं जो गृहस्थ के नैतिक पक्ष से संबंधित हैं।

माता–पिता का बच्चों के प्रति नैतिक कर्त्तव्य–

(1) माता–पिता को अपने बच्चों को अधर्म (पाप) से रोकना चाहिये।
(2) उन्हें सद्गुणों की शिक्षा देनी चाहिये।
(3) उन्हें कला एवं विज्ञान पढ़ाना चाहिये।
(4) उन्हें योग्य पत्नियाँ एवं पति उपलब्ध कराना चाहिये।
(5) उन्हें पैतृक धन–सम्पत्ति भेंट देनी चाहिये।

बच्चों का माता–पिता के प्रति नैतिक कर्त्तव्य–

(1) बच्चों को माता–पिता की सेवा करनी चाहिये।
(2) उचित परिवारिक कर्त्तव्य को पूरा करना चाहिये।
(3) माता–पिता की सम्पत्ति की रक्षा करनी चाहिये।
(4) बच्चों को माता–पिता का योग्य उत्तराधिकारी बनना चाहिये।
(5) बच्चों को माता–पिता के पूर्वजों का सम्मान करना चाहिये।

पति का पत्नी के प्रति नैतिक कर्त्तव्य–

(1) पति को अपनी पत्नी के प्रति सम्मानपूर्वक व्यवहार करना चाहिये।
(2) पति को पत्नी के प्रति दयालुता का व्यवहार करना चाहिये।
(3) पत्नी के प्रति पति को विश्वासी होना चाहिये।
(4) दूसरों के द्वारा उसे सम्मानित होने के कार्य करना चाहिये।
(5) पत्नी को सुंदर आभूषण एवं वस्त्र देना चाहिये।

पत्नी का पति के प्रति नैतिक कर्त्तव्य–

(1) पत्नी के अपने परिवार के परिजनों की आज्ञा का पालन करना चाहिये।

(2) पति के मित्रों, रिश्तेदारों का अतिथि सत्कार करना चाहिये।
(3) पत्नी को पतिव्रता होना चाहिये।
(4) पत्नी को किफायती होना चाहिये।
(5) पत्नी को परिश्रम एवं कौशल दिखलाना चाहिये।

प्रश्न–6. बौद्ध धर्म में मद्य निषेध पर अधिक बल क्यों दिया गया है?

उत्तर– मादक द्रव्यों का सेवन न करना ही मद्य–निषेध है। मादक–द्रव्यों के सेवन से मानसिक एवं शारीरिक दोनों ही संतुलन बिगड़ जाता है और व्यक्ति विवेकहीन होकर अनैतिक कार्य करने लगता है। इसके साथ–साथ धन–नाश आदि दुष्परिणामों को व्यक्ति प्राप्त करता है। आर्थिक विपन्नता आ जाती है। परिवार में क्लेश बढ़ जाता है। समाज में उच्छृंखलता बढ़ जाती है। अतः बौद्ध धर्म में मद्यपान के निषेध पर बल दिया गया है। इस प्रकार बौद्ध पंचशील सिद्धान्त सुंदर और स्वस्थ समाज के निर्माण में एवं सामाजिक नैतिक मूल्यों की स्थापना में प्रासंगिक है।

(4) ईसाई धर्म

<u>लघु एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :</u>

प्रश्न–1. मसीही धर्म का प्रथम उद्देश्य क्या है?

उत्तर– मसीही धर्म का प्रथम उद्देश्य है– मानवीय समानता और एकता। यीशु के जन्म के साथ एक नवीन सोच का प्रादुर्भाव हुआ। यीशु ने एक नूतन दर्शन मनुष्य–मात्र को प्रदान किया कि ईश्वर अधर्मी, पापियों से भी निःस्वार्थ प्रेम करता है।

प्रश्न–2. यीशु ने अपने संदेशों के माध्यम से मानवीय सोच में किस महत्वपूर्ण परिवर्तन को रेखांकित किया?

उत्तर– यीशु ने अपने संदेशों के माध्यम से मानवीय सोच में इस महत्वपूर्ण परिवर्तन को रेखांकित किया है कि मनुष्य जिसे 'मैं' कहता है वह पार्थिव शरीर नहीं बल्कि अनंत आत्मा है। शरीर आत्मा को संसार में विचरण हेतु प्रदान किया गया है। मनुष्य का जन्म प्रथम बिन्दु है और मृत्यु अंतिम। नश्वर संसार एक सेतु के जैसा है। मनुष्य जन्म से यात्रा प्रारंभ करता है और जीवन व्यतीत कर दूसरी ओर उतर जाता है। मृत्यु एक सत्य है, जिससे भागा नहीं जा सकता, परन्तु मृत्यु अंत नहीं है। मृत्यु केवल एक चौखट है, जिसे पार कर मनुष्य अनंत यात्रा पर निकल जाता है। आत्मा सत्य है, अनंत है, अविनाशी है। यीशु की शिक्षा जीवन के प्रति मानवीय सोच में आमूलचूल परिवर्तन लाती है। मृत्यु के भय से मुक्त करती है।

प्रश्न–3. यीशु के अनुसार देश के प्रति मनुष्य का क्या कर्त्तव्य है?

उत्तर– यीशु ने ईश्वरीय और राजकीय कानूनों का पालन करने का आदेश दिया। बाईबिल में स्पष्ट आदेश है कि शासकों और न्यायाधीशों का सम्मान करो। जिसे कर (टैक्स) देना चाहिये उसे कर दो, जिसे महसूल चाहिये उसे महसूल दो। यीशु ने रोमन की दासता के पश्चात् भी देश के कानून का उल्लंघन नहीं किया। राजकीय आदेशों का पालन यीशु की शिक्षा का अकाट्य अंग है। एक अच्छे और सच्चे नागरिक के कर्त्तव्यों का पालन यीशु ने

किया और यही शिक्षा उन्होंने अपने अनुयायियों को प्रदान की। यीशु की दृष्टि में एक सच्चे मसीही का अच्छा नागरिक होना अत्यन्त आवश्यक है। उन्होंने धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय कर्त्तव्यों का समानता से पालन करने का ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत किया।

प्रश्न–4. मसीही धर्म में नैतिकता का स्वरूप क्या है?

उत्तर– ईसाई धर्म की नैतिकता का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ है– नैतिक कर्त्तव्यों की समझ। प्रत्येक भौतिक कार्य के तीन तत्व हैं– कर्म (जो हम करते हैं), उद्देश्य (क्यों करते हैं) एवं जिन परिस्थितियों में हम करते हैं (कहाँ, कब, कैसे, किसके साथ एवं परिणाम आदि)। व्यक्तिगत कर्म को अच्छा होने या बनाने के लिये जो भी हम कर्म करें उसका उद्देश्य अच्छा होना चाहिये। कुछ कार्य मूल मानव अच्छाई के दृष्टिकोण से सही नहीं होते इसीलिये वे गलत होते हैं। किसी मासून को मारना, प्रताड़ित करना अथवा शील भंग आदि ऐसे कृत्यों में से हैं जो हमेशा गलत होते हैं। ऐसे कृत्य अत्यन्त अप्रिय होते हैं तथा इनके करने को या इनकी परिस्थितियों को भी गलत माना जाता है।

प्रश्न–5. 'नैतिक कर्म का मूल उद्देश्य कर्त्ता के अन्दर निहित होता है'– इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर– किसी भी नैतिक कर्म का मूल उद्देश्य कर्त्ता के अन्दर निहित होता है। यही कारण है कि यह कहा जाता है कि किसी कार्य को करने का मूल तत्व उसे करने वाले की भावना पर निर्भर करता है। किसी कार्य के नैतिक रूप से सही होने के लिये उसकी भावना का सही होना आवश्यक है। यदि हम किसी गलत उद्देश्य से कोई कार्य करने को प्रेरित होते हैं, तब भले ही वह मूर्त रूप से अच्छा हो, परन्तु कार्य नैतिक रूप से गलत होता है। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिये कि हम यह न समझ बैठें कि यदि उद्देश्य सही हो तो गलत कार्य अच्छा हो सकता है।

प्रश्न–6. सामाजिक समरसता के दृष्टिकोण से यीशु के गौशाले में जन्म लेने का क्या संकेत है? समझाइये।

उत्तर– यीशु के समकालीन धर्मगुरु निर्धनों का शोषण करते और पापियों को हेय दृष्टि से देखते थे। अन्य जातियों से संबंध एक यहूदी के लिये निषिद्ध था। चरवाहों को शोषित और दलित समझा जाता था। यीशु का गौशाले में जन्म लेना इस ओर संकेत करता है कि ईश्वर उनसे भी प्रेम करता है। उसने एक निर्धन परिवार में जन्म लेकर धनाढ्यों को यह स्पष्ट संदेश दिया कि वह मानवीय भेदभाव से परे है।

(5)

इस्लाम धर्म

लघु एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

प्रश्न–1. तौहीद किसे कहते हैं? समझाइये।

उत्तर– तौहीद का अर्थ है– साक्षी होना, गवाही देना। इस्लाम में इसका अर्थ फारसी घोषणा से है– 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद उर रसूल अल्लाह।' अर्थात् अल्लाह के सिवा कोई और परमेश्वर नहीं और मुहम्मद उसके रसूल (दूत) हैं।

इस घोषणा के अनुसार प्रत्येक मुसलमान एकेश्वरवाद और मुहम्मद साहब के रसूल होने के अपने विश्वास की गवाही देता है। यह इस्लाम का सबसे प्रमुख सिद्धान्त है। इसका पालन अनिवार्य है। एकेश्वरवाद पर विश्वास मनुष्य को भटकने से बचाता है। ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वत्र और सर्वव्यापी है। यह ज्ञान प्राप्त होते ही व्यक्ति पाप कर्मों से बचने लगता है। उसके चरित्र में सच्ची निष्ठा, आज्ञाकारिता एवं समर्पण के भावों का समावेश हो जाता है। संक्षेप में इस्लाम धर्म के अनुसार ईश्वर पर विश्वास होना सभी नकारात्मक शक्तियों के प्रभाव में आने से मनुष्य को बचाता है।

प्रश्न–2. इस्लाम धर्म का प्रमुख सिद्धान्त क्या है?

उत्तर– प्रत्येक मुसलमान एकेश्वरवाद और मुहम्मद साहब के रसूल होने के अपने विश्वास की गवाही देता है। यह इस्लाम का सबसे प्रमुख सिद्धान्त है। इस्लाम में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सूक्ष्म से सूक्ष्म बिन्दुओं पर मुसलमानों का मार्गदर्शन किया गया है। उनकी जीवन–शैली, दिनचर्या हेतु मापदण्ड, नियम एवं सिद्धान्त निश्चित किये गये हैं तथा उन्हें उन पर चलने हेतु निर्देशित किया गया है।

संक्षेप में इस्लाम में किसी पर एहसान करना, अपने दायित्वों का गरिमापूर्वक एवं निष्ठापूर्वक निर्वहन करना, अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना, बड़ों का आदर व छोटों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करना, मितव्ययिता, वचनबद्धता, क्षमा माँगना व क्षमा करना, प्यासे को पानी पिलाना, भूखे को खिलाना, क्रोध न करना, धीरज रखना, दयालुता, दूसरों को हीन नहीं समझना, अत्याचार व अनाचार से बचना, सच बोलना, प्रतिशोध अथवा ईर्ष्या की भावनाओं को मन में नहीं आने देना, रिश्वत नहीं लेना, न ही देना, अत्याचारों का पक्ष लेना, हलाल की जीविका कमाना, व्यापार में बेइमानी नहीं करना, जरूरतमंद को ऋण देना, दान–पुण्य करना, इत्यादि का महत्व बताते हुये इनके लिये नैतिक नियम निर्धारित किये गये हैं।

प्रश्न–3. नमाज पढ़ने का सबसे बड़ा दर्शन क्या है?

उत्तर– नमाज का सबसे बड़ा दर्शन ईश्वर स्मरण है। एक सच्चा मुसलमान सुख में, दुःख में, आराम में, विपत्ति में, जटिल से जटिल परिस्थितियों में ईश्वर को याद रखता है और कभी भी उसके प्रति अविश्वास अथवा शंका का भाव मन में नहीं आने देता। प्रत्येक परिस्थिति में ईश्वर का शुक्र करना उसका धर्म है। नमाज किये हुये पापों की स्वीकारोक्ति, पश्चाताप और भविष्य में उनसे बचने हेतु प्रेरित करती है।

प्रश्न–4. रोज़ा रखने के लाभ बताइये।

उत्तर– रोजा रखने से मनुष्य को समाज के गरीब, वंचित, असहाय, निराश्रित एवं अन्य जरूरतमंदों की पीड़ा का अनुभव होता है। अतः रोजेदार अधिक से अधिक दान करके उनके दर्द को कम करने का पुनीत प्रयास करता है। साथ ही रोजा रखने से स्वयं व्यक्ति के भीतर धैर्य रखने एवं अपनी इन्द्रियों को वश में करने की आदत का विकास होता है। कहा जाता है कि रोजा केवल खाना–पीना बन्द करने का नाम नहीं है, बल्कि रोजे की हालत में किसी की बुराई करना, सुनना, देखना, यहाँ तक कि किसी बुरी बात या कार्य की इच्छा का मन में आना भी वर्जित होता हैं। यह एक माह का अभ्यास मनुष्य के चरित्र में सर्वश्रेष्ठ गुणों का विकास करने में सहायक होता है।

प्रश्न–5. मुसलमानों को हज करना क्यों अनिवार्य है?

उत्तर– हज एक इस्लामी तीर्थयात्रा है। यह मुस्लिम लोगों के पवित्र शहर मक्का में प्रतिवर्ष होने वाला विश्व का सबसे बड़ा जमावड़ा है। हज मुसलमानों का महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्य है। यदि शरीर से स्वस्थ एवं आर्थिक रूप से समर्थ व सक्षम है तो प्रत्येक मुसलमान को अपने जीवनकाल में एक बार हज करना अनिवार्य है। हज मुस्लिम लोगों की एकजुटता के प्रदर्शन के साथ इनका अल्लाह पर विश्वास होने का भी द्योतक है। हज के दौरान व्यक्ति को ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त होता है, इस स्थिति में उसे अपने अस्तित्व की तुच्छता, संसार की नश्वरता एवं अपनी कमियों और पापों का तीव्रता से अनुभव होता है। यहाँ हज यात्री अपने पापों की क्षमा के लिये विलाप करते हुये देखे जा सकते हैं। अतः हज के दौरान व्यक्ति को आत्मावलोकन एवं आत्म मूल्यांकन का श्रेष्ठ अवसर प्राप्त होता है। साथ ही सम्पूर्ण विश्व से आये हुये विभिन्न भाषाओं, एवं नस्ल के हजयात्रियों के साथ हज यात्रा करने से विश्व के कल्याण हेतु एवं मानव–मात्र के प्रति व्यापक दृष्टिकोण का विकास भी होता है।

प्रश्न–6. इस्लाम धर्म के पाँच बुनियादी उसूल बताइये।

उत्तर– इस्लाम धर्म के पाँच बुनियादी उसूल तौहीद, नमाज, रोजा, हज व जकात मुसलमान होने की आवश्यक शर्तें हैं। ये सभी सिद्धान्त श्रेष्ठ नैतिक मूल्यों पर आधारित हैं और इनका पालन करने से निश्चित रूप से एक सच्चे मुसलमान के चरित्र का निर्माण होता है।

(1) **तौहीद–** तौहीद का अर्थ है साक्षी होना, गवाही देना। इस्लाम में इसका अर्थ फारसी घोषणा से है– 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद उर रसूल अल्लाह।' अर्थात् अल्लाह के सिवा कोई और परमेश्वर नहीं और मुहम्मद उसके रसूल (दूत) हैं।

(2) **नमाज–** नमाज उर्दू में फारसी शब्द 'सलात' का पर्याय है। इसका अर्थ दुआ (प्रार्थना) है। कुरान में सलात शब्द चार–बार आया है। इसके द्वारा प्रत्येक मुसलमान को नमाज पढ़ने का आदेश ताकीद के साथ किया गया है। इसे नियमित रूप से, नियमपूर्वक और विधिवत् पढ़ना पुण्य तथा त्याग देना पाप है। नमाज के लिये कुरान में अल्लाह का आदेश है– 'ईमान वालों! सब्र और नमाजों से काम लो।'

(3) **रोजा–** रोजा अर्थात् उपवास। इस्लामी पंचांग का नौवाँ मास रमजान है। इस पूरे माह मुस्लिम समुदाय का प्रत्येक व्यक्ति, स्त्री, पुरुष बच्चे सभी उपवास रखते हैं। इस मास में–

- पूरे माह रोजे रखना।
- रात में तरावीह (लंबी नमाजें) पढ़ना।
- कुरान का पठन या पारायण करना।
- एतेकाफ में बैठना (मानव–मात्र की अभ्युन्नति, सुख, कल्याण, शांति एवं समृद्धि हेतु प्रार्थना करते हुये मौन व्रत रखना)।
- दान–धर्म करना।
- ईश्वर के प्रति आभार प्रदर्शित करना।

इत्यादि को प्रमुख माना जाता है। रमजान विशेष साधना, उपासना, ध्यान, पूजा एवं पुण्य का महीना है।

(4) **हज–** हज एक प्रकार की इस्लामी तीर्थयात्रा है। यह मुस्लिम लोगों के पवित्र शहर मक्का में प्रतिवर्ष होने वाला विश्व का सबसे बड़ा मेला है। हज मुसलमानों का महत्वपूर्ण धार्मिक कर्त्तव्य है। यदि शरीर से स्वस्थ एवं आर्थिक रूप से समर्थ व समक्ष है तो प्रत्येक मुसलमान को अपने जीवनकाल में एक बार हज करना अनिवार्य है। हज मुस्लिम लोगों की एकजुटता के प्रदर्शन के साथ इनका अल्लाह पर विश्वास होने का भी द्योतक है। हज के दौरान व्यक्ति को ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त होता है। इस स्थिति में वे अपने अस्तित्व की तुच्छता, संसार की नश्वरता एवं अपनी कमियों और पापों की क्षमा के लिये विलाप करते हुये देखे जा सकते हैं। अतः हज के दौरान व्यक्ति को आत्मावलोकन एवं आत्म–मूल्यांकन का श्रेष्ठ अवसर प्राप्त होता है। साथ ही सम्पूर्ण विश्व से आये हुये विभिन्न भाषाओं, रंग एवं नस्ल के हजयात्रियों के साथ हज यात्रा करने से विश्व–कल्याण हेतु एवं मानव–मात्र के प्रति व्यापक दृष्टिकोण का विकास भी होता है।

(5) **जकात–** इस्लाम के पवित्र ग्रंथ कुरान के अनुसार प्रत्येक मुसलमान को वर्ष में एक बार अपनी आय का कुछ भाग गरीबों तथा जरूरतमंदों को दान करना चाहिये। इस दान को जकात कहते हैं।

(6)
सिक्ख धर्म

लघु एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

प्रश्न–1. गुरू नानक जी ने किन दो महत्वपूर्ण प्रथाओं की शुरूआत की थी?

उत्तर– गुरू नानकदेव जी ने दो महत्वपूर्ण प्रथाओं 'लंगर' और 'सेवा' की शुरूआत की। उनका लंगर समानता, नम्रता और भ्रातृभाव का सूचक था क्योंकि लंगर में संगत की सेवा से जुड़े सभी लोग समान उद्देश्य के साथ जाति–पाँति तथा अमीरी–गरीबी का भेदभाव भुलाकर एक ही पंक्ति में बैठकर भोजन करते हैं, जिसमें परमार्थ विचारों वाले सभी लोग एक समान भाईचारे का अंग बन जाते हैं। उन्होंने सेवा, कीर्तन तथा सत्संग के द्वारा प्रभु तक पहुँचने का सरल मार्ग बताया है और इस बात पर बल दिया है कि गृहस्थ जीवन में रहकर भी सांसारिक मोह–माया से ऊपर उठकर प्रभु की सच्ची भक्ति संभव है।

प्रश्न–2. स्त्री–पुरुष की समानता के संबंध में गुरू नानक जी ने क्या उपदेश दिये हैं?

उत्तर– गुरु जी के उद्देश्यों का सार था– 'मनुष्य की समानता।' मनुष्य को धर्म, जाति, लिंग, सामाजिक स्थिति के नाम पर अंतर नहीं करना चाहिये, क्योंकि सब एक ही पिता 'अकाल पुरख वाहेगुरु की संतान हैं।' गुरू नानक साहिब 'स्त्री और पुरुष' की समानता में विश्वास करते थे। औरतों के प्रति उनका विशेष सम्मान भाव था और इसलिये उन्होंने औरतों को आदरपूर्वक स्थान दिया है। वे कहते थे, "स्त्री से मनुष्य पैदा होता है, स्त्री से ही उसकी शादी होती है, स्त्री ही उसकी दोस्त और सहभागी बनती है, स्त्री से ही भविष्य में आने वाली पीढ़ी पैदा होती है। स्त्री ही राजा–महाराजाओं की जन्मदायी होती है, स्त्री के बिना यह जीवन में नहीं बचेगा।" जो व्यक्ति स्त्री की समानता पर सवाल उठाता था, तो गुरूजी कहते थे–

'सो क्यों मंदा आखीये जित जनमें राजान?'

अर्थात् हम उसको (स्त्री को) बुरा कैसे कह सकते हैं, वह राजा–महाराजाओं की जननी है।

प्रश्न–3. गुरू नानक देव जी ने प्रभु तक पहुँचने का कौन–सा सरल मार्ग बताया?

उत्तर– गुरू नानकदेव जी ने सेवा, कीर्तन, सत्संग के द्वारा प्रभु तक पहुँचने का सरल मार्ग बताया है और इस बात पर जोर दिया है कि गृहस्थ जीवन में रहकर, सांसारिक मोह–माया से ऊपर उठकर प्रभु की सच्ची भक्ति की जा सकती है।

प्रश्न–4. गुरू नानक जी के रूहानी उपदेश समझाइये।

उत्तर– गुरू नानक साहिब के मुख्य रूहानी उपदेश निम्नलिखित हैं–

नाम जपो– प्रभु जो हमारे जीवन और प्राणों का दाता है उसे प्यार से याद करो और हमेशा उसकी स्तुति करो।

वंड छको– सबके साथ मिलजुल कर खाओ और जरूरतमंदों की सेवा और मदद करो।

किरत करो– गुरू नानक साहिब कहते हैं कि मनुष्य को अपनी आजीविका ईमानदारी से नी चाहिए। उन्होंने अपनी वाणी में भी हक हलाल की कमाई पर जोर दिया है। उन्होंने सा दी वार' में कहा है कि दान–पुण्य का फल असल में उसे ही मिलता है जो स्वयं हक ाल की कमाई करके उस पवित्र धन में से परमार्थ में खर्च करता है। गुरूजी ने निम्न तीन बातें मानने का सुझाव दिया–

(1) जिस व्यक्ति का नमक खाया है उसको तकलीफ मत दो अर्थात् नमकहरामी मत करो।

(2) झूठ मत बोलो।

(3) गरीब मार मत करो। नेक कमाई करो और शोषण मत करो।

प्रश्न–5. गुरू नानक के आने से भारत में लोगों में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर– गुरू नानक साहिब के आने से भारत में सच्ची भावना फिर से उमड़ी। गुरूजी के आने से पहले लोग सच्ची रूहानियत या सच्ची धार्मिकता को भुलाकर निर्जीव कर्मकाण्डों और रीति–रिवाजों में बुरी तरह फँस चुके थे। गुरू जी ने जीवों को उस समय प्रचलित अनेक प्रकार की विधियों, जैसे– कर्म योग, उपासना योग, लय योग, राज योग, हठ योग, ज्ञान योग, भक्ति योग और अन्य प्रकार के जप–तप, पूजा–पाठ, कर्म काण्ड आदि की भूल–भुलैयों से बाहर निकाला और परमेश्वर प्राप्ति के लिये अपनाया गया वह सरल और स्वाभाविक मार्ग दिखाया जो परमात्मा ने स्वयं जीव के कल्याण के लिये उसके अंदर सिरजा हुआ है। यह मार्ग अपनी आत्मा को अंदर शब्द से जोड़ने और जीते–जी सच्ची मुक्ति का मार्ग है।

प्रश्न–6. गुरू नानक जी ने अंत में समूह संसार को क्या उपदेश दिये?

उत्तर– गुरू नानक देव जी ने समूह संसार को यह उपदेश दिया कि परमात्मा केवल एक ही है और उसकी नजर में स्त्री और पुरुष समान हैं।

गुरू नानकदेव जी ने यह सूचित किया है कि परमेश्वर एक ही है। यहाँ मूल मंत्र में गुरू नानक जी ने उस निराकार परमात्मा की महिमा का गायन करते हुये कहा कि वह परमात्मा एक है। वह सब प्रकार के द्वैत से परे एवं ऊपर है। वह स्वयं सत्य है और उसका नाम भी सत्य है, वह सबका पिता है। न वह किसी से डरता है और न किसी को डराता है। उसे किसी से बैर या विरोध नहीं है। वह अकाल है, अजर, अमर और अविनाशी है। वह 'अजूनी' अर्थात् जन्म–मरण के बंधनों से मुक्त है। वह अपने अस्तित्व के लिये किसी दूसरे पर निर्भर नहीं, उसका प्रकाश अपने आप हुआ है। ऐसे गुणों से भरपूर उस सर्वसमर्थ परमेश्वर की प्राप्ति हमें पूरे सतगुरू की दया व मेहर से होती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(1) नैतिकता का प्रमुख गुण .... है–

(अ) भावगत गुण (ब) धर्मगत गुण
(स) वस्तुगत गुण (द) आत्मगत गुण।

उत्तर– (द) आत्मगत गुण।

(2) हिन्दू धर्म का सिद्धान्त कौनसा है?

(अ) आश्रम व्यवस्था (ब) पुरुषार्थ
(स) ऋण (द) उपरोक्त सभी।

उत्तर– (द) उपरोक्त सभी।

(3) हिन्दू धर्म को अन्य कौन से नाम से जाना जाता है?

(अ) निर्गुण धर्म (ब) सनातन धर्म
(स) बौद्ध धर्म (द) वैदिक धर्म।

उत्तर– (ब) सनातन धर्म।

(4) हिन्दू धर्म में जीवन में .... महत्व दिया जाता है–

(अ) वीरता को (ब) साहस को
(स) विनम्रता को (द) नैतिकता को।

उत्तर– (द) नैतिकता को।

(5) सत्य, अहिंसा, श्रद्धा, प्रेम, विश्वास तथा क्षमा का .... धर्म में विशेष महत्व है–

(अ) मुस्लिम धर्म में (ब) हिन्दू धर्म में
(स) विश्व धर्म में (द) सर्वधर्म में।

उत्तर– (ब) हिन्दू धर्म में।

(6) धर्म में नैतिकता क्या कार्य करती है?

(अ) साहस का (ब) सेतू का
(स) वीरता का (द) कुंठा का।

उत्तर– (ब) सेतू का।

(7) प्राचीन हिन्दी विधि का लेखक किसे माना जाता है?

(अ) महात्मा बुद्ध को (ब) मनु को
(स) महर्षि वाल्मीकि को (द) गोस्वामी तुलसीदास को।

उत्तर– (ब) मनु को।

(8) **गौतम बुद्ध का जन्म कहाँ हुआ था?**

(अ) बोधगया में (ब) लुंबिनी में

(स) वैशाली नगर में (द) पाटलीपुत्र में।

उत्तर– (ब) लुंबिनी में।

(9) **'त्रिपिटक' किस धर्म का प्रमुख ग्रंथ है?**

(अ) ईसाई धर्म (ब) बौद्ध धर्म

(स) यहूदी धर्म (द) इस्लाम धर्म।

उत्तर– (ब) बौद्ध धर्म।

(10) **कौन–सा सिद्धान्त जैन धर्म और बौद्ध धर्म में समान है?**

(अ) अस्तेय (ब) अहिंसा

(स) सत्य (द) त्रिरल।

उत्तर– (ब) अहिंसा।

(11) **हिन्दू धर्म को .... धर्म भी कहा जाता है।**

(अ) वैदिक धर्म (ब) वैष्णव धर्म

(स) हिन्दू धर्म (द) सनातन धर्म।

उत्तर– (द) सनातन धर्म।

(12) **'हिन्दू' नाम का उद्गम किस नदी से माना जाता है?**

(अ) यमुना नदी से (ब) गंगा नदी से

(स) ब्रह्मपुत्र से (द) सिंधु नदी से।

उत्तर– (द) सिंधु नदी से।

(13) **हिन्दू धर्म किस धार्मिक व्यवस्था या जीवन शैली का प्रतिनिधित्व करता है?**

(अ) बौद्ध धर्म का (ब) ईसाई धर्म का

(स) सनातन धर्म का (द) इस्लाम धर्म का।

उत्तर– (स) सनातन धर्म का।

(14) **भारत में हिन्दू धर्म को संदर्भित करने के लिए कौनसा शब्द बोला जाता है?**

(अ) आस्था (ब) परम्परा

(स) पंथ (द) धर्म।

उत्तर– (द) धर्म।

(15) **विश्व का सबसे पुराना धर्म कौनसा माना जाता है?**

(अ) हिन्दू धर्म को (ब) बौद्ध धर्म को

(स) ईसाई धर्म को (द) इस्लाम धर्म को।

उत्तर– (अ) हिन्दू धर्म को।

(16) **वेदों का सम्बन्ध किस धर्म से है?**

(अ) वैदिक धर्म से (ब) हिन्दू धर्म से

(स) बौद्ध धर्म से (द) सनातन धर्म से।

उत्तर– (अ) वैदिक धर्म से।

(17) **धर्म अनुयायियों के संदर्भ में हिन्दू धर्म की अनुमानित वैश्विक रैंक क्या है?**

(अ) पहला सबसे बड़ा (ब) तीसरा सबसे बड़ा

(स) दूसरा सबसे बड़ा (द) चौथा सबसे बड़ा।

उत्तर– (ब) तीसरा सबसे बड़ा।

(18) **पश्चिमी दृष्टिकोण से हिन्दू धर्म को सामान्यतः क्या कहा जाता है?**

(अ) धार्मिक विश्वासों का एक समूह (ब) एक आध्यात्मिक परम्परा

(स) एक धर्म (द) जीवन जीने का एक ढंग।

उत्तर– (द) जीवन जीने का एक ढंग।

(19) **ईश्वर ब्रह्माण्ड के समान कौन सा शब्द इस विश्वास का वर्णन करता है?**

(अ) पांडित्यवादी (ब) पैनेन्थिस्टिक

(स) पांडित्यपूर्ण (द) सर्वेश्वरवादी।

उत्तर– (द) सर्वेश्वरवादी।

(20) **हिन्दू धर्म में अनेक देवताओं के अस्तित्व का वर्णन करने हेतु किस शब्द का प्रयोग किया जाता है?**

(अ) अद्वैतवादी (ब) सर्वेश्वरवादी

(स) बहुदेववादी (द) द्वैतवादी।

उत्तर– (स) बहुदेववादी।

(21) **नैतिकता का प्रमुख गुण क्या है?**

(अ) आत्मगत गुण (ब) वस्तुगत गुण

(स) धर्मगत गुण (द) भावगत गुण।

उत्तर– (अ) आत्मगत गुण

(22) **हिन्दू धर्म के प्रमुख सिद्धान्त हैं–**

(अ) पुरुषार्थ (ब) आश्रम व्यवस्था

(स) ऋण व्यवस्था (द) उपरोक्त सभी।

उत्तर– (द) उपरोक्त सभी।

(23) **कर्मवाद का प्रमुख सिद्धान्त हैं–**

(अ) कर्त्ता को फल प्राप्त होना (ब) भोगों को भोगना

(स) कर्म फल की इच्छा न करना (द) कर्त्तव्य का पालन करना।

उत्तर– (स) कर्म फल की इच्छा न करना।

(24) **इस्लाम धर्म के पैगंबर मोहम्मद साहब का जन्म कहाँ हुआ था?**

(अ) काशी में (ब) काबा में

(स) मदीना में (द) मक्का में।

उत्तर– (द) मक्का में।

(25) सबसे अधिक सुधारवादी भक्ति संत कौन थे?
(अ) तुलसीदास (ब) रैदास
(स) कबीर दास (द) रामानंद।
उत्तर– (स) कबीर दास।

(26) महावीर के चिन्तन में तीन महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है–
(अ) सत्य (ब) ब्रह्मचर्य
(स) अस्तेय (द) अनेकान्तवाद।
उत्तर– (द) अनेकान्तवाद।

(27) पंचव्रतों में से कौन–से व्रत के शेष चार व्रत अनुवर्ती हैं?
(अ) अहिंसा (ब) अपरिग्रह
(स) सत्य (द) ब्रह्मचर्य।
उत्तर– (अ) अहिंसा।

(28) 'परस्परोपग्रहों जीवनम्' कहकर किस सत्य का निर्वचन किया गया है?
(अ) जीवन की परस्पर निर्भरता
(ब) प्रकृति के सभी अंगों की जैविक एकता
(स) जीवन–जगत की एकता (द) पर्यावरण विज्ञान।
उत्तर– (ब) प्रकृति के सभी अंगों की जैविक एकता।

(29) बुद्ध की शिक्षाओं का सार किसमें निहित है?
(अ) संघ में (ब) धम्म पद में
(स) चार आर्य सत्यों में (द) उपरोक्त सभी में।
उत्तर– (ब) धम्म पद में।

(30) बुद्ध ने दुःख निरोध के कितने मार्ग बताये हैं?
(अ) चार (ब) छह
(स) आठ (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (स) आठ।

(31) पंचशील का संबंध है–
(अ) बौद्ध धर्म से (ब) हिन्दू धर्म से
(स) ईसाई धर्म से (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (अ) बौद्ध धर्म से।

(32) मसीही धर्म के अनुसार मनुष्य अपने मूल उद्देश्यों से क्यों भटक गया?
(अ) धर्मान्धता के कारण (ब) पुण्य लोभ के कारण
(स) पाप के कारण (द) धनार्जन के कारण।
उत्तर– (स) पाप के कारण।

(33) यीशु के अनुसार सबसे बड़ा दान कौन–सा है?
(अ) धन दान (ब) क्षमा दान
(स) विद्या दान (द) श्रम दान
उत्तर– (ब) क्षमा दान।

(34) यीशु की दृष्टि में सच्चे मसीही का क्या होना नितान्त आवश्यक है?
(अ) अच्छा नागरिक होना (ब) शिक्षित होना
(स) धनवान होना (द) दानवीर होना।
उत्तर– (अ) अच्छा नागरिक होना।

(35) इस्लाम धर्म के महत्वपूर्ण स्तम्भ है–
(अ) नमाज (ब) रोज़ा
(स) हज (द) ये सभी।
उत्तर– (द) ये सभी।

(36) इस्लाम धर्म की स्थापना कब हुई?
(अ) पाँचवी शताब्दी में (ब) सातवीं शताब्दी में
(स) चौथी शताब्दी में (द) तीसरी शताब्दी में।
उत्तर– (ब) सातवीं शताब्दी में।

(37) किस सूफी संत की दरगाह अजमेर में स्थित है?
(अ) ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती (ब) निजामुद्दीन औलिया
(स) बाबा फरीद (द) गयासुद्दीन।
उत्तर– (अ) ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती।

(38) ज़कात शब्द का मूल अर्थ है–
(अ) दान (ब) वंचित वर्ग की सहायता
(स) धन का समान वितरण (द) मानसिक शांति।
उत्तर– (ब) वंचित वर्ग की सहायता।

(39) इस्लामी पंचांग में रमजान का माह कहलाता है–
(अ) नौवाँ मास (ब) दसवाँ मास
(स) ग्यारहवाँ मास (द) बारहवाँ मास।
उत्तर– (अ) नौवाँ मास।

(40) निजामुद्दीन औलिया की दरगाह कहाँ स्थित है?
(अ) दिल्ली में (ब) लाहौर में
(स) फतेहपुर सीकरी में (द) अजमेर में।
उत्तर– (अ) दिल्ली में।

(41) संत शेख सलीम चिश्ती की दरगाह कहाँ स्थित है?
(अ) अजमेर में (ब) लाहौर में
(स) फतेहपुर सीकरी में (द) दिल्ली में।
उत्तर– (स) फतेहपुर सीकरी में।

(42) गुरू नानक जी द्वारा प्रारंभ किये गये लंगर का उद्देश्य निम्न में से कौन–सा नहीं था?

(अ) समानता (ब) नम्रता
(स) भ्रातृभाव (द) भेदभाव।

उत्तर– (द) भेदभाव।

(43) गुरू नानक जी के रूहानी उपदेशों में 'वंड छको' का आशय है–
(अ) परमात्मा के नामों का स्मरण
(ब) स्त्री–पुरुष की समानता में विश्वास
(स) मिलजुल कर खाना और जरूरतमंदों की सेवा करना
(द) आजीविका ईमानदारी से कमाना।

उत्तर– (स) मिलजुल कर खाना और जरूरतमंदों की सेवा करना।

(44) महावीर के चिन्तन के तीन महत्वपूर्ण तत्वों में से एक तत्व .... है।
(अ) अनैकान्तवाद (ब) अस्तेय
(स) ब्रह्मचर्य (द) सत्य।

उत्तर– (अ) अनैकान्तवाद।

(45) जो समस्त इन्द्रियों को जीत लेता है, उसे क्या कहा जाता है?
(अ) ब्रह्मचारी (ब) सत्यवादी
(स) जिन (द) दैत्य।

उत्तर– (स) जिन।

(46) जिसने अपने पूर्व जन्म के कर्म–बन्धनों को काट दिया, उसे क्या कहा जाता है?
(अ) जिन (ब) बंधनमुक्त
(स) कर्मवादी (द) ब्रह्मचारी।

उत्तर– (अ) जिन।

(47) जिन ने किस धर्म का नामकरण किया?
(अ) हिन्दू धर्म का (ब) जैन धर्म का
(स) बौद्ध धर्म का (द) सिक्ख धर्म का।

उत्तर– (ब) जैन धर्म का।

(48) जैन धर्म कौनसे आहार पर वल देता है?
(अ) उत्तरीय आहार (ब) पश्चिमाहार
(स) शाकाहार (द) मांसाहार।

उत्तर– (स) शाकाहार।

(49) जैन धर्म में वस्तुओं और निजी स्वार्थ के संग्रह को क्या कहते हैं?
(अ) वस्तुसंग्रह (ब) परिग्रह
(स) स्वार्थसंग्रह (द) अपरिग्रह।

उत्तर– (ब) परिग्रह।

(50) सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य ये कौन से धर्म के महाव्रत हैं?
(अ) बौद्ध धर्म के (ब) पारसी धर्म के
(स) जैन धर्म के (द) हिन्दू धर्म के।

उत्तर– (स) जैन धर्म के।

(51) चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग किस धर्म से सम्बन्धित हैं?
(अ) इस्लाम धर्म से (ब) सिक्ख धर्म से
(स) जैन धर्म से (द) बौद्ध धर्म से।

उत्तर– (द) बौद्ध धर्म से।

(52) श्वेताम्बर और दिगम्बर किस धर्म के सम्प्रदाय हैं?
(अ) बौद्ध धर्म के (ब) जैन धर्म के
(स) सिक्ख धर्म के (द) फारसी धर्म के।

उत्तर– (ब) जैन धर्म के।

(53) जैन धर्म के पाँच महाव्रत में कौन–सा महाव्रत महावीर स्वामी ने दिया था?
(अ) ब्रह्मचर्य (ब) अस्तेय
(स) अहिंसा (द) सत्य।

उत्तर– (अ) ब्रह्मचर्य।

(54) जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर, जिन्होंने चार महाव्रत दिए थे– कौन हैं?
(अ) आदिनाथ (ब) पार्श्वनाथ
(स) ऋषभनाथ (द) नरेन्द्र नाथ।

उत्तर– (ब) पार्श्वनाथ।

(55) बौद्ध शिक्षा का केन्द्र कहाँ पर था?
(अ) उज्जैन में (ब) दिल्ली में
(स) विक्रमशिला में (द) वाराणसी में।

उत्तर– (स) विक्रमशिला में।

(56) महात्मा बुद्ध को कहाँ ज्ञान प्राप्त हुआ था?
(अ) लुंबिनी में (ब) कुशीनगर में।
(स) सारनाथ में (द) बोधगया में।

उत्तर– (द) बोधगया में।

(57) जैन साहित्य किस भाषा में लिखे गए हैं?
(अ) प्राकृत (ब) हिन्दी
(स) संस्कृत (द) पाली।

उत्तर– (अ) प्राकृत।

(58) किस सिक्ख गुरु ने खालसा पंथ की स्थापना की थी?
(अ) गुरु अर्जुनदेव ने (ब) गुरु गोविन्द सिंह ने
(स) गुरु तेगबहादुर ने (द) गुरु नानकदेव ने।

उत्तर– (ब) गुरु गोविन्द सिंह ने।

(59) हिन्द भारत की जनता के संदर्भ में 'हिन्दू' शब्द का प्रथम बार प्रयोग किया था?
(अ) गुरु अंगद ने (ब) गुरु रामदास ने

(स) गुरु अमरदास ने (द) गुरुनानक ने।
उत्तर– (अ) गुरु अंगद ने।

(60) 'जियो और जीने दो' यह ध्येय वाक्य .... धर्म का है।
(अ) सिक्ख (ब) ईसाई
(स) बौद्ध (द) जैन।
उत्तर– (द) जैन।

(61) जैन धर्म में वस्तुओं के संग्रह नहीं करने पर उसे क्या कहते हैं?
(अ) परिग्रह (ब) अपरिग्रह
(स) फैलाना (द) जोड़ना।
उत्तर– (ब) अपरिग्रह।

(62) आदि ग्रंथ अथवा गुरु ग्रंथ साहिब का संकलन किया था–
(अ) गुरु तेगबहादुर ने (ब) गुरु नानकदेव ने
(स) गुरु अर्जुनदेव ने (द) गुरु गोविन्द सिंह ने।
उत्तर– (स) गुरु अर्जुनदेव ने।

(63) लंगर व्यवस्था शुरू करने का श्रेय किसे जाता है?
(अ) गुरु अर्जुनदेव (ब) गुरु गोविन्द सिंह
(स) गुरु तेगबहादुर (द) गुरु नानकदेव।
उत्तर– (द) गुरु नानकदेव।

(64) कौन–सा धर्म समस्त इन्द्रियों को जीत लेने के लिए शिक्षा देता है?
(अ) इस्लाम (ब) पारसी
(स) ईसाई (द) जैन।
उत्तर– (द) जैन।

(65) द्वैत सिद्धान्त के प्रतिपादक कौन थे?
(अ) शंकराचार्य (ब) माधवाचार्य
(स) रामकृष्ण परमहंस (द) स्वामी विवेकानन्द।
उत्तर– (अ) शंकराचार्य।

(66) पुरी में रथ यात्रा किसके सम्मान में निकाली जाती है?
(अ) भगवान जगन्नाथ के (ब) भगवान शिव के
(स) भगवान विष्णु के (द) भगवान राम के।
उत्तर– (अ) भगवान जगन्नाथ के।

(67) बुद्ध की शिक्षाओं का सार .... निहित है।
(अ) संघ में (ब) चार आर्य सत्यों में
(स) धम्मपद में (द) उपरोक्त सभी में।
उत्तर– (स) धम्मपद में।

(68) बुद्ध के अनुसार दुःख निरोध के कितने मार्ग हैं?
(अ) चार (ब) पाँच
(स) छः (द) आठ।
उत्तर– (अ) चार।

(69) पंचशील का सम्बन्ध किससे है?
(अ) सिक्ख धर्म से (ब) ईसाई धर्म से
(स) हिन्दू धर्म से (द) बौद्ध धर्म से।
उत्तर– (द) बौद्ध धर्म से।

(70) बौद्ध धर्म में कितने आर्य सत्य हैं?
(अ) तीन (ब) चार
(स) छः (द) आठ।
उत्तर– (ब) चार।

(71) बौद्ध धर्म में सबसे अधिक बल किस पर दिया गया है?
(अ) मद्य निषेध पर (ब) तृष्णा पर
(स) धूम्रपान निषेध पर (द) मांसाहार निषेध।
उत्तर– (अ) मद्य निषेध पर।

(72) बौद्ध धर्म का कौनसा सिद्धान्त प्रसिद्ध है?
(अ) सहनशील (ब) षटशील
(स) पंचशील (द) क्षमाशील।
उत्तर– (स) पंचशील।

(73) बौद्ध धर्म के अनुसार समस्त दुःखों का कारण .... है।
(अ) तृष्णा (ब) ईर्ष्या
(स) वैमनस्यता (द) सहनशीलता।
उत्तर– (अ) तृष्णा।

(74) बौद्ध धर्म में नैतिक कर्तव्य किसके प्रति बताए गए हैं?
(अ) वृद्धजन (ब) देश
(स) परिवार (द) समाज।
उत्तर– (स) परिवार।

(75) बौद्ध धर्म में दुःखों को त्याग करने का मार्ग कौनसा है?
(अ) मद्य निषेध मार्ग (ब) सुख निरोग मार्ग
(स) दुःख निषेध मार्ग (द) दुःख निरोग मार्ग।
उत्तर– (द) दुःख निरोग मार्ग।

(76) सिक्ख धर्म में कौनसा लंगर का उद्देश्य नहीं है?
(अ) भेदभाव (ब) मातृभाव
(स) नम्रता (द) समानता।
उत्तर– (अ) भेदभाव।

(77) गुरुनानक जी के उपदेशों में वंडछकों से क्या आशय है?
(अ) स्त्रीपुरुष की समानता में विश्वास
(ब) परमात्मा के नामों का स्मरण
(स) आजीविका ईमानदारी से कमाना।
(द) मिलजुलकर खाना और जरूरतमंदों की सेवा करना।
उत्तर– (द) मिलजुलकर खाना और जरूरतमंदों की सेवा करना।

(78) गुरुद्वारे की भोजन वितरण व्यवस्था को क्या कहते हैं?
(अ) लंगर (ब) भंडारा
(स) सहभोज (द) पंगत।
उत्तर– (अ) लंगर।

(79) गुरुनानक जी ने किन दो महत्वपूर्ण प्रथाओं का शुभारम्भ किया था?
(अ) पशु भोजन एवं सेवा (ब) ब्रह्मभोज एवं संगत
(स) पंगत और सहभोज (द) लंगर और सेवा।
उत्तर– (द) लंगर और सेवा।

(80) गुरुनानक जी स्त्री–पुरुष की .... पर विश्वास करते थे।
(अ) समानता (ब) असमानता
(स) वैमनस्यता (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (अ) समानता।

(81) 'सबके साथ मिल–जुल खाओ और जरूरतमंदों की सेवा व मदद करो' को गुरुनानक जी ने क्या नाम दिया है?
(अ) वंडछको (ब) लंगरछको
(स) छाछछको (द) छन्दछको।
उत्तर– (अ) वंडछको।

(82) गुरुनानक जी के अनुसार जगत में कितने परमात्मा हैं?
(अ) एक (ब) दो
(स) तीन (द) चार।
उत्तर– (अ) एक।

(83) सिक्ख धर्म के कितने सम्प्रदाय हैं?
(अ) अनेक (ब) अनंत
(स) चार (द) आठ।
उत्तर– (अ) अनेक।

(84) मसीही धर्म के अनुसार मनुष्य अपने मूल उद्देश्यों से क्यों भटक गया?
(अ) धनार्जन के कारण (ब) पाप के कारण
(स) धन लोभ के कारण (द) धर्मान्धता के कारण।
उत्तर– (ब) पाप के कारण।

(85) यीशु के अनुसार सबसे बड़ा दान .... है।
(अ) गौदान (ब) विद्यादान
(स) क्षमादान (द) धनदान।
उत्तर– (स) क्षमादान।

(86) यीशु के अनुसार सच्चे मसीही को .... होना नितान्त आवश्यक है।
(अ) दानवीर होना (ब) धनवान होना
(स) शिक्षित होना (द) अच्छा नागरिक होना।
उत्तर– (द) अच्छा नागरिक होना।

(87) मसीही धर्म के प्रवर्तक .... हैं।
(अ) श्री कृष्ण (ब) प्रभु ईशु
(स) श्री विष्णु (द) श्री राम।
उत्तर– (ब) प्रभु ईशु।

(88) मसीही धर्म का प्रमुख उद्देश्य .... है।
(अ) धनदान करना (ब) मानवीय समानता और एकता
(स) धनार्जन करना (द) विद्यादान करना।
उत्तर– (ब) मानवीय समानता और एकता।

(89) यीशु ने अपने संदेशों में ...., को रेखांकित किया है।
(अ) दुर्भावना की सोच (ब) मानवीय सोच
(स) कल्पनीय सोच (द) संकल्पशील सोच।
उत्तर– (ब) मानवीय सोच।

(90) मसीही धर्म में .... अति महत्वपूर्ण है।
(अ) शिक्षा (ब) धन
(स) एकता (द) नैतिकता।
उत्तर– (द) नैतिकता।

(91) यीशु के अनुसार नैतिक कर्म का मूल उद्देश्य कहाँ निहित होता है?
(अ) कर्ता के अन्दर (ब) परिवार के अन्दर
(स) घर के अन्दर (द) दुकान के अन्दर।
उत्तर– (अ) कर्ता के अन्दर।

(92) यीशु ने मनुष्य मात्र को .... प्रदान किया।
(अ) राजनीतिक दर्शन (ब) नूतन दर्शन
(स) सामाजिक दर्शन (द) परिवारिक दर्शन।
उत्तर– (ब) नूतन दर्शन।

(93) विश्व का प्राचीनतम दर्शन कौन–सा है?
(अ) योग (ब) सांख्य
(स) वैशेषिक (द) न्याय।

उत्तर– (अ) योग।

(94) सिंधु घाटी सभ्यता के लोग किस देवता की पूजा करते थे?

(अ) पशुपति (ब) विष्णु
(स) गणपति (द) बालाजी।

उत्तर– (अ) पशुपति।

(95) सायनागोग किसका धर्म या पूजा स्थल है?

(अ) पारसी (ब) हिन्दू
(स) यहूदी धर्म (द) मुस्लिम।

उत्तर– (स) यहूदी धर्म।

(96) इस्लाम धर्म के महत्वपूर्ण स्तम्भ कौनसे हैं?

(अ) नमाज (ब) हज
(स) रोजा (द) उपर्युक्त सभी।

उत्तर– (द) उपर्युक्त सभी।

(97) 'जकात' शब्द का मूल अर्थ है–

(अ) वंचित वर्ग की सहायता (ब) मानसिक शांति
(स) धन का समान वितरण (द) दान करना।

उत्तर– (अ) वंचित वर्ग की सहायता।

(98) इस्लामी पंचांग में रमजान के माह को क्या कहते हैं?

(अ) नौवाँ मास (ब) दसवाँ मास
(स) ग्यारहवाँ मास (द) बारहवाँ मास।

उत्तर– (अ) नौवाँ मास।

(99) 'तौहीद' का आशय होता है–

(अ) दान देना (ब) साक्षी देना
(स) देखना (द) शिक्षा देना।

उत्तर– (ब) साक्षी देना।

(100) 'ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी है।' यह ज्ञान प्राप्त होते ही मनुष्य किससे बचता है?

(अ) पुण्य कर्म से (ब) पाप कर्म से
(स) अनैतिक कर्म से (द) नैतिक कर्म से।

उत्तर– (ब) पाप कर्म से।

(101) अल्लाह के आदेश के समक्ष शीश झुकाने का आशय है–

(अ) शीर्षासन (ब) इस्लाम
(स) मयूरासन (द) सुखआसन।

उत्तर– (ब) इस्लाम।

(102) इस्लाम किसे मानता है?

(अ) सुखेश्वरवाद (ब) दुखेश्वरवाद
(स) सोमेश्वरवाद (द) एकेश्वरवाद।

उत्तर– (द) एकेश्वरवाद।

(103) इस्लाम धर्म के प्रमुख धर्म हैं–

(अ) पाँच (ब) सात
(स) दस (द) बारह।

उत्तर– (अ) पाँच।

(104) दीन–ए–इलाही धर्म प्रवर्तित किया था–

(अ) अकबर ने (ब) औरंगजेब ने
(स) शाहजहाँ ने (द) जहाँगीर ने।

उत्तर– (अ) अकबर ने।

(105) 'ऐनालेक्ट्स' किस धर्म का पवित्र ग्रंथ है?

(अ) मुस्लिम धर्म का (ब) जीजस धर्म का
(स) बौद्ध धर्म का (द) कन्फ्यूशियस धर्म का।

उत्तर– (द) कन्फ्यूशियस धर्म का।

(106) भगवान बुद्ध ने अपना पहला धर्मोपदेश कहाँ पर दिया था?

(अ) बोधगया में (ब) अजमेर में
(स) साँची में (द) सारनाथ में।

उत्तर– (द) सारनाथ में।

(107) हजरत मौहम्मद साहब की जीवनी किसने लिखी थी?

(अ) बादशाह जफर ने (ब) इबन ईशाक ने
(स) मोहम्मद बिन कासिम ने (द) इल्तुतमिश ने।

उत्तर– (ब) इबन ईशाक ने।

(108) हजरत मौहम्मद के पवित्र वाक्य व उपदेश किस पुस्तक में संकलित हैं?

(अ) कलमा में (ब) कुरान में
(स) पाक में (द) हदीस में।

उत्तर– (द) हदीस में।

(109) 'इस्लाम' किस भाषा का शब्द है?

(अ) उर्दू (ब) पारसी
(स) अरबी (द) हीबरू।

उत्तर– (स) अरबी।

(110) इस्लाम में रोजा का अर्थ है–

(अ) उपवास करना (ब) भजन करना
(स) हज पर जाना (द) नमाज पढ़ना।

उत्तर– (अ) उपवास करना।

(111) इस्लाम में हज का अर्थ है–

(अ) विदेश यात्रा करना (ब) उपवास करना

(स) तीर्थ यात्रा करना (द) दान देना।

उत्तर– (स) तीर्थ यात्रा करना।

इकाई-3

(1) वाक्य रचना एवं अशुद्धि शोधन

लघु उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न–1. वाक्य–रचना से आप क्या समझते हैं? वाक्य रचना के घटक बताइये तथा वाक्य की परिभाषा लिखिये।

अथवा

वाक्य की परिभाषा एवं उसका आशय स्पष्ट कीजिये।

अथवा

वाक्य की परिभाषा लिखिये।

अथवा

वाक्य किसे कहते हैं? परिभाषा लिखकर स्पष्ट कीजिये।

उत्तर– भाषा की अभिव्यक्ति का आधार व्याकरणसम्मत वाक्य है। भाषा की लघुतम इकाई 'शब्द' है। ध्वनि–समूह शब्द बनाते हैं। शब्दों के सार्थक, क्रमबद्ध और उचित संचयन से वाक्य बनता है। भाषा की वास्तविक इकाई वाक्य है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि, 'वाक्य सार्थक एवं उचित शब्दों का वह समूह है जिसमें कम से कम कर्त्ता और क्रिया दोनों ही होते हैं।'

वाक्य की सम्पूर्ण रचना तभी सार्थक होगी, जब उसमें क्रमबद्धता एवं सुसंगतता हो और उसमें व्याकरण–सम्बन्धी दोष न हों। उसमें शब्दों का उचित, समयानुकूल व भावानुकूल प्रयोग हो। औचित्य का भी विशेष ध्यान रखा जाये। अतः वाक्य की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है– ''मुख से निकलने वाली सार्थक ध्वनियों का वह समूह जिससे व्यक्ति की आकांक्षाओं, विचारधाराओं और भावनाओं का दिग्दर्शन होता है, वाक्य कहलाता है।''

स्मरण रहे कि रचना के आधार पर वाक्य के दो आवश्यक अंग हैं– कर्त्ता और क्रिया। तीसरा घटक कर्म है। कर्त्ता, कर्म और क्रिया का विस्तार होता है। कर्त्ता और कर्म दो–दो भी हो सकते हैं। एक प्रधान और दूसरा गौण होता है। उदाहरणार्थ– 'राम और कृष्ण पूज्य हैं।' (दो कर्त्ता)। 'मैंने सुधा को आम दिये।' इस वाक्य में आम प्रधान कर्म और सुधा गौण कर्म है।

प्रश्न–2. वाक्य के अवयवों को उदाहरण सहित समझाइये।

उत्तर–

वाक्य के अवयव	
उद्देश्य	विधेय

(1) **उद्देश्य**– वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जा रहा हो या बताया जा रहा हो, उसे उद्देश्य कहते हैं। मुख्य रूप से कर्ता ही वाक्य का उद्देश्य होता है, जैसे–

(1) चिड़ियों ने दाने चुग लिये।

(2) छोटे बच्चे को पानी पिला दो।

यहाँ चिड़ियों तथा छोटे बच्चे के विषय में कुछ कहा जा रहा है, इसलिये ये ही उद्देश्य हैं।

(2) **विधेय**– वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं। साधारण रूप में क्रिया ही वाक्य का विधेय होता है, जैसे–

(1) समाचार–पत्र में अनोखी घटना छपी है।

(2) सुमित साइकिल चला रहा है।

इन वाक्यों में अनोखी घटना छपी है तथा साइकिल चला रहा है में क्रमशः समाचार–पत्र (उद्देश्य) तथा सुमित (उद्देश्य) के बारे में कहा गया है, अतः ये विधेय हैं।

प्रश्न–3. सरल वाक्य किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइये।

अथवा

सरल वाक्य की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिये।

उत्तर– जिन वाक्यों में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है अथवा एक समापिका, क्रियासहित एक कर्त्ता पदबन्ध होता है वे सरल वाक्य कहलाते हैं। यथा– वह मंत्रीजी का भानजा है। स्कूटर खराब है। (सरल वाक्य)। वह सो रहा है। बुनकर काम कर रहे हैं। (व्यापार बोधक सरल वाक्य)

प्रश्न–4. मिश्रित वाक्य किसे कहते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिये।

उत्तर– मिश्र वाक्य में एक से अधिक उपवाक्य संयोजित रहते हैं, परन्तु रचना और अर्थ की दृष्टि से वे संयुक्त वाक्य की तरह स्वतंत्र नहीं होते। मिश्र वाक्य में एक प्रमुख उपवाक्य होता है और अन्य गौण या आश्रित उपवाक्य होते हैं। अर्थ की दृष्टि से गौण या आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य पर निर्भर रहता है। यथा–

जब वर्षा होगी, तब काम बंद रहेगा।

जहाँ मैं पहुँचा हूँ, वहाँ तुम कभी नहीं पहुँच सकते।

प्रश्न–5. संयुक्त वाक्य किसे कहते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिये।

उत्तर– **संयुक्त वाक्य**– संयुक्त वाक्य में दो सरल वाक्य किसी संयोजक से जुड़े रहते हैं, लेकिन अर्थ की दृष्टि से एक–दूसरे पर निर्भर न होकर स्वतंत्र होते हैं। यथा–

1. कक्षा में छात्र नहीं थे। कक्षा में अध्यापक नहीं थे। (दोनों सरल वाक्य)

कक्षा में न छात्र थे, न अध्यापक। (संयुक्त वाक्य)

2. मैं आ रहा था। वे जा रहे थे। (दोनों सरल वाक्य)
मैं आ रहा था और वे जा रहे थे। (संयुक्त वाक्य)

ये वाक्य या, अथवा, कि, अगर, मगर, परन्तु, लेकिन, फिर, तथा, और, पर आदि संयोजकों से जुड़े रहते हैं।

रचना की दृष्टि से संयुक्त वाक्य के दो प्रकार हैं–

(अ) पूर्ण सरल वाक्य– जहाँ संयोजक शब्द को अलग कर देने पर दो पूर्ण सरल वाक्य अलग हो जाते हैं। यथा–

1. उसने कार्यभार ग्रहण किया कि मैं कार्यमुक्त हुआ।
   उसने कार्यभार ग्रहण किया। मैं कार्यमुक्त हुआ।
2. मैं पहुँचा और वह चल दिया। मैं पहुँचा। वह चल दिया।

(ब) एक पूर्ण उपवाक्य दूसरा अध्याहार– जहाँ एक पूर्ण उपवाक्य में दूसरे उपवाक्य का अध्याहार हो गया हो। यथा– तुम चाय पीओगे कि कॉफी? राम और श्याम आगरा गये। इस अध्याहार के स्थान पर दो स्वतंत्र उपवाक्य इस तरह होंगे– तुम चाय पीओगे? तुम कॉफी पीओगे? राम आगरा गया। श्याम आगरा गया।

अर्थ की दृष्टि से संयुक्त वाक्य के तीन भेद हैं–

(अ) योगात्मक संयुक्त वाक्य– इसमें दोनों उपवाक्य समाहारपरक संयोजक से जुड़ते हैं। ये समानाधिकरण उपवाक्य हैं और समान अर्थ को प्रकट करते हैं। ये उपवाक्य– और, एवं, फिर, कि, वरन् तो आदि संयोजक अव्ययों से संयोजित होते हैं। जैसे–

चित्र सुन्दर ही नहीं वरन् भावमय भी हैं।

(ब) विकल्पात्मक– इसमें समानाधिकरण विकल्पात्मक संयोजक से जुड़ा होता है। इसमें न–न, कि, या, चाहे आदि संयोजक अव्यय प्रयुक्त रहते हैं। जैसे–

1. न तो मान मिला, न ही धनलाभ हुआ।
2. चाहे तुम आओ या किसी को भेजो।

(स) विरोधमूलक– एक उपवाक्य का विरोधसूचक दूसरा उपवाक्य कारण या विवशता–सूचक संयोजक अव्ययों– पर, परन्तु, लेकिन, बल्कि, किन्तु, मगर आदि से योजित रहता है। जैसे–

1. मैं आ तो गया हूँ, पर काम करने का मन नहीं है।
2. लड़ाई जोरदार होती, मगर पुलिस ने हस्तक्षेप कर दिया।

प्रश्न–6. अशुद्धियाँ अथवा त्रुटियाँ कितने प्रकार की होती हैं? विस्तार से लिखिये।

अथवा

अशुद्धियाँ से क्या आशय है?

अथवा

अशुद्धियाँ कितने प्रकार की होती हैं? हिन्दी में होने वाली अशुद्धियों के दो–दो उदाहरण लिखिये।

उत्तर– अशुद्धियाँ निम्नांकित प्रकार की होती हैं–

(1) उच्चारणगत और वर्तनीगत अशुद्धियाँ– जो अशुद्धियाँ वर्णों तथा शब्दों के दोषपूर्ण उच्चारण से होती हैं, उन्हें उच्चारणगत अशुद्धियाँ कहते हैं। ये अशुद्धियाँ स्वर व व्यंजन से सम्बन्धित होती हैं, जैसे– दूध–दुध, कवि–कबी।

(2) शब्दगत अशुद्धियाँ– तत्सम शब्दों के स्थान पर तद्भव, देशज व अन्य प्रकार से बने शब्दों का प्रयोग जैसे– शूल–सूल, श्वसुर–ससुर, श्यामल– सांवला।

(3) शब्दार्थगत अशुद्धियाँ– शब्दों के सही अर्थ न मालूम होने की स्थिति में उनका गलत प्रयोग हो जाता है तथा उनके गलत प्रयोग से भाषा दोषपूर्ण हो जाती है। जैसे–

अशुद्ध वाक्य– नौकर आटा पिसवाने गया है।
शुद्ध वाक्य– नौकर गेहूँ पिसवाने गया है।
अशुद्ध वाक्य– राम एक फूलों की माला बाजार से लाया है।
शुद्ध वाक्य– राम बाजार से फूलों की एक माला लाया।

(4) वाक्यगत अशुद्धियाँ– वाक्य के निर्माण में व्याकरण का ध्यान न रखा जायें तो वाक्य अशुद्ध होता है। जैसे–

अशुद्ध वाक्य– भिखारियों को अन्न लाओ।
शुद्ध वाक्य– भिखारियों के लिये अन्न लाओ।
अशुद्ध वाक्य– उनको रोटी खाने की इच्छा नहीं है।
शुद्ध वाक्य– उनकी रोटी खाने की इच्छा नहीं है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न–1. रचना के आधार पर वाक्यों के प्रकार उदाहरण सहित लिखिये।

अथवा

रचना की दृष्टि से वाक्य कितने प्रकार के होते हैं? उदाहरण सहित लक्षण स्पष्ट कीजिये।

अथवा

रचना के आधार पर वाक्यों का परिचय दीजिये।

उत्तर– अर्थ की दृष्टि से वाक्य एक पूर्ण इकाई है। जो शब्द अर्थयुक्त होते हैं परन्तु अर्थ की पूर्णता वाक्य में प्रयुक्त होकर ही दे पाते हैं। इसीलिये भाषा की सबसे छोटी अर्थवती इकाई वाक्य है। नाट्य संवादों में प्रायः एक क्रिया या संज्ञापद ही पूर्ण वाक्य का अर्थ देते हैं। परन्तु उनके साथ लुप्त क्रियापद या संज्ञापद का पूर्व संदर्भ रहता है। इसीलिये श्रोता आसानी से उसका पूर्ण अर्थ समझ लेता है। वाक्य में दो पद अनिवार्य हैं– संज्ञापद और क्रियापद। संज्ञापद या पदबंध की रचना में पुरुष, वचन, लिंग एवं कारक की सक्रिय भूमिका रहती है। इसी तरह क्रियापद या पदबंध की रचना में काल, वृत्ति, पक्ष और वाच्य की सक्रिय भूमिका होती है। संक्षेपतः यह कहा जा सकता है कि वाक्य संज्ञापद (उद्देश्य) और क्रियापद (विधेय) का योग है। रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं–

(1) सरल वाक्य– जिन वाक्यों में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है अथवा एक समापिका, क्रियासहित एक कर्त्ता पदबन्ध होता है वे सरल वाक्य कहलाते हैं। यथा– वह

मंत्रीजी का भानजा है। स्कूटर खराब है। (सरल वाक्य)। वह सो रहा है। बुनकर काम कर रहे हैं। (व्यापार बोधक सरल वाक्य)

(2) **संयुक्त वाक्य–** संयुक्त वाक्य में दो सरल वाक्य किसी संयोजक से जुड़े रहते हैं, लेकिन अर्थ की दृष्टि से एक–दूसरे पर निर्भर न होकर स्वतंत्र होते हैं। यथा–

1. कक्षा में छात्र नहीं थे। कक्षा में अध्यापक नहीं थे। (दोनों सरल वाक्य)
   कक्षा में न छात्र थे, न अध्यापक। (संयुक्त वाक्य)
2. मैं आ रहा था। वे जा रहे थे। (दोनों सरल वाक्य)
   मैं आ रहा था और वे जा रहे थे। (संयुक्त वाक्य)

ये वाक्य या, अथवा, कि, अगर, मगर, परन्तु, लेकिन, फिर, तथा, और, पर आदि संयोजकों से जुड़े रहते हैं।

रचना की दृष्टि से संयुक्त वाक्य के दो प्रकार हैं–

(अ) **पूर्ण सरल वाक्य–** जहाँ संयोजक शब्द को अलग कर देने पर दो पूर्ण सरल वाक्य नग हो जाते हैं। यथा–

1. उसने कार्यभार ग्रहण किया कि मैं कार्यमुक्त हुआ।
   उसने कार्यभार ग्रहण किया। मैं कार्यमुक्त हुआ।
2. मैं पहुँचा और वह चल दिया। मैं पहुँचा। वह चल दिया।

(ब) **एक पूर्ण उपवाक्य दूसरा अध्याहार–** जहाँ एक पूर्ण उपवाक्य में दूसरे उपवाक्य का अध्याहार हो गया हो। यथा– तुम चाय पीओगे कि कॉफी ? राम और श्याम आगरा गये। इस अध्याहार के स्थान पर दो स्वतंत्र उपवाक्य इस तरह होंगे– तुम चाय पीओगे ? तुम कॉफी पीओगे ? राम आगरा गया। श्याम आगरा गया।

अर्थ की दृष्टि से सयुक्त वाक्य के तीन भेद हैं–

(अ) **योगात्मक संयुक्त वाक्य–** इसमें दोनों उपवाक्य समाहारपरक संयोजक से जुड़ते हैं। ये समानाधिकरण उपवाक्य हैं और समान अर्थ को प्रकट करते हैं। ये उपवाक्य– और, एवं, फिर, कि, वरन् तो आदि संयोजक अव्ययों से संयोजित होते हैं। जैसे–

चित्र सुन्दर ही नहीं वरन् भावमय भी हैं।

(ब) **विकल्पात्मक–** इसमें समानाधिकरण विकल्पात्मक संयोजक से जुड़ा होता है। इसमें न–न, कि, या, चाहे आदि संयोजक अव्यय प्रयुक्त रहते हैं। जैसे–

1. न तो मान मिला, न ही धनलाभ हुआ।
2. चाहे तुम आओ या किसी को भेजो।

(स) **विरोधमूलक–** एक उपवाक्य का विरोधसूचक दूसरा उपवाक्य कारण या विवशता–सूचक संयोजक अव्ययों– पर, परन्तु, लेकिन, बल्कि, किन्तु, मगर आदि से योजित रहता है। जैसे–

1. मैं आ तो गया हूँ, पर काम करने का मन नहीं है।
2. लड़ाई जोरदार होती, मगर पुलिस ने हस्तक्षेप कर दिया।

(3) **मिश्र वाक्य–** मिश्र वाक्य में एक से अधिक उपवाक्य संयोजित रहते हैं, परन्तु रचना और अर्थ की दृष्टि से वे संयुक्त वाक्य की तरह स्वतंत्र नहीं होते। मिश्र वाक्य में एक

प्रमुख उपवाक्य होता है और अन्य गौण या आश्रित उपवाक्य होते हैं। अर्थ की दृष्टि से गौण या आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य पर निर्भर रहता है। यथा–

जब वर्षा होगी, तब काम बंद रहेगा।

जहाँ मैं पहुँचा हूँ, वहाँ तुम कभी नहीं पहुँच सकते।

इन गौण या आश्रित उपवाक्यों के तीन प्रकार हैं–

(अ) **संज्ञा–उपवाक्य–** ये उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की संज्ञा के पूरक या समानाधिकरण होते हैं। इनका आरम्भ 'कि' से होता है। यथा–

1. मैं नहीं जानता कि वह कहाँ छिपा है ?
2. बाईबिल कहती है कि मनुष्य से प्रेम करना सीखो।

(ब) **विशेषण–उपवाक्य–** जब आश्रित उपवाक्य विशेषण की तरह प्रयुक्त हो। यथा–

1. जो टोपी पहने हुये है, वही यहाँ का नेता है।
2. जो आया है, वह जायेगा भी।

(स) **क्रिया–विशेषण–उपवाक्य–** जब आश्रित उपवाक्य क्रिया–विशेषण की तरह प्रयुक्त हो।

यथा– 1. जिधर ढलान होता है, उधर पानी बहता है।
2. जहाँ सम्मान मिलता है, वहाँ रुकने की इच्छा होती है।

आधुनिक भाषा–वैज्ञानिक शब्दावली में इन सम्बन्धों को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है–

(1) **विशेष्य–विशेषक सम्बन्ध–** इसमें एक विशेषक आश्रित उपवाक्य होता है और एक प्रमुख विशेष्य–उपवाक्य। यथा–

(अ) जो आया है, सो जायेगा। (प्रथम विशेषक + विशेष्य)

(2) **क्रियामूलक और क्रियामूलक कर्म सम्बन्ध–** इसमें मुख्य उपवाक्य क्रियामूलक और आश्रित उपवाक्य क्रियामूलक कर्म होता है। यथा–

(अ) उसने देखा कि मजदूरों की पिटाई हो रही है।

(ब) उसे लगा कि कोई उसे उड़ाये ले जा रहा है।

(3) **क्रियार्थमूलक और क्रिया–विशेषण सम्बन्ध–** इसमें मुख्य उपवाक्य क्रियार्थमूलक और गौण उपवाक्य क्रिया–विशेषणपरक होता है। क्रिया–विशेषण रीति, समय, शर्त, स्थानवाचक होते हैं, इसीलिये उन्हें रीति क्रिया–विशेषण, स्थान–क्रिया–विशेषण कहते हैं। कतिपय उदाहरण–

(अ) आज जहाँ अट्टालिका खड़ी है, (स्थान क्रिया विशेषण)
कल वहाँ झोंपड़ियाँ थीं। (क्रियार्थमूलक मुख्य उपवाक्य)

(ब) यदि तुम चले जाओ, (शर्त क्रिया विशेषण)
तो काम हो जायेगा। (क्रियार्थमूलक मुख्य उपवाक्य)

प्रश्न–2. अर्थ के आधार पर वाक्यों के प्रकार उदाहरण सहित लिखिये।

अथवा

अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद होते हैं? उदाहरण सहित समझाइये।

अर्थ के अनुसार वाक्य के प्रकार उदाहरण सहित लिखिये।

उत्तर– अर्थ के अनुसार वाक्य के आठ भेद माने गये हैं। ये हैं–

(1) विधिवाचक, (2) निषेधात्मक, (3) आज्ञावाचक, (4) प्रश्नवाचक, (5) विस्मयवाचक, (6) संदेहवाचक, (7) इच्छावाचक, (8) संकेतवाचक।

(1) **विधिवाचक वाक्य–** जिस वाक्य से किसी बात या काम के होने का बोध होता है, वह वाक्य विधि वाचक या विधानवाचक कहलाता है।

(1) उसने खाना खाया।

(2) महाराणा प्रताप जीवन–भर मुगलों से संघर्ष करते रहे।

(2) **निषेधवाचक या नकारात्मक वाक्य–** जिस वाक्य में किसी कार्य के न होने का बोध होता है, उसे निषेधवाचक या नकारात्मक वाक्य कहते हैं। यथा–

(अ) लड़कियों ने गाना नहीं गाया।

(ब) महात्मा गाँधी पाकिस्तान नहीं बनने देना चाहते थे।

(3) **आज्ञा या आदेशवाचक वाक्य–** जिस वाक्य से किसी कार्य के लिये आज्ञा, आदेश या प्रेरणा का बोध होता है उसे आज्ञा या आदेशवाचक वाक्य कहते हैं।

(अ) बैठ जाइये और हाथ जोड़िये।

(ब) राष्ट्र–रक्षा के लिये सैनिकों को सदा तैयार रहना चाहिये।

(4) **प्रश्नवाचक वाक्य–** जिस वाक्य से किसी बात के पूछे जाने का बोध होता है, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं। यथा–

(अ) आप क्या खा रहे हैं? (ब) सचिन तेंदुलकर ने कितने छक्के मारे?

(5) **विस्मयवाचक वाक्य–** जिस वाक्य से आश्चर्य या विस्मय के भाव का बोध होता है, उसे विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं। यथा–

(अ) अरे ! वह बहुत धूर्त है। (ब) वाह! आपकी वीरता सर्वत्र सराही जा रही है।

(6) **इच्छावाचक वाक्य–** जिस वाक्य से किसी की इच्छा या आशीर्वाद का बोध होता है, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं। यथा–

(अ) ईश्वर सबका भला करे। (ब) आप अपनी यात्रा से सकुशल लौटें।

(7) **सन्देहवाचक वाक्य–** जिस वाक्य से सन्देह या सम्भावना का बोध होता है, उसे सन्देहवाचक वाक्य कहते हैं। यथा–

(अ) यदि मुख्य मन्त्री स्वस्थ होते तो सभा में अवश्य आते।

(ब) सम्भव है, आज वह न जाये।

(8) **संकेतवाचक वाक्य–** जिस वाक्य से संशयपूर्ण अर्थ का बोध न होकर संकेतमात्र का होता है, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं। यथा–

(अ) वह पढ़ता तो उत्तीर्ण हो जाता।

(ब) यदि पाकिस्तान भारत के प्रति सद्भावनापूर्ण रवैया अपनाये तो भारत भी अपनायेगा।

प्रश्न–3. वाक्य संरचना के बारे में अवयव तथा वाक्य उपवाक्य के बारे में लिखिये।

अथवा

उपवाक्य किसे कहते हैं? वे कितने प्रकार के होते हैं? उदाहरण देकर समझाइये।

उत्तर–

वाक्य के अवयव

↙ ↘

उद्देश्य | **विधेय**

(1) **उद्देश्य–** वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जा रहा हो या बताया जा रहा हो, उसे उद्देश्य कहते हैं। मुख्य रूप से कर्ता ही वाक्य का उद्देश्य होता है, जैसे–

(1) <u>चिड़ियों</u> ने दाने चुग लिये। (2) <u>छोटे बच्चे</u> को पानी पिला दो।

यहाँ <u>चिड़ियों</u> तथा <u>छोटे बच्चे</u> के विषय में कुछ कहा जा रहा है, इसलिये ये ही उद्देश्य हैं।

(2) **विधेय–** वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं। साधारण रूप में क्रिया ही वाक्य का विधेय होता है, जैसे–

(1) समाचार–पत्र में <u>अनोखी घटना छपी है।</u>

(2) सुमित <u>साइकिल चला रहा है।</u>

इन वाक्यों में <u>अनोखी घटना छपी है</u> तथा <u>साइकिल चला रहा है</u> में क्रमशः समाचार–पत्र (उद्देश्य) तथा सुमित (उद्देश्य) के बारे में कहा गया है, अतः ये विधेय हैं।

उद्देश्य का विस्तार– कर्ता के साथ विशेषण शब्द जुड़कर उद्देश्य को विस्तार प्रदान करते हैं, जैसे–

(1) <u>बालक</u> खेल रहा है।
↓
उद्देश्य

(2) <u>एक नटखट बालक</u> खेल रहा है।
↓
उद्देश्य का विस्तार

(3) <u>घोड़ा</u> सरपट दौड़ रहा है।
↓
उद्देश्य

(4) <u>काला घोड़ा</u> सरपट दौड़ रहा है।
↓
उद्देश्य का विस्तार

विधेय का विस्तार

विशेषण, कर्म, क्रियाविशेषण आदि शब्द विधेय को विस्तार देते हैं, जैसे–

(1) नवनीत पढ़ रहा है।

↓

विधेय

(2) नवनीत रोचक कहानियाँ पढ़ रहा है।

↓

विधेय का विस्तार

(3) नवनीत ध्यानपूर्वक पुस्तक पढ़ रहा है।

↓

विधेय का विस्तार

उपवाक्य

जब पूरा भाव व्यक्त करने के लिये एक से अधिक अपूर्ण वाक्यों का प्रयोग किया जाता है तो इनमें से प्रत्येक वाक्य उपवाक्य कहलाता है। यह दो प्रकार के होते हैं–

(1) मुख्य उपवाक्य,

(2) आश्रित उपवाक्य।

(1) **मुख्य उपवाक्य–** मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय से बने उपवाक्य को मुख्य उपवाक्य कहते हैं; जैसे– 'जब लड़का पाँच बरस का हुआ तब पिता ने उसे विद्यालय भेजा।'

इस उदाहरण में 'तब पिता ने उसे विद्यालय भेजा' प्रधान उपवाक्य है।

(2) **आश्रित उपवाक्य–** आश्रित उपवाक्य स्वयं सार्थक न होकर मुख्य उपवाक्य के साथ आने से सार्थक हो जाते हैं। अर्थात् ये मुख्य उपवाक्य के साथ सार्थक होते हैं; जैसे–

'जब लड़का पाँच बरस का हुआ तब पिता ने उसे विद्यालय भेजा।'

इस वाक्य में 'जब लड़का पाँच बरस का हुआ' आश्रित उपवाक्य है।

प्रश्न–4. अशुद्धियों के विभिन्न प्रकार उदाहरण सहित लिखिये।

उत्तर–

उच्चारणगत अशुद्धियाँ

उच्चारण का सम्बन्ध बोलने से है तथा वर्तनी का सम्बन्ध लिखने से है। जो अशुद्धियाँ वर्णों तथा शब्दों के दोषपूर्ण उच्चारण से होती हैं, उन्हें उच्चारणगत अशुद्धियाँ कहते हैं। इसी प्रकार जो अशुद्धियाँ वर्णों, मात्राओं तथा शब्दों के दोषपूर्ण लेखन से होती हैं, उन्हें वर्तनीगत अशुद्धियाँ कहते हैं। हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। उसमें प्रत्येक ध्वनि को बिल्कुल सही–सही रूप में लिखने की क्षमता तो है ही साथ ही उसमें एक ध्वनि को व्यक्त करने के लिये एक ही लिपि चिन्हित है। अंग्रेजी के प्रभाव से योग का योगा, अशोक का अशोका बोलना और लिखना अशुद्ध है।

प्रायः विद्यार्थी निम्नलिखित वर्णों के बोलने एवं लिखने में अशुद्धियाँ करते हैं–

(1) **'ण' और 'न' की अशुद्धियाँ–** 'ण' अधिकतर तत्सम शब्दों में प्रयोग किया जाता है, उनके तद्भव रूप बनाते समय 'ण' के स्थान पर 'न' प्रयुक्त होता है। जैसे– रण– रन, फण– फन, कण– कन, विष्णु– विसनू।

(2) **'छ' और 'क्ष' की अशुद्धि–** 'छ' एक स्वतन्त्र व्यंजन है जबकि 'क्ष' संयुक्त व्यंजन है। 'क्ष' व्यंजन 'क्' और 'ष' के मेल से बनता है। इसका प्रयोग प्रायः संस्कृत शब्दों में होता है, जैसे– शिक्षा, दीक्षा, समीक्षा, प्रतीक्षा आदि।

(3) **'ब' और 'व' का प्रयोग–** 'ब' और 'व' के प्रयोग में प्रायः अशुद्धियाँ होती हैं। शुद्ध उच्चारण के आधार पर ही 'ब' और 'व' में भेद किया जाता है। संस्कृत के 'ब' वाले कुछ शब्द हैं– बन्धु, बन्ध, बर्बर, ब्राह्मण। संस्कृत के 'व' वाले शब्द हैं– वंश, वाक्, वक्र, वंचना आदि। प्राय 'व' का 'ब' होने पर या 'ब' का 'व' होने पर अर्थ बदल जाता है। जैसे– वह– बह, शव– शब, रव– रब, वार– बार, वली– बली, वाद– बाद, वात–वात, बे–वे, बाला–वाला।

(4) **'श', 'ष' और 'स' का प्रयोग–** 'श','ष' और 'स' भिन्न–भिन्न व्यंजन हैं। इन तीनों की उच्चारण प्रक्रिया भी अलग–अलग है। 'श' का उच्चारण तालु से होने के कारण तालव्य 'ष' का उच्चारण मूर्धा से होने से मूर्धन्य तथा 'स' का उच्चारण दाँतों से होने के कारण दन्त्य कहलाता है।

'ष' केवल संस्कृत शब्दों में आता है, जैसे– सन्तोष, भाषा, गवेषणा, द्वेष, मूषक। जिन संस्कृत शब्दों की मूल धातु में 'ष' होता है, उनसे बने शब्दों में भी 'ष' रहता है। जैसे– 'शिष्' धातु से शिष्य, शिष्ट आदि। इनके उच्चारण में निम्नलिखित बातों की सावधानी रखनी चाहिये–

1. सन्धि करने में क, ख, ट, ठ, प, फ के पूर्व आये हुये विसर्ग (:) के स्थान पर सदैव 'ष' होता है।
2. यदि किसी शब्द में 'स' हो और उसके पूर्व 'अ' या 'आ' के अलावा कोई भिन्न स्वर हो तो 'स' के स्थान पर 'ष' हो जाता है।
3. 'ट' वर्ग के पूर्व केवल 'ष' आता है। जैसे– षोड्श, षडानन, कष्ट, नष्ट।
4. ऋ के बाद प्रायः 'ष' ही आता है। जैसे– ऋषि, कृषि, दृष्टि, तृषा।
5. संस्कृत शब्दों में च, छ के पूर्व 'श' ही आता है। जैसे– निश्चय, निश्चल।
6. जहाँ 'श' और 'स' एक साथ प्रयुक्त होते हैं, वहाँ 'श' पहले आता है। जैसे– शासन, शासक, प्रशंसा, नृशंस।
7. जहाँ 'श' 'ष' एक साथ आते हैं, वहाँ 'श' के पश्चात 'ष' आता है। जैसे– शोषण, शीर्षक, शेष, विशेष इत्यादि।
8. उपसर्ग के रूप में निः, विः आदि आने पर मूल शब्द का 'स' पूर्ववत् बना रहता है। जैसे– निःसंशय, निः सन्देह।
9. यदि तत्सम में 'श' हो तो उसके तद्भव में 'स' होता है। जैसे– शूली–सूली, शाक–साग, शूकर–सुअर, श्वसुर–ससुर, श्यामल–साँवल।

10. कुछ शब्दों के रूप वैकल्पिक होते हैं। जैसे- कोश–कोष, केशर–केसर, कौशल्या–कौसल्या, केशरी–केसरी, वशिष्ठ– वसिष्ठ आदि। हिन्दी में ये दोनों रूप शुद्ध हैं।

वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ

यदि उच्चारण शुद्ध हो तो अशुद्ध लेखन हो ही नहीं सकता। वर्तनी का सही अभ्यास प्रारम्भ से ही होता है। अभ्यास से वर्तनी शुद्ध होती है। प्रायः मराठी व गुजराती मातृभाषा वाले छात्र उच्चारण के कारण ह्रस्व व दीर्घ की वर्तनी में अशुद्धियाँ करते हैं। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध
मैं गया हि नहि था।	मैं गया ही नहीं था।
मेने दुध नहि पीया।	मैंने दूध नहीं पिया।
कासी से नहीं बोला।	किसी से नहीं बोला।
लडकीयाँ उसे भी डांटती हैं।	लड़कियाँ उसे भी डाटती हैं।

लेखन में वर्तनी की कुछ प्रमुख अशुद्धियाँ निम्नानुसार हैं–

(i) अनुस्वार तथा चन्द्र बिन्दु की अशुद्धियाँ–

शुद्ध	अशुद्ध
हँसी	हंसी
फाँसी	फांसी
खाँसी	खांसी
चाँदनी	चांदनी
आँधी	आंधी
दाँत	दांत।

(ii) अनुस्वार के स्थान पर चन्द्रानुसार अशुद्ध होता है–

शुद्ध	अशुद्ध
ठंड	ठँड
वंश	वँश

वचनगत अशुद्धियाँ

एकवचन के रूपों से बहुवचन बनाने में जो त्रुटियाँ होती हैं, उन्हें वचनगत अशुद्धि कहते हैं।

अशुद्ध	शुद्ध
चार बजा है।	चार बजे हैं।
हम और तुम घूम रहा है।	हम और तुम घूम रहे हैं।
वीणा और रामू खेलने गया है।	वीणा और रामू खेलने गये हैं।
भगवान के अनेकों नाम हैं।	भगवान के अनेक नाम हैं।

विशेषण सम्बन्धी अशुद्धियाँ

संज्ञा के समान ही विशेषण के प्रयोग में भी अशुद्धियाँ होती हैं। ये सह प्रयोग की भी अशुद्धियाँ होती हैं।

अशुद्ध	यह गन्ने की शुद्ध दुकान है।
शुद्ध	यह शुद्ध गन्ने की दुकान है।
अशुद्ध	सभी बच्चे अपने–अपने स्थान पर बैठे हैं।
शुद्ध	सभी बच्चे अपने स्थान पर बैठे हैं।
अशुद्ध	दाल मोटी है।
शुद्ध	दाल गाढ़ी है।
अशुद्ध	भारी भूख लगी है।
शुद्ध	बहुत भूख लगी है।
अशुद्ध	बुद्धि पतली है।
शुद्ध	बुद्धि सूक्ष्म है।
अशुद्ध	वैसा कर्मठ किधर है ?
शुद्ध	वैसा कर्मठ कौन है ?

लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ

पुरुषों के लिये पुल्लिंग, स्त्रियों के लिये स्त्रीलिंग तथा जो शब्द आवश्यकतानुसार दोनों लिंगों में प्रयोग किये जाते हैं, उन्हें उभयलिंग कहते हैं। इनका प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिये।

(1) संज्ञा शब्दों के लिंग में परिवर्तन होता है। निम्नलिखित शब्दों में हमेशा गलती हो जाती है।

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
कवि	कवयित्री	विद्वान्	विदुषी
छात्र	छात्रा	युवक	युवती
घोड़ा	घोड़ी	पाठक	पाठिका

लिंग प्रत्यय सम्बन्धी अशुद्धियाँ–

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
नारी	नारि	प्रेयसी	प्रेयसि
अनाथा	अनाथिनी	सुलोचना	सुलोचनी
दिगम्बरा	दिगम्बरी	त्रिनयना	त्रिनयनी

(2) जब कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होता है, तब क्रिया का लिंग कर्ता के अनुसार होता है, जैसे– (i) मुकेश ने खाना खाया। (ii) सुधा ने गाना गाया।

(3) समस्त पदों के लिंग अन्तिम पदों के अनुसार होते हैं।

अशुद्ध	शुद्ध
अपनी पुत्री–पुत्रों	अपने पुत्री–पुत्रों।

(4) जब कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होता है, परन्तु यदि कर्म के साथ 'को' का प्रयोग नहीं होता, तब क्रिया का लिंग 'कर्म' के अनुसार होता है। जैसे–

(i) मोहन ने केला खाया। (ii) सोहन ने खेल खेला।

(5) जिस वाक्य में कर्ता 'ने' रहित हो तथा जिस वाक्य में क्रिया का लिंग कर्ता के अनुसार न हो, वहाँ क्रिया का लिंग कर्ता के लिंग के अनुसार कर देना चाहिये। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध
गोभी का फूल खाने की वस्तु होती है।	गोभी का फूल खाने की वस्तु होता है।
स्त्री पति का धन होता है।	स्त्री पति का धन होती है।

शब्दार्थगत अशुद्धियाँ

ये अशुद्धियाँ शब्दों की त्रुटिपूर्ण रचना के कारण होती हैं, इससे शब्दार्थ अशुद्ध हो जाता है। शब्दों के उच्चारण में स्वर और व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ गलत उच्चारण बोध के कारण होती हैं।

अतः हमें शुद्ध बोलना चाहिये और शुद्ध लिखना चाहिये। उपसर्ग, प्रत्यय, समास और सन्धि आदि के द्वारा शब्द रचना प्रक्रिया सही होनी चाहिये। शब्दार्थगत अशुद्धियाँ वाक्य को भी अशुद्ध कर देती हैं। प्रायः यह होता है कि हमें शब्दों का सही अर्थ मालूम न होने पर उसका प्रयोग गलत हो जाता है और उनके प्रयोग से भाषा अशुद्ध हो जाती है।

जैसे–

अशुद्ध वाक्य– मोहन आटा पिसवाने गया है।

शुद्ध वाक्य– मोहन गेहूँ पिसवाने गया है।

शब्दों का क्रम भी वाक्य में सही होना चाहिये अन्यथा अर्थ गलत निकलता है।

अशुद्ध– महेश एक सेवों की थैली बाजार से लाया।

शुद्ध– महेश बाजार से सेवों की एक थैली लाया।

शब्दगत अशुद्धियाँ

शब्दगत अशुद्धियाँ रचनागत होती हैं। कभी-कभी शब्द के साथ उपसर्ग और प्रत्यय गलत रूप में जोड़ दिये जाते हैं, जिससे शब्दों में रचनागत त्रुटि हो जाती है। समास, सन्धि आदि का ठीक ज्ञान न होने से शब्दगत अशुद्धियाँ होती हैं। यहाँ कुछ शब्दगत अशुद्धियों का उल्लेख किया जा रहा है–

अशुद्ध	शुद्ध
प्रतिउत्तर	प्रत्युत्तर
सौन्दर्यता	सौन्दर्य
अनाधिकार	अनधिकार
उपरोक्त	उपर्युक्त
रचियिता	रचयिता
मान्यनीय	माननीय
संसारिक	सांसारिक
सप्ताहिक	साप्ताहिक
अधीनस्थ	आधीन
आवश्कीय	आवश्यक
एकत्रित	एकत्र
कौशलता	कौशल
उत्तरदाई	उत्तरदायी
तदोपरांत	तदुपरांत

व्याकरणगत अशुद्धियाँ

भाषा की एक व्यवस्था होती है, जिसे व्याकरण कहते हैं। सामान्य मनुष्य जो व्याकरण नहीं जानता, वह भी शुद्ध भाषा का प्रयोग करता है। यदि उसके सामने कोई गलत प्रयोग करे तो वह टोक देता है। परन्तु सम्भवतः वह यह न बता पाये कि प्रयोग क्यों गलत है या वह व्याकरण के किस नियम के कारण गलत है। उदाहरण के लिये, यदि हम चार साल के बच्चे के सामने यह कहें, 'मैं रोटी पीता हूँ और पानी खाता हूँ' तो वह हँस पड़ेगा और टोक देगा। कहेगा 'मैं रोटी खाता हूँ और पानी पीता हूँ' बोलिये। स्पष्ट है कि भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती है। इसलिये शुद्ध बोलना व शुद्ध सुनना और शुद्ध लिखना तीनों आवश्यक हैं। व्याकरण सम्बन्धी गलतियाँ हमें हमेशा देखने को मिलती हैं और सही एवं शुद्ध रचना के लिये जरूरी है कि हमें व्याकरण का पूरा ज्ञान हो।

वर्तनी का शुद्ध प्रयोग तथा क्रिया, कारक, लिंग, वचन, सर्वनाम, विशेषण एवं तदनुकूल क्रिया का सही उपयोग रचना की शुद्धता के प्रतीक हैं। सही रचना के लिये व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिये।

रचनागत अशुद्धियाँ

वाक्यों की रचना में अनेक प्रकार की अशुद्धियाँ असावधानीवश हो जाती हैं। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, कारक, विशेषण, लिंग, वचन आदि से सम्बन्धित अशुद्धियाँ प्रायः होती हैं। व्याकरण दोष अज्ञानवश होते हैं। कभी-कभी शब्दों के अनुपयुक्त प्रयोगों और निरर्थक या पुनरुक्ति के वाचक शब्दों के प्रयोगों से अशुद्धियाँ होती हैं। जैसे–

(1) **अशुद्ध–** उसने मेरे ऊपर आरोप लगाया है।
शुद्ध– उसने मुझ पर आरोप लगाया है।

(2) **अशुद्ध–** वृक्षों पर फल लगा था।
शुद्ध– वृक्षों पर फल लगे थे।

(3) **अशुद्ध–** कुछ स्थलों में ऐसा कहा गया है।
शुद्ध– कुछ स्थलों पर ऐसा कहा गया है।

(4) **अशुद्ध–** भाषा की परिभाषा कीजिये।
शुद्ध– भाषा की परिभाषा दीजिये।

(5) **अशुद्ध–** इस कार्य में देर लगना स्वाभाविक थी।
शुद्ध– इस कार्य में देर लगनी स्वाभाविक थी।

(6) **अशुद्ध–** आज दोनों लड़कों में युद्ध हो गया।
शुद्ध– आज दोनों लड़कों में झगड़ा हो गया।

(7) **अशुद्ध–** आपके एक-एक शब्द महत्त्वपूर्ण थे।

शुद्ध– आपका एक–एक शब्द महत्त्वपूर्ण था।

(8) अशुद्ध– गरम गाय का दूध अच्छा लगता है।
शुद्ध– गाय का गरम दूध अच्छा लगता है।

(9) अशुद्ध– वृक्षों पर कोयल कूक रही है।
शुद्ध– वृक्ष पर कोयल कूक रही है।

(10) अशुद्ध– साहित्य और जीवन का घोर सम्बन्ध है।
शुद्ध– साहित्य और जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

(11) अशुद्ध– उसके कान में जूँ भी नहीं रेंगती।
शुद्ध– उसके कान पर जूँ भी नहीं रेंगती।

(12) अशुद्ध– सभी वर्ग के लोग वहाँ उपस्थित थे।
शुद्ध– सभी वर्गों के लोग वहाँ उपस्थित थे।

(13) अशुद्ध– निरपराधी को दण्ड देना अनुचित है।
शुद्ध– निरपराध को दण्ड देना अनुचित है।

(14) अशुद्ध– उसके पड़ोसी को लड़की हुई है।
शुद्ध– उसके पड़ोसी के लड़की हुई है।

(15) अशुद्ध– वह विलाप करके रोने लगीं।
शुद्ध– वह विलाप करने लगी।

संज्ञा सम्बन्धी अशुद्धियाँ

(1) अशुद्ध– फसल नाश हो गई।
शुद्ध– फसल नष्ट हो गई।

(2) अशुद्ध– उसकी मृत्यु का समाचार क्षोभजनक है।
शुद्ध– उसकी मृत्यु का समाचार दुखद है।

(3) अशुद्ध– इस विषय की पूर्ति कठिन है।
शुद्ध– इस विषय का प्रतिपादन कठिन है।

(4) अशुद्ध– वे लोग कुत्ता पालते हैं।
शुद्ध– वे लोग कुत्ते पालते हैं।

(5) अशुद्ध– सभा में सभी श्रेणी के लोग थे।
शुद्ध– सभा में सभी श्रेणियों के लोग थे।

सर्वनाम सम्बन्धी अशुद्धियाँ

(1) अशुद्ध– दूध में कौन पड़ गया ?
शुद्ध– दूध में क्या गिर गया ?

(2) अशुद्ध– उसने कहा कि मैं पाँच भाई हूँ।
शुद्ध– उसने कहा कि हम पाँच भाई है।

(3) अशुद्ध– आपने ग्वालियर कब तक रहना है ?
शुद्ध– आपको ग्वालियर कब तक रहना है ?

विशेषण सम्बन्धी अशुद्धियाँ

(1) अशुद्ध– तुमसे भारी मित्र नहीं मिलेगा।
शुद्ध– तुमसे अच्छा मित्र नहीं मिलेगा।

(2) अशुद्ध– वह लड़की बड़ी सुन्दर है।
शुद्ध– वह लड़की बहुत सुन्दर है।

क्रिया सम्बन्धी अशुद्धियाँ

(1) अशुद्ध– मैं आपकी प्रतीक्षा देख रहा था।
शुद्ध– मैं आपकी प्रतीक्षा कर रहा था।

(2) अशुद्ध– मुझे भिखारी पर तरस होता है।
शुद्ध– मुझे भिखारी पर तरस आता है।

(3) अशुद्ध– उससे अब तबियत ऊब आई।
शुद्ध– उससे अब तबियत ऊब गई।

(4) अशुद्ध– रेडियो ने यह समाचार बताया।
शुद्ध– रेडियो ने यह समाचार प्रसारित किया।

(5) अशुद्ध– यह सोचना मूर्खता होगा।
शुद्ध– यह सोचना मूर्खता होगी।

वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ

(1) अशुद्ध– मेरा बीस हजार रुपया खो गया।
शुद्ध– मेरे बीस हजार रुपये खो गये।

(2) अशुद्ध– कई रेलवे के कर्मचारियों ने नारे लगाये।
शुद्ध– रेलवे के कई कर्मचारियों ने नारे लगाये।

(3) अशुद्ध– आँखों से आँसू बहता है।
शुद्ध– आँखों से आँसू बहते हैं।

लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ

(1) अशुद्ध– मेरा माँ–बाप कहाँ गया ?
शुद्ध– मेरे माँ–बाप कहाँ गये ?

(2) अशुद्ध– बच्चे ने गोलियाँ मुँह में डाल लिया।
शुद्ध– बच्चे ने मुँह में गोलियाँ डाल लीं।

(3) अशुद्ध– सुधा को बात–बात पर गुस्सा आती है।
शुद्ध– सुधा को बात–बात पर गुस्सा आता है।

कारक सम्बन्धी अशुद्धियाँ

(1) अशुद्ध– झील के अन्दर बीच में राजमहल है।
शुद्ध– झील के बीच में राजमहल है।

(2) अशुद्ध– पति ने पत्नी से साथ सलाह की।
शुद्ध– पति ने पत्नी से सलाह ली।

(3) अशुद्ध– मेज में किताबें रखी हैं।
शुद्ध– मेज पर किताबें रखी हैं।

प्रश्न–5. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिये–

चीड़िया, कीनारा, निरमाण, गीलहरी, अनूकुल, प्रथक, अनुसंशा, दुस्चरित्र, विसम, ग्रहणी, पूज्यनीय।

उत्तर– चिड़िया, किनारा, निर्माण, गिलहरी, अनुकूल, पृथक, अनुशंसा, दुश्चरित्र, विषम, गृहिणी, पूजनीय।

प्रश्न–6. अच्छे वाक्य के क्या लक्षण हैं? किन्हीं पांच लक्षणों का उल्लेख कीजिये।

उत्तर– हिन्दी के अच्छे वाक्य के लक्षण निम्नलिखित हैं–

1. हिन्दी के अच्छे वाक्य को हिन्दी व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध होना चाहिये।
2. अच्छे वाक्य को वक्ता या लेखक का आशय पूरी तरह और साफ–साफ व्यक्त करने में सक्षम् होना चाहिये।
3. अच्छे वाक्य में न तो कोई शब्द अनावश्यक होता है और न ही कम।
4. अच्छे वाक्य का एक ही अर्थ होता है। उसमें अर्थ का घपला नहीं होता।
5. अच्छे वाक्य में बिना अर्थ बदले शब्दों का स्थान नहीं बदला जा सकता।

प्रश्न–7. निम्नलिखित साधारण वाक्यों का संयुक्त वाक्यों में रूपान्तरण कीजिये।

उत्तर–

(1) मेरे स्थानांतरित हो जाने पर भी काम होता रहा। (सरल वाक्य)
मेरा स्थानांतरण हो गया था, फिर भी काम होता रहा। (संयुक्त वाक्य)

(2) अफसरों द्वारा डराये–धमकाये जाने पर भी उसने माफी नहीं माँगी।(सरल वाक्य)
अफसरों ने उसे डराया–धमकाया, फिर भी उसने मांफी नहीं माँगी।(संयुक्त वाक्य)

(3) उसके बार–बार बुलाने पर मैं वहाँ पहुँचा। (सरल वाक्य)
उसने बार–बार बुलाया, तो मैं वहाँ पहुँचा। (संयुक्त वाक्य)

(4) तुम्हारे चले जाने पर वह फिर सो गया। (सरल वाक्य)
तुम चले गये तो वह फिर सो गया। (संयुक्त वाक्य)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(1) किसी भी भाषा की मूलभूत इकाई होती है–
(अ) संकेत (ब) वाक्य
(स) ध्वनि (द) शब्द।
उत्तर– (ब) वाक्य।

(2) रचना या रूप के आधार पर वाक्य होते हैं–
(अ) दो प्रकार के (ब) तीन प्रकार के
(स) छह प्रकार के (द) चार प्रकार के।
उत्तर– (ब) तीन प्रकार के।

(3) अर्थ के आधार पर वाक्य होते हैं–
(अ) आठ प्रकार के (ब) चार प्रकार के
(स) तीन प्रकार के (द) छह प्रकार के।
उत्तर– (अ) आठ प्रकार के।

(4) मौखिक अभिव्यक्ति का संबंध होता है–
(अ) श्रवण करने से (ब) उच्चारण से
(स) कहने से (द) बोलने से।
उत्तर– (ब) उच्चारण से।

(5) लिखित अभिव्यक्ति का संबंध होता है–
(अ) वाक्यों से (ब) शब्दों से
(स) भावों से (द) मात्रा अथवा वर्तनी से।
उत्तर– (द) मात्रा अथवा वर्तनी से।

(6) मन के विचारों की अभिव्यक्ति किस माध्यम से होती है?
(अ) विचारों से (ब) वाक्य से
(स) सुविचार से (द) गीत गाकर।
उत्तर– (ब) वाक्य से।

(7) वाक्य का निर्माण .... होता है।
(अ) शब्दों से (ब) वर्ण से
(स) व्यंजन से (द) स्वर से।
उत्तर– (अ) शब्दों से।

(8) भाषा किस माध्यम से व्यक्त की जाती है?
(अ) विचार से (ब) वाक्य से
(स) चिल्लाकर (द) गीत गाकर।
उत्तर– (ब) वाक्य से।

(9) व्याकरणिक रूप से पूर्ण विचार को .... कहते हैं।
(अ) समीक्षा (ब) सार–संक्षेप
(स) अनुवाद (द) वाक्य।
उत्तर– (द) वाक्य।

(10) वाक्य के क्रिया भाग को .... कहा जाता है।
(अ) विभाग (ब) विषय
(स) विषयक (द) विधेय।
उत्तर– (ब) विषय।

(11) रचना की दृष्टि से वाक्य कितने प्रकार के होते हैं?
(अ) तीन प्रकार (ब) चार प्रकार
(स) पाँच प्रकार (द) छः।

उत्तर– (अ) तीन प्रकार।

(12) अर्थ के आधार पर वाक्य कितने प्रकार के होते हैं?

(अ) दो (ब) चार
(स) आठ (द) दस।

उत्तर– (ब) चार।

(13) किसी भी वाक्य के दो अंग होते हैं–

(अ) उद्देश्य और विधेय (ब) सार–संक्षेप
(स) उद्देश्य और समीक्षा (द) प्रस्ताव–प्रस्तावना।

उत्तर– (अ) उद्देश्य और विधेय।

(14) कार्य और रचना के आधार पर वाक्य कितने प्रकार के होते हैं?

(अ) पाँच (ब) सात
(स) दस (द) बारह।

उत्तर– (ब) सात।

(15) वाक्य के प्रमुखतः दो घटक होते हैं–

(अ) उत्साह और उपकार (ब) उद्देश्य और विधेय
(स) उल्लास और उत्साह (द) उद्देश्य और समीक्षा।

उत्तर– (ब) उद्देश्य और विधेय।

(16) निम्न में से अशुद्ध वाक्य कौनसा है?

(अ) मेरे पास केवल एक पेन है (ब) पुस्तक मेज पर रखी है
(स) तुम सबसे सुन्दर हो (द) मेरा चश्मा तुमसे अच्छा है।

उत्तर– (द) मेरा चश्मा तुमसे अच्छा है।

(17) 'मैंने यह मेज सौ रुपये की खरीदी है।' इस वाक्य में क्या दोष है?

(अ) परसर्ग का (ब) विशेषण का
(स) क्रिया विशेषण का (द) क्रिया का।

उत्तर– (अ) परसर्ग का।

(18) निम्न में शुद्ध वाक्य कौनसा है?

(अ) बन्दूक एक उपयोगी शस्त्र है (ब) यह मेरा पुस्तक है
(स) इनका एक पुत्र है (द) भारत में अनेकों जातियाँ हैं।

उत्तर– (ब) यह मेरा पुस्तक है।

(19) निम्नलिखित में कौनसा सही वाक्य है?

(अ) शायद में कल आऊँ (ब) शायद मैं कल आऊँगा
(स) मैं कल शायद आऊँगा (द) मैं शायद कल आऊँगा।

उत्तर– (ब) शायद मैं कल आऊँगा।

(20) साहित्य में अशुद्धि शोधन किसे कहते हैं?

(अ) शब्दों का शुद्ध करना (ब) विचार शुद्ध करना

(स) हृदय को शुद्ध करना (द) घर को शुद्ध करना।

उत्तर– (अ) शब्दों का शुद्ध करना।

(21) उच्चारण की दृष्टि से अशुद्धि कितने प्रकार की होती है?

(अ) दो (ब) चार
(स) छः (द) आठ।

उत्तर– (अ) दो।

(22) निम्न में कौनसा अशुद्ध वाक्य है?

(अ) रोको, मत जाने दो (ब) नगर में सर्वत्र शांति थी
(स) राम और सीता वन गये (द) उसे कोई पैत्रिक सम्पत्ति नहीं मिली।

उत्तर– (द) उसे कोई पैत्रिक सम्पत्ति नहीं मिली।

(23) निम्न में से शुद्ध वाक्य है–

(अ) उसे भारी प्यास लगी है (ब) एक गिलास पानी दीजिए
(स) मैंने उसे बुलाया और कहा (द) मैं आपकी प्रतीक्षा करता रहा।

उत्तर– (स) मैंने उसे बुलाया और कहा।

(24) व्याकरण के सामान्य नियमों की जानकारी के बिना जो शब्दगत अशुद्धि होती है, उसे कहते हैं–

(अ) वाक्यगत अशुद्धि (ब) व्याकरण अशुद्धि
(स) वर्तनी अशुद्धि (द) लेखन की अशुद्धि।

उत्तर– (ब) व्याकरण अशुद्धि।

(25) शब्द रचना में वर्तनी में होने वाली गलतियों को कहते हैं–

(अ) वाक्य अशुद्धि (ब) वर्तनी अशुद्धि
(स) स्वरूप अशुद्धि (द) रूप अशुद्धि।

उत्तर– (ब) वर्तनी अशुद्धि।

(26) अनुकुल का शुद्ध शब्द क्या है?

(अ) प्रतिकूल (ब) अनुकूल
(स) प्रतिकूलन (द) अनुकूलन।

उत्तर– (ब) अनुकूल।

(27) अध्यन का शुद्ध शब्द क्या है?

(अ) अध्येय (ब) अध्यपन
(स) अध्यापन (द) अध्ययन।

उत्तर– (द) अध्ययन।

(28) जिन वाक्यों में एक से अधिक प्रधान उपवाक्य हों और वे संयोजक अव्यय द्वारा जुड़े हों, उसे कहते हैं–

(अ) सरल वाक्य (ब) विधिवाचक वाक्य
(स) संयुक्त वाक्य (द) मिश्र वाक्य।

उत्तर– (स) संयुक्त वाक्य।

(29) निम्न में कौनसा अशुद्ध वाक्य है?

(अ) शहर में दो अस्पताल हैं (ब) जैन साहित्य प्राकृत में लिखा गया है

(स) अभी चार बजे हैं। (द) आज बजट के ऊपर बहस होगी।

उत्तर– (द) आज बजट के ऊपर बहस होगी।

(30) ईर्षा का शुद्ध शब्द क्या है?

(अ) ईर्स्या (ब) ईर्ष्या

(स) ईश्या (द) ईर्श्य।

उत्तर– (ब) ईर्ष्या।

(31) सर्वनाम एवं क्रिया सही न होने पर वाक्य .... हो जाता है।

(अ) स्पष्ट (ब) अस्पष्ट

(स) शुद्ध (द) अशुद्ध।

उत्तर– (द) अशुद्ध।

(32) लिखने की विधि को .... कहते हैं।

(अ) वाक्य का वाक्यांश (ब) वर्तनी या अक्षरी

(स) संधि या संधि विग्रह (द) वर्तनी की शुद्धि।

उत्तर– (ब) वर्तनी या अक्षरी।

(33) वाक्य रचना में जब अशुद्धियाँ होती हैं तब उसे .... कहते हैं।

(अ) वाक्य रचना (ब) संधि रचना

(स) वाक्य संशोधन (द) वाक्य अशुद्धियाँ।

उत्तर– (द) वाक्य अशुद्धियाँ।

(34) वाक्य के गुण 'आकांक्षा' का अर्थ है–

(अ) सार्थकता (ब) श्रोता की जिज्ञासा

(स) व्याकरणानुकूल (द) भावबोध की क्षमता।

उत्तर– (ब) श्रोता की जिज्ञासा।

(35) अशुद्ध शब्दों को शुद्ध करने को .... कहते हैं।

(अ) वाक्य शोधन (ब) शब्द शोधन

(स) अशुद्धि शोधन (द) शुद्धिकरण।

तर– (स) अशुद्धि शोधन।

(2)
अनुवाद
(अर्थ एवं प्रकार)

दीर्घउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. अनुवाद की परिभाषा और स्वरूप पर प्रकाश डालिये।

अथवा

'अनुवाद' शब्द का शाब्दिक–अर्थ क्या है? वर्तमान में 'अनुवाद' से क्या तात्पर्य समझा जाता है? स्पष्ट कीजिये।

अथवा

'अनुवाद' की परिभाषा एवं स्वरूप लिखिये।

अथवा

'अनुवाद' से आप क्या समझते हैं? अनुवाद करते समय किन–किन बातों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है? समझाकर लिखिये।

उत्तर– 'अनुवाद' शब्द का शाब्दिक अर्थ है– 'किसी के कहने के बाद कहना'। अर्थात् किसी कथन का अनुवर्ती कथन, पुनः कथन अथवा पुनरुक्ति। वर्तमान में 'अनुवाद' शब्द का प्रचलित अर्थ शाब्दिक अर्थ से थोड़ा भिन्न है। आज एक भाषा में कही हुयी बात को दूसरी भाषा में कहना या बतलाना अनुवाद कहलाता है। इसीलिये 'अनुवाद' शब्द अंग्रेजी के 'ट्रान्सलेशन' के पर्यायवाची शब्द के रूप में प्रचलित है। अंग्रेजी शब्दकोष के अनुसार– 'एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में व्यक्त करना 'ट्रान्सलेशन' कहलाता है।' इस सन्दर्भ में 'अनुवाद' की निम्नलिखित परिभाषायें दी जा सकती हैं–

1. अनुवाद एक शिल्प है जिसमें एक भाषा में लिखित सन्देश के स्थान पर दूसरी भाषा में उसी सन्देश को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है। **(न्यूयार्क)**
2. 'एक भाषा या भाषा–भेद से दूसरी भाषा या भाषा–भेद में प्रतिपाद्य को स्थानान्तरित करने की प्रक्रिया या उसके परिणाम को अनुवाद कहते हैं।' **(हार्टमन तथा स्टार्क)**
3. 'अनुवाद एक सम्बन्ध है जो दो या दो से अधिक पाठ के बीच होता है। ये पाठ समान स्थिति में प्रकार्य सम्पादित करते हैं। दोनों पाठों का सन्दर्भ समान होता है और इनसे व्यंजित होने वाला सन्देश भी समान होता है।' **(हालेडे)**
4. 'मूल भाषा के सन्देश के सम–मूल्य सन्देश की लक्ष्य–भाषा में प्रस्तुत करने की क्रिया को अनुवाद कहते हैं। सन्देशों की यह मूल्य–समता पहले अर्थ और फिर शैली की दृष्टि से निकटतम एवं स्वाभाविक होती है।' **(नाइडा तथा रेबर)**
5. 'अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सार्थक अनुभव (अर्थ–पूर्ण) सन्देश या सन्देश अर्थ को एक भाषा समुदाय से दूसरे भाषा समुदाय में संप्रेषित किया जाता है।' **(पटनायक)**
6. 'अनुवाद एक भाषा (स्रोत–भाषा) की मूलपाठ सामग्री का दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में समानार्थक (ईक्विवेलेंट) मूलपाठ सामग्री का स्थानापन्न है।' **(अंग्रेजी भाषाविद् जे.सी. केटफर्ड)**

उपर्युक्त परिभाषाओं को दृष्टिगत रखते हुये 'अनुवाद' की सर्वसम्मत परिभाषा निम्नानुसार दी जा सकती है–

'एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासम्भव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा मूल कथ्य की आत्मा की रक्षा करते हुये दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करना अनुवाद कहलाता है। इसकी मुख्य लक्ष्य मूल भाषा (लक्ष्य भाषा) में प्रतिपादित करना होता है।'

उक्त परिभाषाओं की विवेचना के आधार पर संक्षेप में हम कह सकते हैं कि 'अनुवाद से तात्पर्य एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना होता है। इस प्रकार अनुवाद एक प्रकार का ऑपरेशन है, जिसके द्वारा एक भाषा की पाठ-सामग्री को दूसरी भाषा में प्रतिस्थापित किया जाता है। इस प्रकार अनुवाद में मुख्यतः तीन बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है–

(1) पाठ–सामग्री (2) समानार्थक शब्द (3) पुनर्स्थापना।

अनुवाद करते समय निम्नलिखित बातों का भी ध्यान रखना चाहिये–

(1) अनुवादक को स्रोत और लक्ष्य भाषा की प्रकृति तथा परिवेश से भली–भाँति परिचित होना चाहिये।

(2) अनुवादक को दोनों भाषाओं की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से पूर्णतः परिचित होना चाहिये।

(3) अनुवादक को दोनों भाषाओं (स्रोत एवं लक्ष्य) के व्याकरण से पूर्णरूपेण परिचित होना चाहिये।

(4) अनुवाद में अभिव्यक्ति सुबोध, प्रांजल और प्रवाहमयी होना चाहिये।

(5) मूल रचना की शैली सुरक्षित रखना चाहिये।

(6) अनुवादक को चाहिये कि वह अवतरण को बार–बार पढ़े और उसमें निहित भाव को समझे, क्योंकि अवतरण के प्रत्येक शब्द का महत्व होता है।

(7) शब्दानुवाद, भावानुवाद और रूपान्तरण में भावानुवाद ही श्रेष्ठ माना जाता है। अतः भावानुवाद का ही सहारा लेना चाहिये।

(8) अनुवाद की प्रक्रिया में स्रोत–भाषा की प्रतीक व्यवस्था को लक्ष्य–भाषा की प्रतीक व्यवस्था में रूपान्तरित करने का भरसक प्रयत्न करना चाहिये।

(9) अनुवाद में मूलभाव की रक्षा होनी चाहिये।

(10) अनुवाद यांत्रिक या निर्जीव लगने वाले नहीं होने चाहिये।

प्रश्न–2. अनुवाद के महत्व और उसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिये।

अथवा

अनुवाद के उद्देश्य क्या हैं? संक्षेप में लिखिये।

अथवा

अनुवाद को 'सांस्कृतिक–सेतु' की संज्ञा दी जाती है, क्यों? तर्क सहित उत्तर दीजिये।

अथवा

वर्तमान–युग में अनुवाद के महत्व पर प्रकाश डालिये।

उत्तर– *(नोट– परिभाषा के लिये पिछले प्रश्न का उत्तर देखें।)*

अनुवाद एक ऐसी तकनीक है, जिसका आविष्कार मनुष्य ने बहुभाषिक स्थिति की विडम्बनाओं से बचने के लिये किया था। लक्ष्य भाषा के भाव–वैभव को ही नहीं, अपितु उसकी उसी तरह की व्यंजना को भी दूसरी भाषा में यथावत् रूपांतरित करना अनुवाद का लक्ष्य (उद्देश्य) होता है। अनुवाद को 'सांस्कृतिक–सेतु' की संज्ञा दी जाती है, क्योंकि मानव समुदाय और उनकी सैकड़ों भाषाओं में निहित ज्ञान–विज्ञान की उपलब्धियों को एक–दूसरे तक पहुँचाने का कार्य अनुवाद के द्वारा ही सम्पन्न होता है। अनुवाद के द्वारा एक भाषा को बोलने और जानने वाले दूसरी भाषा बोलने और जानने वालों तक अपने भावों और विचारों का सम्प्रेषण करते हैं। इससे परस्पर सांस्कृतिक–विशेषताओं का आदान–प्रदान होता है। एक संस्कृति के लोग दूसरी संस्कृति से परिचित होकर उसके भावों, विचारों, जीवन की परम्पराओं, मान्यताओं एवं शैली को ग्रहण करते हैं और अपने जीवन–वैशिष्ट्य से दूसरों को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार 'अनुवाद' संस्कृतियों के परस्पर हस्तांतरण एवं विश्व की समस्त संस्कृतियों के परस्पर विनिमय का कार्य करता हुआ एक सेतु (पुल) की तरह महत्वपूर्ण है। अतः अनुवाद को सांस्कृतिक–सेतु कहा गया है।

आज का युग ज्ञान–विज्ञान का युग है। मानव नित्य नये–नये आविष्कार कर रहा है। ज्ञान का विस्फोट हो रहा है। इस ज्ञान को विश्वव्यापी बनाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। वास्तव में विश्व के विविध मानव समुदायों को परस्पर जोड़ने और ज्ञान–विज्ञान को मानव–मात्र के लिये सुलभ बनाने के लिये एकमात्र उपाय अनुवाद ही है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर अनुवाद के प्रमुखतः तीन उद्देश्य माने जा सकते हैं–

(1) **दूसरी भाषा के साहित्य से अपनी भाषा के साहित्य को समृद्ध करना–** अनुवाद के माध्यम से एक साहित्यकार दूसरी भाषा की रचनाओं का अपनी भाषा में अनुवाद करके अपनी भाषा के साहित्य को समृद्धशाली बनाते हैं और साहित्य की नयी–नयी विधाओं और तकनीक को जन्म देकर उसके विकास के मार्ग को प्रशस्त करते हैं। हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं के साहित्यकारों ने अनुवाद–प्रक्रिया को अपनाकर अपनी–अपनी भाषाओं की साहित्य–सम्पदा को समृद्धशाली बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

(2) **दूसरी भाषा की शैलियों, मुहावरों, दार्शनिक तथ्यों, वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान की प्राप्ति–** अनुवाद का दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि एक भाषा का रचनाकार अपनी भाषा को विविध शैलियों, मुहावरों, दार्शनिक तथ्यों, वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान से समृद्धशाली बनाने एवं सजाने व सँवारने के लिये दूसरी भाषा की साहित्यिक–रचनाओं, दार्शनिक–कृतियों, वैज्ञानिक एवं तकनीकी पुस्तकों या उनके लेखों का अनुवाद अपनी भाषा में करता है। इससे रचनाकार अपनी भाषा के विकास एवं समृद्धि में योगदान देने के साथ–साथ स्वयं की ज्ञान–सम्पदा को भी समृद्धि बना लेता है। इससे रचनाकार की बहुमुखी प्रतिभा का विकास होता है और उसका व्यक्तित्व साहित्य–जगत में प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेता है। इस दृष्टि से आधुनिक युग के हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा के रचनाकार अग्रगण्य हैं।

(3) **विचार–विनिमय–** अनुवाद का तीसरा उद्देश्य यह है कि इससे मानव समुदाय विश्व की सभी भाषाओं में निहित ज्ञान–विज्ञान की उपलब्धियों को एक–दूसरे तक पहुँचाने में सक्षम हो गया है। आज के ज्ञान के विस्फोट–युग में अनुवाद का विशेष महत्व है, क्योंकि अनुवाद ही वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक भाषा को बोलने और जानने वाले दूसरी भाषा को बोलने और जानने वालों के भावों और विचारों को ग्रहण कर सकते हैं और अपने भावों एवं विचारों को सम्प्रेषित कर सकते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि वर्तमान युग में 'अनुवाद' का विशेष महत्व है। अनुवाद–क्रिया मानव–समाज को समृद्ध बनाती है, मानव समुदाय में एक–दूसरे के महत्व को जानने व समझने की समझ विकसित करती हैं और उनमें प्रेम व सौहार्द का वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

प्रश्न–3. अनुवाद की परिभाषा और उसके विविध प्रकारों का वर्णन कीजिये।

अथवा

अनुवाद के प्रकारों को स्पष्ट कीजिये।

अथवा

प्रक्रिया और पाठ के आधार पर अनुवाद के भेद लिखिये।

उत्तर– *(नोट– परिभाषा के लिये प्र.क्र. 1 का उत्तर देखें)*

अनुवाद के प्रकार– प्रक्रिया तथा पाठ के आधार पर अनुवाद के कई भेद किये जा सकते हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख प्रकार निम्नांकित हैं–

(1) **शब्दानुवाद–** इसमें मूल भाषा के प्रत्येक शब्द के अनुवाद पर ध्यान दिया जाता है। अनुवाद से यह अपेक्षा की जाती है कि वह मूल भाषा के पाठ के किसी भी अंश को न छोड़े और अपनी ओर से कुछ भी न जोड़े। अंग्रेजी में इसे वर्बल ट्रांसलेशन अथवा वर्ड फारवर्ड ट्रान्सलेशन कहा जाता है। विज्ञान से सम्बन्धित साहित्य अथवा सूचना से सम्बन्धित साहित्य का अनुवाद इसी श्रेणी में आता है। प्रत्येक शब्द का यथावत् अनुवाद करने से कई बार शब्दानुवाद हास्यास्पद भी हो जाता है। जैसे– मेरा सिर चक्कर खा रहा है। वाक्य का शब्दानुवाद होगा– My head is eating circles. यह उचित अनुवाद नहीं माना जा सकता है। शब्दानुवाद का एक रूप वह भी होता है जिसमें मूल भाषा के शब्द, पदबंध, मुहावरे आदि के लिये लक्ष्य भाषा में उपर्युक्त पर्याय खोजकर अनुवाद किया जाता है। इस अनुवाद को आदर्श अनुवाद भी कहा जा सकता है। गणित, विज्ञान अथवा विधि सम्बन्धी विषयों का अनुवाद इसी पद्धति से किया जाता है।

(2) **भावानुवाद–** इसमें पाठ की विषयवस्तु को ध्यान में रखते हुये अनुवादक लक्ष्य भाषा में उसके पर्याय का प्रयोग करता है। रचनात्मक साहित्य के अनुवाद में इसी पद्धति का प्रयोग किया जाता है। लोकोक्तियों और मुहावरों के साथ सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों का अनुवाद भी भावानुवाद के अन्तर्गत ही आता है। यह अनुवाद यांत्रिक और निर्जीव नहीं होता है। इसमें अभिव्यक्ति सुबोध, प्रांजल और प्रवाहमय होती है। इसका दोष यह है कि मूल रचना में व्यक्त सौन्दर्य भी ओझल हो जाता है।

(3) **छायानुवाद–** ऐसा अनुवाद जिसमें स्रोत भाषा के पाठ की छाया मात्र हो, छायानुवाद कहलाता है। अन्य शब्दों में, स्रोत भाषा के पाठ के मूल भाव को लेकर लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप जो अनुवाद किया जाता है उसे छायानुवाद कहते हैं। **भोलानाथ तिवारी** के अनुसार, छायानुवाद ऐसे अनुवाद को कहा जाना चाहिये जो शब्दानुवाद की भांति मूल भाषा के शब्दों का अनुसरण न करे बल्कि दोनों ही दृष्टियों से (शब्दतः तथा भावतः) मूल से मुक्त होकर, उसकी छाया लेकर चले।

(4) **सारानुवाद–** इसके अन्तर्गत मूलपाठ के सारांश का अनुवाद किया जाता है। शासकीय प्रतिवेदनों तथा समाचारों का प्रायः सारानुवाद ही किया जाता है। इसमें मूल पाठ के आवश्यक और महत्वपूर्ण अंशों का चयन किया जाता है और स्रोतभाषा के मूलपाठ का अर्थ ग्रहण कर लक्ष्यभाषा के अन्तर्गत मूलपाठ के एक–तिहाई शब्दों में उसे प्रस्तुत करना पड़ता है। अन्य शब्दों में, यह अनुवाद के साथ सम्पादन का भी कार्य होता है जिसमें सूक्ष्मता तथा बोधगम्यता का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। स्रोत भाषा के मूल भाव का सम्प्रेषण इसका प्रमुख उद्देश्य होता है। वास्तव में, सारानुवाद संक्षेपण की क्रिया भी है अतः इसमें सृजनात्मक का भी समावेश होता है।

(5) **आशु अनुवाद–** यह अनुवाद का ऐसा तरीका है जिसमें दो भिन्न भाषाभाषियों के मध्य बातचीत को किसी तीसरे पक्ष द्वारा संभव बनाया जाता है। यह व्यक्ति दोनों भाषाओं का जानकार होता है, इसे दुभाषिया भी कहा जाता है। यह एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की बात का अनुवाद करके तत्काल समझाता है और दूसरे व्यक्ति की बात का अनुवाद कर पहले व्यक्ति को बताता है। ऐसे अनुवाद को वार्ता–अनुवाद भी कहा जाता है। यह अत्यन्त जिम्मेदारी का कार्य होता है। इसमें दोनों भाषाओं की जानकारी के साथ–साथ विषय का ज्ञान होना भी अत्यन्त आवश्यक होता है।

प्रश्न–4. स्रोत–भाषा और लक्ष्य भाषा में अन्तर बताइये।

अथवा

'स्रोत भाषा' और 'लक्ष्य भाषा' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट करें।

अथवा

अनुवाद की प्रक्रिया में स्रोत–भाषा और लक्ष्य भाषा की भूमिका को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर– अनुवाद की प्रक्रिया में एक भाषा की पाठ–सामग्री को दूसरी भाषा में प्रतिस्थापित किया जाता है। अतः जिस भाषा में कही गयी बात को या पाठ–सामग्री को दूसरी भाषा में अनुदित किया जाता है, स्रोत भाषा कहलाती है तथा वह भाषा जिसमें अनुवाद किया जाता है, लक्ष्य–भाषा कही जाती हैं। इनकी पृथक–पृथक विशेषतायें निम्नानुसार हैं–

अनुवाद की दृष्टि से दो भाषायें अनिवार्य हैं। स्त्रोत–भाषा और लक्ष्य–भाषा। वह भाषा जिसकी कथित बात को दूसरी भाषा में अनूदित किया जाता है, स्त्रोत–भाषा कही जाती है तथा वह भाषा जिसमें अनुवाद किया जाता है, लक्ष्य–भाषा के नाम से जानी जाती है। उदाहरण के लिये उर्दू भाषा में लिखी किसी कविता या कहानी का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया गया है तो इस प्रसंग में उर्दू स्रोत भाषा होगी और अंग्रेजी लक्ष्य–भाषा कहलायेगी। अतः स्पष्ट है कि जिस भाषा के कथन का अनुवाद करना है, वह स्रोत भाषा और जिस भाषा में अनुवाद किया गया है वह लक्ष्य–भाषा है।

इसी प्रकार हिन्दी भाषा में लिखे किसी गद्यांश का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया गया है तो इस प्रसंग में हिन्दी स्रोत–भाषा होगी और अंग्रेजी लक्ष्य–भाषा कहलायेगी। इस प्रकार स्रोत–भाषा और लक्ष्य–भाषा का अन्तर सुस्पष्ट हो जाता है।

उक्त दोनों प्रकार की भाषाओं के अन्तर को निम्नानुसार बिन्दुवार स्पष्ट किया जा सकता है–

स्रोत–भाषा	लक्ष्य भाषा
1. स्रोत भाषा में कही गयी बात या विचार या भाव का अनुवाद किया जाता है।	1. स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद किया जाता है।
2. स्रोत–भाषा की शैलियों, मुहावरों, दार्शनिक तथ्यों, वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान को ग्रहण किया जाता है।	2. लक्ष्य भाषा को स्रोत भाषा की ज्ञान–विज्ञान सम्पदा से समृद्धशाली बनाया जाता है।
3. ज्ञान–विज्ञान का स्रोत होती है।	3. ज्ञान–विज्ञान का स्रोत नहीं होती है।
4. स्रोत–भाषा साधन है।	4. लक्ष्य–भाषा को समृद्ध करना रचनाकार का साध्य होता है।

5. अनुवाद की दृष्टि से स्रोत–भाषा ज्ञान–विज्ञान की स्रोत होती है।	5. लक्ष्य भाषा रचनाकार की अपनी भाषा होती है, जिसे समृद्ध करना रचनाकार का लक्ष्य होता है।

प्रश्न–5. अनुवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डालिये।

उत्तर– आज विश्व में कई हजार भाषाओं तथा बोलियों का प्रयोग किया जा रहा है। इन सभी भाषाओं के मध्य रचनात्मक, विचारात्मक तथा कार्यात्मक तालमेल बिठाने हेतु अनुवाद ही एकमात्र माध्यम है क्योंकि विश्व की सभी भाषाओं को उनके मूल रूप में जानना संभव नहीं है। वैश्वीकरण के कारण, ज्ञान, विज्ञान और तकनीकी के विकास के कारण आज अनुवाद की आवश्यकता और भी बढ़ गयी है। सूचना और संचार का माध्यम भाषा है। इसलिये भी अनुवाद का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। अनुवाद के माध्यम से अनेकता में एकता की स्थापना की जा सकती है। इसके माध्यम से भाषायी विविधता को भी एक सूत्र में बाँधा जा सकता है। प्रत्येक भाषा के अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ होते हैं। अनुवाद के द्वारा इन संदर्भों को जाना जा सकता है। विभिन्न भाषाओं के मध्य होने वाले विवादों को अनुवाद की सहायता से समाप्त किया जा सकता है। व्यापार–व्यवसाय के क्षेत्र में भी अनुवाद की आवश्यकता होती है। आज अनेक उत्पादों के लेबल और विज्ञापन अनेक भाषाओं में देखने को मिलते हैं। अनुवाद के द्वारा संसार के किसी भी कोने में बैठकर सम्पूर्ण दुनियाँ की घटनाओं, कार्यों और योजनाओं की जानकारी रखी जा सकती है। इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता प्रमाणित होती है।

प्रश्न–6. विभिन्न प्रकार के अनुवादों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कीजिये।

अथवा

अनुवाद के प्रमुख भेद लिखकर 'भावानुवाद' की विशेषतायें स्पष्ट कीजिये।

उत्तर– 'अनुवाद' मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं–

(1) शब्दानुवाद। (2) भावानुवाद। (3) रूपान्तर।

1. **शब्दानुवाद–** शब्दानुवाद में मूल–भाषा का दूसरी भाषा में ज्यों का त्यों अनुवाद करते हैं। मूल–भाषा की शब्द–योजना और वाक्य–विन्यास को यथावत् अनुवाद की भाषा में रखा जाता है।
2. **भावानुवाद–** इसमें शब्दों का ध्यान न रखते हुये भावगत अनुवाद किया जाता है। इसमें मूल–भाव को उजागर करना ही अनुवादक का लक्ष्य होता है।
3. **रूपान्तर–** रूपान्तर में अनुवादक की रुचि हावी हो जाती है। रूपान्तर में अनुवादक यथेष्ट परिवर्तन कर देता है।

भावानुवाद की विशेषतायें– भावानुवाद यांत्रिक और निर्जीव नहीं होता। इसकी भाषा वाक्य–संरचना प्रवाहपूर्ण होती है। भावानुवाद शाब्दिक अनुवाद नहीं होता वरन् ऐसा अनुवाद होता है जिससे स्रोत–भाषा में व्यक्त भावों को लक्ष्य–भाषा में व्यक्त करने के बाद भलीभाँति समझा जा सकता है। अतः भावानुवाद को शब्दानुवाद की अपेक्षा अच्छा माना जाता है। भावानुवाद में अभिव्यक्ति सुबोध, प्रांजल और प्रवाहमय होती है। दूसरी बात यह है कि प्रामाणिकता के लिये शाब्दिक वास्तविकता और परिशुद्धता भी होनी आवश्यक है। जिस अनुवाद में स्रोत–भाषा में कथित अभिव्यक्ति ज्यों की त्यों लक्ष्य भाषा में हो, वह निश्चय ही उत्तम अनुवाद है। अच्छे अनुवादक को यह भी प्रयास किया जाना चाहिये कि मूल–रचना की शैली सुरक्षित बनी रहे। मूल रचना की शैली सुरक्षित रखने का यह आशय नहीं है कि शब्दानुवाद कर दिया जाये। अनुवाद की भाषा स्रोत–भाषा की प्रकृति के अनुरूप हो। यदि स्रोत भाषा में कोई मुहावरा हो तो उस मुहावरे की प्रकृति से मिलता हुआ मुहावरा लक्ष्य–भाषा का भी अनुवाद में प्रयुक्त किया जाना चाहिये। इससे स्वाभाविक प्रवाह बना रहता है।

प्रश्न–7. अनुवाद की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुये अच्छे अनुवाद की विशेषतायें बताइये।

अथवा

अनुवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डालिये तथा अच्छे अनुवाद की विशेषतायें लिखिये।

उत्तर– अनुवाद का आशय है कि एक भाषा में कही गई बात का दूसरी भाषा में इस प्रकार कहना कि वह बात दूसरी भाषा में समग्रतः प्रस्तुत हो सके।

'स्रोत–भाषा को किसी भी प्रकार की पाठ–सामग्री को लक्ष्य भाषा में समग्रतः प्रस्तुत करना अनुवाद करना कहलाता है।' भाषा के ज्ञान को दूसरी भाषा के पाठकों तक सहज रूप में पहुँचाने के लिये अनुवाद की आवश्यकता होती है। अनुवाद में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिये या अच्छे अनुवाद की निम्नलिखित विशेषतायें होती हैं–

1. अनुवाद में अनुवादक को स्रोत और लक्ष्य भाषा की प्रकृति तथा परिवेश से भली–भाँति परिचित होना चाहिये।
2. साथ ही उनकी सांस्कृतिक–ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से पूर्णतः परिचित होना चाहिये।
3. अनुवाद में अभिव्यक्ति सुबोध, प्रांजल और प्रवाहमयी होना चाहिये।
4. मूल–रचना की शैली सुरक्षित रखना चाहिये।
5. आवश्यकतानुसार शब्दानुवाद के स्थान पर भावानुवाद का सहारा लेना चाहिये।
6. अनुवाद की प्रक्रिया में स्रोत भाषा की प्रतीक व्यवस्था को लक्ष्य भाषा की प्रतीक व्यवस्था में रूपान्तरित करने का भरसक प्रयत्न करना चाहिये।
7. अनुवाद यांत्रिक या निर्जीव लगने वाले नहीं होने चाहिये।
8. प्रवाह और भाषामयता की प्रतीति कराना चाहिये।

प्रश्न–8. अच्छे अनुवाद की विशेषताओं का उल्लेख कीजिये।

उत्तर– अच्छे अनुवाद की विशेषतायें निम्नानुसार हैं–

(1) अनुवाद में मानसिक क्रमबद्धता, एकरूपता तथा सुबोधगम्यता लाने के लिये अनुवाद करते समय एक–एक पैराग्राफ पढ़कर अनुवाद करते जाने के बजाय सम्पूर्ण स्रोत भाषा से समग्र रूप में परिचय होना चाहिये।

(2) किसी भी नई जटिल, अपरिचित पाठ–सामग्री पर अनुवाद कार्य आरम्भ करने से पहले स्रोत भाषा में उसके नवीनतम ग्रन्थ सूचीपरक् सन्दर्भों की खोज कर लेनी चाहिये ताकि सन्दर्भों से पारिभाषिक समस्याओं का समाधान किया जा सके। प्रायः लक्ष्य–भाषा में प्रत्यक्ष सन्दर्भ उपलब्ध नहीं हो पाते, इस स्थिति में विश्वकोशों तथा

विषय से सम्बन्धित कोशों से सहायता लेनी चाहिये। विशेषज्ञों से परामर्श लेना भी उचित होता है।

(3) नये शब्दों, तकनीकी मुहावरों, वनस्पति-विज्ञान की शब्दावली, व्यावसायिक नामों, उत्पादों, संघठनात्मक संकल्पनापरक पारिवर्णी शब्दों के दोनों भाषाओं में समकक्षों को अन्योन्य सन्दर्भों के साथ सूचीबद्ध रूप में रखना बहुत सुविधाजनक होता है। इन सूचियों को समय-समय पर अद्यतन बनाते रहने से विभिन्न विषयों की नवीनतम शब्दावली अनुवादक के पास हर समय रहेगी।

(4) समसामयिक पुस्तकों, निबन्धों, पत्र-पत्रिकाओं के अनुवाद के सम्बन्ध में यदि स्वयं लेखक से सम्पर्क स्थापित किया जाये तो अनुवाद सर्वथा प्रामाणिक तथा उपयुक्त हो जाता है, क्योंकि तकनीकी, वैज्ञानिक एवं साहित्यिक विषयों के अनुवाद या प्रकाशन के बारे में लेखक को पता चलता है, तो वह सामान्य रूप से हर सम्भव उसे अद्यतन बनाने में सहायक होता है।

(5) अनुवाद को चाहिये कि स्रोत-भाषा की सामग्री से तादात्मीकरण करे। उसका यह प्रयास उसे लक्ष्य-भाषाओं में निर्वयक्तिकता के साथ पुनर्सृजित करने में बहुत सहायक होता है। अपनी भाषा से विदेशी भाषा में अनुवाद करने पर विचार-क्षेत्र में परिवर्तन करना होता है, क्योंकि उसके अपने जीवन ढंग, रहन-सहन, आचार-विचार, व्यवहार आदि सभी से अपरिचित एवं विलक्षण होते हैं। तादात्मीकरण की प्रक्रिया की अनुवाद में बड़ी भूमिका होती है।

(6) भाषा का स्वरूप परिवेशबद्ध होता है। इसलिये स्रोत तथा लक्ष्य-भाषाओं की परिस्थितिजन्य स्थितियों से अनुवादक को अवगत रहना उपयुक्त होता है।

(7) साहित्यिक और मानविकी से सम्बंधित विषयों के अनुवाद में भाषागत सांस्कृतिक सन्दर्भों की जानकारी प्रत्येक अनुवादक को होना एकदम अनिवार्य है, क्योंकि सांस्कृतिक संघर्ष और द्विविधायें भाषा पर विशेष छाप डालती हैं।

(8) अनुवाद को यह समझ लेने की विशेष रूप से आवश्यकता है कि वह विषय को ध्यान में रखते हुये उनका अनुवाद करे।

अच्छे अनुवाद में अभिव्यक्ति सुबोध प्रांजल तथा प्रवाहमयता होती है। साथ ही प्रामाणिकता के लिये शाब्दिक और वास्तविक परिशुद्धता भी होना आवश्यक है। जिस अनुवाद में स्रोत भाषा में कथित अभिव्यक्ति ज्यों की त्यों लक्ष्य भाषा में आ जाये, वह उत्तम-कोटि का अनुवाद होता है। अच्छे अनुवाद में यह भी प्रयत्न किया जाना चाहिये कि मूल रचना की शैली सुरक्षित रहे। इसका अर्थ यह नहीं कि शाब्दिक अनुवाद कर दिया जाये। अनुवाद की भाषा स्रोत भाषा की प्रकृति के अनुरूप हो। अनुवाद ऐसा होना चाहिये कि वह यांत्रिक या निर्जीव न लगे।

प्रश्न-9. अनुवादक को किस तरह की 'अनुवाद प्रक्रिया' अपनानी चाहिये? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये।

उत्तर- अनुवाद प्रक्रिया- अनुवाद प्रक्रिया की मूलभूत समस्या लक्ष्य भाषा में अनुवाद मानार्थी खोजने की है। अतः स्रोत भाषा की पाठ-सामग्री को पूरी तरह समझे बिना

अनुवादक लक्ष्य भाषा के समानार्थी शब्दों के द्वारा उसे प्रतिस्थापित नहीं कर सकता। साथ ही लक्ष्य भाषा के वाक्यों तथा संरचनात्मक तत्वों को भी अत्यंत सावधानीपूर्वक प्रयुक्त करना चाहिये। एक शब्द अनेक संदर्भों में प्रयुक्त होकर अनेक अर्थ देता है इसलिये मूल पाठ के संदर्भ और प्रयोग परिवेश को समझकर ही समानार्थी शब्दों का चयन किया जाना चाहिये। प्रत्येक भाषा में अभिव्यक्ति का अपना एक विशेष मुहावरा होता है। इसका लक्ष्य भाषा में अनुवाद कठिन होता है अतः इसका अनुवाद लक्ष्य भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखकर करना चाहिये। वाक्य में पदों का अनुक्रम भी लक्ष्य भाषा की अनुक्रम-व्यवस्था के अनुरूप होना चाहिये। लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा से अनुवाद करते समय शब्दों के लिंग, वचन और व्याकरणिक रूपों की संगति को ध्यान में रखना चाहिये। वाक्यांश और लोकोक्तियों के अनुवाद से लक्ष्य भाषा को अस्पष्ट और अव्यवस्थित नहीं बनाना चाहिये।

अनुवाद ऐसा होना चाहिये कि वह यांत्रिक या निर्जीव न लगे। अनुवाद प्रक्रिया के अंतर्गत व्यावहारिक ज्ञान का होना भी आवश्यक है।

उदाहरण के लिये अंग्रेजी भाषा का निम्नलिखित वाक्य प्रस्तुत है-

The boy, who does not understand that his future depends on hard studies, is a fool.

यदि हिन्दी में इसका अनुवाद इस प्रकार किया जाता है-

'वह लड़का, जो यह नहीं समझता कि उसका भविष्य सख्त अध्ययन पर निर्भर करता है, मूर्ख है।'

तो यह वाक्य-विन्यास हिन्दी भाषा के वाक्य-विन्यास के अनुरूप नहीं होगा। hard के लिये यहां 'सख्त' शब्द भी उपर्युक्त समानार्थी नहीं लगता।

यदि अनुवाद निम्नलिखित हो-

'वह लड़का मूर्ख है जो यह नहीं समझता कि उसका भविष्य कठोर अध्ययन पर निर्भर है।' तो अनुवाद का वाक्य-विन्यास हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुरूप होगा। इसी प्रकार-Sohrab was Killed by his own father Rustam. का अनुवाद 'सोहराब मार दिया गया था अपने पिता रुस्तम के द्वारा' उचित नहीं होगा। हिन्दी में- सोहराब अपने पिता रुस्तम के ही हाथों मारा गया। उपयुक्त अनुवाद होगा। अतः लक्ष्य भाषा के वाक्य-विन्यास को ध्यान में रखकर ही अनुवाद किया जाना चाहिये। जैसा कि कहा गया है प्रत्येक भाषा में अभिव्यक्ति का एक अपना विशेष मुहावरा होता है, इसका लक्ष्य भाषा में यथावत् अनुवाद कठिन होता है, इनका अनुवाद लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप ही होना चाहिये। उदाहरण के लिये-

स्रोत भाषा अंग्रेजी	लक्ष्य भाषा हिन्दी में शब्दशः अनुवाद	सही अनुवाद
(1) There is no room in the car	कार में कोई कमरा नहीं है।	कार में कोई स्थान नहीं है।
यदि अनुवाद 'No Room' अंग्रेजी मुहावरे का अर्थ नहीं जानता और कोष में से room का अर्थ 'कमरा' देखकर अनुवाद कर देता है तो यह भ्रष्ट अनुवाद ही होगा।		
(2) She is taking food/	वह खाना ले रही है।	वह खाना खा रही है

taking meals / taking tea.		(हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप अनुवाद)
(3) He is playing on Violin.	वह वॉयलिन पर खेल रहा है।	वह वॉयलिन बजा रहा है।

लघु एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

प्रश्न–1. लक्ष्य भाषा किसे कहते हैं? संक्षिप्त उत्तर दीजिये।

उत्तर– वह भाषा जिसमें कथित बात को दूसरी भाषा में अनूदित किया जाता है– स्त्रोत भाषा कहलाती है तथा वह भाषा जिसमें अनुवाद किया जाता है, वह लक्ष्य भाषा कही जाती है। लक्ष्य भाषा रचनाकार की अपनी भाषा होती है, जिसे समृद्ध करना रचनाकार का लक्ष्य होता है।

प्रश्न–2. कार्यालयीन अनुवाद किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिये।

उत्तर– अनुवाद के क्षेत्र में कार्यालयी अनुवाद का अत्यधिक महत्व है। कार्यालयी अनुवाद साहित्यिक अनुवाद से सर्वथा भिन्न होता है। दोनों प्रकार के अनुवाद की सामग्री की प्रकृति में काफी अन्तर होता है। इन दोनों प्रकार की समस्याओं में भी अन्तर होना स्वाभाविक हैं। साहित्यिक अनुवाद की समस्यायें पुनः सृजन के स्तर पर होती हैं जबकि कार्यालयी अनुवाद की प्रकृति शब्दों या वाक्यों में प्रतिस्थापन के स्तर पर होती है। दोनों प्रकार के अनुवाद में भाषा का स्वरूप भी बदल जाता है। कार्यालयी अनुवाद में भाषा की प्रयुक्तियाँ मुख्यतः पारिभाषिक, अभिधामूलक एवं सुनिश्चित अर्थ रखने वाली होती हैं। कार्यालयी अनुवादक को इन बातों का ध्यान रखना पड़ता है– शब्द–चयन, भाषा की प्रकृति, शब्द–प्रयुक्ति, भाषा में क्लिष्टता न हो, अनुवाद में अर्थ का अनर्थ न हो, पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग और अनुवादक को विषय का समुचित ज्ञान हो।

प्रश्न–3. अनुवाद की आवश्यकता किसलिये होती है?

उत्तर– अनुवाद के उद्देश्य– अनुवाद के मुख्यतः निम्नलिखित तीन उद्देश्य हैं–

(1) दूसरी भाषा के साहित्य से अपनी भाषा के साहित्य को समृद्ध करना।

(2) दूसरी भाषाओं की शैलियों, मुहावरों, दार्शनिक तथ्यों, वैज्ञानिक तथा तकनीकी ज्ञान की प्राप्ति।

(3) विचार–विनिमय।

उपर्युक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु हमें अनुवाद की आवश्यकता होती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(1) **अनुवाद का शाब्दिक अर्थ है–**

(अ) किसी के कहने के बाद कहना (ब) किसी के कहने को स्वयं कहना

(स) किसी कथन की पुनरावृत्ति करना (द) किसी कथन का भाव व्यक्त करना

उत्तर– (अ) किसी के कहने के बाद कहना

(2) **अनुवाद में कितनी बातों का ध्यान रखना चाहिये?**

(अ) दो (ब) तीन

(स) चार (द) छः

उत्तर– (ब) तीन

(3) **स्त्रोत भाषा कहते हैं–**

(अ) कथित भाषा का दूसरी भाषा में अनुवाद

(ब) साहित्य से पूर्व भाषा को

(स) दूसरी भाषा की शैलियों से पूर्ण भाषा को

(द) अर्थ व्यक्त करने वाली भाषा को

उत्तर– (अ) कथित भाषा का दूसरी भाषा में अनुवाद

(4) **स्त्रोत भाषा का अर्थ है–**

(अ) जिस भाषा से अनुवाद किया जाना है

(ब) जिस भाषा में अनुवाद किया जाना है

(स) लक्ष्य भाषा

(द) शब्द कोश।

उत्तर– (अ) जिस भाषा से अनुवाद किया जाना है।

(5) **अनुवाद का क्या अर्थ है–**

(अ) एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना

(ब) अंग्रेजी की सामग्री को हिन्दी में लिखना

(स) शैली का अनुकरण करना

(द) भाषान्तर करना।

उत्तर– (अ) एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना

(6) **अनुवाद का साधन है–**

(अ) पारिभाषिक शब्दावली (ब) कोश

(स) कम्प्यूटर (द) उपर्युक्त सभी।

उत्तर– (द) उपर्युक्त सभी।

(7) **अनुवाद को अंग्रेजी में क्या कहते हैं?**

(अ) ट्रांसफर (ब) ट्रांसलेशन

(स) ट्रांसनिसन (द) ट्रांसक्रिप्शन।

उत्तर– (ब) ट्रांसलेशन।

(8) **'ट्रांसलेशन' शब्द का निर्माण मूलतः किस भाषा से हुआ है?**

(अ) लैटिन (ब) स्वीडिश

(स) अंग्रेजी (द) फ्रेंच।

उत्तर– (अ) लैटिन।

(9) **अनुवाद में किन तीन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है–**

(अ) पाठ सामग्री, समानार्थक शब्द और पुनर्स्थापना

(ब) शब्द, भाव और अर्थ

(स) पाठ सामग्री, भाषा का ज्ञान और शब्द का बोध
(द) देश की संस्कृति, परम्परा और भाषा

उत्तर– (अ) पाठ सामग्री, समानार्थक शब्द और पुनर्स्थापना

(10) जब अनुवाद में मूल शब्द (वाक्य) आदि पर ध्यान न देकर केवल भाव या विचार पर ध्यान दिया जाता है, तो उसे कहते हैं–

(अ) भावानुवाद (ब) छायानुवाद
(स) सारानुवाद (द) शब्दानुवाद।

उत्तर– (अ) भावानुवाद।

(11) 'अनुवाद' का अर्थ होता है–

(अ) अंग्रेजी की सामग्री को हिन्दी में लिखना
(ब) एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना
(स) भाषान्तर करना
(द) शैली का अनुसरण करना।

उत्तर– (ब) एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना।

(12) अनुवाद में किन तीन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?

(अ) शब्द भाव और अर्थ
(ब) पाठ सामग्री, समानार्थक शब्द और पुनर्स्थापन
(स) देश की संस्कृति, परम्परा और भाषा
(द) पाठ सामग्री, भाषा का ज्ञान और शब्द का बोध।

उत्तर– (द) पाठ सामग्री, भाषा का ज्ञान और शब्द का बोध।

(13) भारत के संविधान में हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है–

(अ) 14 सितम्बर, 1947 को (ब) 14 सितम्बर, 1949 को
(स) 14 सितम्बर, 1950 को (द) 14 सितम्बर, 1951 को

उत्तर– (ब) 14 सितम्बर, 1949 को

(14) भारत में राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया है–

(अ) अवधी को (ब) ब्रज को
(स) बुंदेली को (द) हिन्दी को।

उत्तर– (द) हिन्दी को।

(15) संविधान के किस अनुच्छेद के अनुसार हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया है–

(अ) अनुच्छेद 343 (ब) अनुच्छेद 345
(स) अनुच्छेद 347 (द) अनुच्छेद 349

उत्तर– (अ) अनुच्छेद 343

(16) हिन्दी की लिपि कौन–सी है–

(अ) मगधी (ब) रोमन
(स) मेवाती (द) देवनागरी।

उत्तर– (द) देवनागरी।

(17) अंग्रेजी शासन में फोर्ट विलियम कॉलेज खोला गया था–

(अ) ग्वालियर (ब) दिल्ली
(स) मुंबई (द) कोलकाता।

उत्तर– (द) कोलकाता।

(18) अनुवाद का क्या अर्थ है–

(अ) एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना
(ब) अंग्रेजी की सामग्री को हिन्दी में लिखना
(स) शैली का अनुकरण करना
(द) भाषान्तर करना।

उत्तर– (अ) एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना

(19) अनुवाद में किन तीन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है–

(अ) पाठ सामग्री, समानार्थक शब्द और पुनर्स्थापना
(ब) शब्द, भाव और अर्थ
(स) पाठ सामग्री, भाषा का ज्ञान और शब्द का बोध
(द) देश की संस्कृति, परम्परा और भाषा

उत्तर– (अ) पाठ सामग्री, समानार्थक शब्द और पुनर्स्थापना

(20) स्त्रोत भाषा का अर्थ है–

(अ) जिस भाषा से अनुवाद किया जाना है
(ब) जिस भाषा में अनुवाद किया जाना है
(स) लक्ष्य भाषा
(द) शब्द कोश।

उत्तर– (अ) जिस भाषा से अनुवाद किया जाना है।

(21) प्रारूप से आशय है–

(अ) पत्र की शैली (ब) रूपरेखा
(स) कार्यालयीन पत्र (द) अनुमोदित पत्र।

उत्तर– (ब) रूपरेखा।

(22) किसी विभाग के एक या सभी कर्मचारियों को उनसे सम्बन्धित सूचनायें भेजने के लिये प्रयोग किया जाता है–

(अ) कार्यालय आदेश (ब) प्रतिवेदन
(स) पृष्ठांकन (द) अनुस्मारक।

उत्तर– (अ) कार्यालय आदेश।

(23) कार्यालयों में सूचनाओं और आदेशों का प्रसारण किया जाता है–

(अ) परिपत्र में (ब) ज्ञापन से
(स) टिप्पण से (द) संविदा से।

उत्तर– (अ) परिपत्र में।

(24) ज्ञापन लेखन की शैली होती है–

(अ) उत्तम पुरुष (ब) मध्यम पुरुष
(स) अन्य पुरुष (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (स) अन्य पुरुष।

(25) समस्या का समाधान प्रस्तुत करना विशेषता है–

(अ) टिप्पण की (ब) निविदा की
(स) संकल्प की (द) विज्ञापन की।

उत्तर– (अ) टिप्पण की।

(26) कार्यालय आदेश की भाषा होती है–

(अ) साहित्यिक (ब) सीधी और स्पष्ट
(स) क्लिष्ट (द) इनमें से सभी।

उत्तर– (ब) सीधी और स्पष्ट।

(27) वर्तमान में हम किस युग में जी रहे हैं?

(अ) सूचना एवं प्रौद्योगिकी के युग में (ब) व्यावसायिक और औद्योगिक युग में
(स) अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य युग में (द) विज्ञान और राजनीति के युग में।

उत्तर– (अ) सूचना एवं प्रौद्योगिकी के युग में।

(28) अच्छे अनुवाद में प्रामाणिकता के लिए जरूरी है–

(अ) सत्यता (ब) भावाभिव्यक्ति
(स) वास्तविक परिशुद्धता (द) वास्तविकता।

उत्तर– (स) वास्तविक परिशुद्धता।

(29) अच्छे अनुवाद में प्रमुखतः क्या होना चाहिए?

(अ) भाषाभिव्यक्ति (ब) मूल अभिव्यक्ति
(स) साराभिव्यक्ति (द) भावाभिव्यक्ति।

उत्तर– (ब) मूल अभिव्यक्ति।

(30) अनुवाद की स्रोत भाषा में क्या होना चाहिए?

(अ) शैली सुरक्षित (ब) भाव सुरक्षित
(स) अन्तरंगता सुरक्षित (द) सत्यता सुरक्षित।

उत्तर– (अ) शैली सुरक्षित।

(31) अनुवाद की सौन्दर्यता के लिए यह आवश्यक है कि वह–

(अ) प्रकृति के अनुरूप हो (ब) विकृति के अनुरूप हो
(स) दृष्टि के अनुरूप हो (द) भावाभिव्यक्ति के अनुरूप हो।

उत्तर– (अ) प्रकृति के अनुरूप हो।

(32) वैटरिंग का क्या अर्थ है?

(अ) पुनःपरीक्षण (ब) पुनर्रीक्षण
(स) आत्मपरीक्षण (द) परीक्षण।

उत्तर– (अ) पुनःपरीक्षण।

(33) एक भाषा से दूसरी भाषा में प्राप्त जानकारी को .... कहते हैं।

(अ) वाद विवाद (ब) सार्थकवाद
(स) अनुवाद (द) अर्थानुवाद।

उत्तर– (स) अनुवाद।

(34) निम्न में कौन–सा एक अनुवाद का प्रकार नहीं है?

(अ) सारानुवाद (ब) छायानुवाद
(स) आंशिक अनुवाद (द) भावानुवाद।

उत्तर– (ब) छायानुवाद।

(35) एक भाषा पाठ के अर्थ को दूसरी भाषा में प्रयुक्त करने की प्रक्रिया को क्या कहते हैं?

(अ) निबंध (ब) अनुवाद
(स) कहानी (द) मुहावरा।

उत्तर– (ब) अनुवाद।

(36) जब मूल भाषा को शब्द योजना या वाक्य में तोड़कर लक्ष्य भाषा को ज्यों–का–त्यों व्यक्त किया जाता है, तब उसे हम कहते हैं–

(अ) सारानुवाद (ब) शब्दानुसार
(स) भावानुवाद (द) छायानुवाद।

उत्तर– (ब) शब्दानुसार।

(37) जब मूल भावों को लेकर लक्ष्य भाषा को शर्तानुसार अनुवाद किया जाता है, उसे .... कहते हैं।

(अ) छायानुवाद (ब) कर्मानुवाद
(स) शब्दानुवाद (द) भावानुवाद।

उत्तर– (ब) कर्मानुवाद।

(38) कम्प्यूटर कार्य सम्पन्न कर देता है–

(अ) बहुत शीघ्र किन्तु त्रुटिपूर्ण (ब) धीमे और त्रुटिहीन
(स) बहुत शीघ्र और बिना किसी त्रुटि के
(द) धीमे और त्रुटिपूर्ण।

उत्तर– (स) बहुत शीघ्र और बिना किसी त्रुटि के।

(39) जो शब्द पारिभाषिक अर्थ में भी प्रयुक्त होते हैं और सामान्य अर्थ में भी, उन्हें कहते हैं–

(अ) विदेशी शब्द (ब) देशज शब्द
(स) अर्ध पारिभाषिक शब्द (द) तत्सम शब्द।

उत्तर– (स) अर्ध पारिभाषिक शब्द।

(40) वैज्ञानिक एवं पारिभाषिक शब्दावली आयोग का गठन किया गया–

(अ) सन् 1960 में (ब) सन् 1961 में
(स) सन् 1952 में (द) सन् 1963 में।

उत्तर– (ब) सन् 1961 में।

(41) जब मूल भावों को ध्यान में रखकर वाक्य विन्यास करके अनुवाद किया जाता है, उसे .... कहते हैं।

(अ) भावानुवाद (ब) शब्दानुवाद
(स) कर्मानुवाद (द) छायानुवाद।

उत्तर– (अ) भावानुवाद।

(42) जब दो या अधिक भाषा–भाषी अपने भावों को नहीं समझे तब तीसरा व्यक्ति उन भावों की व्याख्या करता है, उसे .... कहते हैं।

(अ) छायानुवाद (ब) आशु अनुवाद
(स) भावानुवाद (द) शब्दानुवाद।

उत्तर– (ब) आशु अनुवाद।

(43) जब मूल पाठ के सारांश का अनुवाद किया जाता है, तब उसे .... कहते हैं।

(अ) छायानुवाद (ब) सारानुवाद
(स) कर्मानुवाद (द) भावानुवाद।

उत्तर– (ब) सारानुवाद।

(44) जब मूल पाठ के अर्थ का अनुवाद किया जाता है, तब उसे .... कहते हैं।

(अ) अर्थानुवाद (ब) सारानुवाद
(स) कर्मानुवाद (द) छायानुवाद।

उत्तर– (अ) अर्थानुवाद।

(45) एक अच्छे अनुवाद में क्या होना चाहिए?

(अ) लय (ब) प्रवाह
(स) भाषा (द) स्वर।

उत्तर– (ब) प्रवाह।

(46) जिस कोश में शब्द के अर्थ, व्याकरणिक स्थिति तथा पर्याय होते हैं उसे क्या कहते हैं?

(अ) विश्वकोश (ब) शब्दकोश
(स) समान्तर कोश (द) सांस्कृतिक कोश।

उत्तर– (ब) शब्दकोश।

(47) हिन्दी को संविधान के अनुसार कौन–सी भाषा का स्थान प्राप्त है?

(अ) राष्ट्रभाषा (ब) सम्पर्क भाषा
(स) राजभाषा (द) उपभाषा

उत्तर– (स) राजभाषा

(48) By and by की हिन्दी है–

(अ) तुरंत (ब) क्रमशः
(स) के द्वारा (द) खरीदकर।

उत्तर– (ब) क्रमशः

(49) एण्डोर्समेंट की हिन्दी है–

(अ) पारगमन (ब) अधिग्रहण
(स) पृष्ठांकन (द) मूल्यांकन

उत्तर– (स) पृष्ठांकन।

(50) साहित्य पत्रकारिता का श्रीगणेश सबसे पहले कहाँ हुआ?

(अ) यूरोप (ब) फ्रांस
(स) अमेरिका (द) इंग्लैण्ड।

उत्तर– (ब) फ्रांस।

(51) कम्प्यूटर के द्वारा एक भाषा से दूसरी भाषा में किया गया अनुवाद क्या कहलाता है?

(अ) लिप्यंतरण (ब) अनुवाद
(स) भाषानुवाद (द) मशीनी अनुवाद।

उत्तर– (द) मशीनी अनुवाद।

(52) जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे कहते हैं–

(अ) लक्ष्य भाषा (ब) स्रोत भाषा
(स) स्रोत और लक्ष्य भाषा (द) लिप्यंतरण।

उत्तर– (ब) स्रोत भाषा।

(53) अनुवाद का शाब्दिक अर्थ है–

(अ) किसी के कहने के बाद कहना
(ब) किसी के कहने को स्वयं कहना
(स) किसी कथन को एक भाषा से दूसरी भाषा में व्यक्त करना
(द) किसी कथन का भाव व्यक्त करना।

उत्तर– (स) किसी कथन को एक भाषा से दूसरी भाषा में व्यक्त करना

(54) स्रोत भाषा कहते हैं–

(अ) बात को दूसरी भाषा में अनूदित किया जाना
(ब) साहित्य से युक्त भाषा को
(स) दूसरी भाषा की शैलियों से पूर्ण भाषा को
(द) अर्थ व्यक्त करने वाली भाषा को।

उत्तर– (अ) बात को दूसरी भाषा में अनूदित किया जाना।

(55) लक्ष्य भाषा कहते हैं–

(अ) वह भाषा जो कथित बात को कहती है।
(ब) वह भाषा जिसमें अनुवाद होता है।
(स) वह भाषा जो औपचारिक होती है।

(द) वह भाषा जो वैज्ञानिक होती है।

उत्तर– (ब) वह भाषा जिसमें अनुवाद होता है।

(56) 'अनुवाद विश्व के सभी कार्यों से अधिक महत्वपूर्ण और महानतम कार्य है।' यह कथन है–

(अ) नाइडा का (ब) जे.एस.डब्ल्यू. का
(स) देवेन्द्रनाथ शर्मा का (द) जैन कनिंगटन का।

उत्तर– (ब) जे.एस.डब्ल्यू. का।

(57) सर्वप्रथम 'ट्रांसलेशन' शब्द का प्रयोग किसने किया था?

(अ) जैन कनिंगटन (ब) नाइडा
(स) जे.एस. डब्ल्यू (द) मोनियर विलियम्स।

उत्तर– (द) मोनियर विलियम्स।

(58) हिन्दी की लिपि का क्या नाम है?

(अ) रोमन लिपि (ब) ब्राह्मी लिपि
(स) देवनागरी लिपि (द) खरोष्ठी लिपि

उत्तर– (स) देवनागरी लिपि

(59) हिन्दी को संविधान के अनुसार कौन–सी भाषा का स्थान प्राप्त है?

(अ) राष्ट्रभाषा (ब) सम्पर्क भाषा
(स) राजभाषा (द) उपभाषा

उत्तर– (स) राजभाषा

(60) जब मूल का व्याख्या के साथ अनुवाद होता है, तो उसे कहते हैं–

(अ) छायानुवाद (ब) व्याख्यानुवाद
(स) शब्दानुवाद (द) पद्यानुवाद।

उत्तर– (ब) व्याख्यानुवाद।

(61) एक ही भाषा के अन्तर्गत किया जाने वाला अनुवाद कहलाता है–

(अ) अन्तरभाषिक अनुवाद (ब) अन्तःभाषिक अनुवाद
(स) मूलनिष्ठ अनुवाद (द) एकनिष्ठ अनुवाद।

उत्तर– (ब) अन्तःभाषिक अनुवाद।

(62) दुभाषीये द्वारा किया जाने वाला अनुवाद कहलाता है–

(अ) सारानुवाद (ब) वार्तानुवाद
(स) रूपानुवाद (द) शब्दानुवाद।

उत्तर– (ब) वार्तानुवाद।

(63) स्रोत ग्रंथ की मूल बातों का मूल मुक्त अनुवाद कहलाता है–

(अ) सारानुवाद (ब) भावानुवाद
(स) शब्दानुवाद (द) छायानुवाद।

उत्तर– (अ) सारानुवाद।

(64) इनमें से भाषा किसका साधन माना जाता है?

(अ) विश्वव्यवहार का (ब) लेखन का
(स) विचार आदान–प्रदान का (द) लेन देन का

उत्तर– (स) विचार आदान–प्रदान का

(65) किसी काव्य रचना का गद्य या मुक्त छंद में अनुवाद क्या कहलाता है?

(अ) पद्यानुवाद (ब) गद्यानुवाद
(स) काव्यानुवाद (द) भाषिकानुवाद।

उत्तर– (स) काव्यानुवाद।

(66) 'विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना अनुवाद है' यह कथन है–

(अ) जे.बी. पटनायक का (ब) देवेन्द्रनाथ शर्मा का
(स) नाइडा का (द) भोलानाथ तिवारी का।

उत्तर– (ब) देवेन्द्रनाथ शर्मा का।

(67) भोलानाथ तिवारी के अनुसार अनुवाद के वर्गीकरण का आधार है–

(अ) गद्यत्व पद्यत्व (ब) विषय
(स) साहित्यिक विधा (द) उपर्युक्त सभी।

उत्तर– (द) उपर्युक्त सभी।

(68) निम्नलिखित वाक्यों में सही अथवा गलत का निशान लगायें–

(1) भाषा का प्रयोग चार तरीकों से किया जाता है– सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना।
(2) अनुवाद की प्रक्रिया में कम से कम तीन भाषाएँ शामिल होती हैं– स्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा और मध्यस्थ भाषा।
(3) किसी एक समूह की भाषा से दूसरे समूह की भाषा में अनुवाद करना सरल है।
(4) विश्वकोश शब्दकोश से बिल्कुल भिन्न होता है।
(5) अनुवादक के लिए सबसे अधिक आवश्यक है द्विभाषी कोश।
(6) सीडी के रूप में उपलब्ध शब्दकोश को ऑनलाइन शब्दकोश कहते हैं।
(7) हिन्दी में सभी तरह के ऑनलाइन शब्दकोश उपलब्ध नहीं हैं।

उत्तर– (1) सही, (2) गलत, (3) गलत, (4) सही, (5) सही, (6) गलत, (7) सही।

(69) निम्नलिखित वाक्यों में खाली स्थान को भरिये–

1. **आजकल अनुवाद शब्द अंग्रेजी के.................... के पर्याय के रूप में प्रतिष्ठित है।**

(ट्रांसलेशन/ईक्विलेंट)

उत्तर– ट्रांसलेशन

2. **अनुवाद करने में......................एक महत्वपूर्ण सहायक उपादान है।**

(ग्रन्थ/कोश)

उत्तर– कोश

3. अनुवाद करते समय................. का भी ध्यान रखना चाहिये।

(धार्मिक/सांस्कृतिक परम्पराओं)

उत्तर– सांस्कृतिक परम्पराओं

4. अनुवाद की प्रक्रिया के अर्न्तगत................ज्ञान का होना भी आवश्यक है।

(शास्त्रीय/व्यावहारिक)

उत्तर– व्यावहारिक।

(3)
लोकतंत्र, समरसता, कला, साहित्य, अध्यात्म

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(1) लोकतंत्र एक प्रकार का क्या है?
(अ) विचार तंत्र (ब) स्वतंत्रता
(स) शासन व्यवस्था (द) गणतंत्र।
उत्तर– (स) शासन व्यवस्था।

(2) देश में सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक स्वतंत्रता ...... प्रदान करती है।
(अ) देश की सरकार (ब) देश की शासन प्रणाली
(स) विदेशी शासन प्रणाली (द) तानाशाही।
उत्तर– (ब) देश की शासन प्रणाली।

(3) लोकतंत्र अच्छा है, क्योंकि .... ।
(अ) व्यक्ति का गौरव बढ़ता है
(ब) यह नागरिकों को समानता देता है
(स) निर्णय लेने की गुणवत्ता को बढ़ाता है
(द) उपरोक्त सभी।
उत्तर– (द) उपरोक्त सभी।

(4) जनता का जनता के द्वारा बनाये गये तंत्र को क्या कहते हैं?
(अ) लोकतंत्र (ब) जनतंत्र
(स) घटनातंत्र (द) गणतंत्र।
उत्तर– (अ) लोकतंत्र।

(5) भारत एक संसदीय धर्म निरपेक्ष .... गणराज्य है।
(अ) अर्धतांत्रिक (ब) लोकतांत्रिक
(स) जनतांत्रिक (द) गणतांत्रिक।

उत्तर– (ब) लोकतांत्रिक।

(6) भारत में सरकार का प्रमुख .... होता है।
(अ) गृहमंत्री (ब) प्रधानमंत्री
(स) मुख्यमंत्री (द) राष्ट्रपति।
उत्तर– (ब) प्रधानमंत्री।

(7) आमतौर पर किस सरकार को प्रतिनिधि के रूप में जाना जाता है?
(अ) एकतांत्रिक (ब) राजतंत्र
(स) लोकतांत्रिक (द) स्वतंत्र सरकार
उत्तर– (स) लोकतांत्रिक।

(8) लोकतंत्र के सामने सबसे बड़ी चुनौती क्या है?
(अ) खाद्यान्न की व्यवस्था (ब) उच्च शिक्षा की व्यवस्था
(स) जनसंख्या पर नियंत्रण (द) लोकतंत्र को सशक्त बनाना।
उत्तर– (द) लोकतंत्र को सशक्त बनाना।

(9) लोकतंत्र आने से पहले नेपाल का अंतिम राजा कौन था?
(अ) राजा ग्यात्सो (ब) राजा ज्ञानेन्द्र
(स) राजा जयचन्द्र (द) राजा पद्मा।
उत्तर– (ब) राजा ज्ञानेन्द्र।

(10) लोकतंत्र को 'जनता का, जनता के लिए और जनता के द्वारा शासन' के रूप में किसने परिभाषित किया था?
(अ) महात्मा गाँधी ने (ब) अब्राहम लिंकन ने
(स) प्लेटो ने (द) सरदार पटेल ने।
उत्तर– (ब) अब्राहम लिंकन ने।

(11) लोकतंत्र के मूल्यांकन के लिहाज से इनमें कोई एक चीज लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के अनुरूप नहीं है। उसे चुनें–
(अ) व्यक्ति की गरिमा (ब) स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव
(स) कानून के समक्ष समानता (द) बहुसंख्यकों का शासन।
उत्तर– (ब) स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव।

(12) जब लोकतंत्र के निर्णय एक सही प्रक्रिया के अनुसार लिए जाते हैं, उसे कहते हैं–
(अ) सही प्रक्रिया (ब) पारदर्शिता
(स) तानाशाही (द) सही लोकतंत्र।
उत्तर– (ब) पारदर्शिता।

(13) लोकतंत्र निम्नलिखित में से किसके अतिरिक्त सभी की गुणवत्ता में सुधार करता है–
(अ) आजीविका और व्यवसाय (ब) शिक्षण और अधिगम
(स) निर्णय लेना और जवाबदेही (द) इच्छाएँ और अपेक्षाएँ।

उत्तर– (द) इच्छाएँ और अपेक्षाएँ।

(14) निम्न मूल्यों में से किसका लोकतंत्र में नैतिक और कानूनी प्रतिबंध है?

(अ) लिंग समानता (ब) जाति–आधारित समानता
(स) आर्थिक समानता (द) उपरोक्त सभी।

उत्तर– (अ) लिंग समानता।

(15) भारत का प्रथम नागरिक किसे कहते हैं?

(अ) प्रधानमंत्री को (ब) मुख्यमंत्री को
(स) राष्ट्रपति को (द) गृहमंत्री को।

उत्तर– (स) राष्ट्रपति को।

(16) संवैधानिक लोकतंत्र .... संचालित होता है।

(अ) अर्थनीति से (ब) राजनीति से
(स) संविधान से (द) शासन से।

उत्तर– (स) संविधान से।

(17) लोकसभा के सदस्यों का चुनाव .... वर्ष बाद होता है।

(अ) तीन वर्ष (ब) चार वर्ष
(स) पाँच वर्ष (द) छः वर्ष।

उत्तर– (स) पाँच वर्ष।

(18) सभी को अपने समान समझना .... कहलाता है।

(अ) भेदभाव (ब) मित्रता
(स) समरसता (द) वैमनस्यता।

उत्तर– (स) समरसता।

(19) प्राचीन भारतीय संस्कृति ने कभी भी किसी के साथ .... स्वीकार नहीं किया।

(अ) भेदभाव (ब) मित्रभाव
(स) घृणाभाव (द) बैरभाव।

उत्तर– (अ) भेदभाव।

(20) समाज के सभी वर्गों एवं वर्णों के मध्य एकता स्थापित करना .... कहलाता है।

(अ) सामाजिक वैमनस्यता (ब) सामाजिक समरसता
(स) सामाजिक मित्रता (द) सामाजिक कटुता।

उत्तर– (ब) सामाजिक समरसता।

(21) केवल विचारों की बराबरी को .... कहते हैं।

(अ) भेदभाव (ब) समरसता
(स) मित्रता (द) एकता।

उत्तर– (ब) समरसता।

(22) समरसता दिवस कब मनाया जाता है?

(अ) 14 मार्च को (ब) 14 अप्रैल को
(स) 14 मई को (द) 14 जून को।

उत्तर– (ब) 14 अप्रैल को।

(23) समरसता का क्या अर्थ है?

(अ) नफरत (ब) समानता
(स) भेदभाव (द) सामाजिक भाईचारा।

उत्तर– (द) सामाजिक भाईचारा।

(24) सामाजिक समरसता दिवस कब मनाया जाता है?

(अ) 1 दिसम्बर को (ब) 3 दिसम्बर को
(स) 6 दिसम्बर को (द) 10 दिसम्बर को।

उत्तर– (स) 6 दिसम्बर को।

(25) मनोवैज्ञानिक स्तर पर सामंजस्यता का क्या आशय है?

(अ) दूसरों के प्रति नापसंदगी
(ब) दूसरों के प्रति अपनेपन और स्नेह की भावना
(स) दूसरों के प्रति वैमनस्यता
(द) दूसरों के प्रति ईर्ष्या।

उत्तर– (ब) दूसरों के प्रति अपनेपन और स्नेह की भावना।

(26) एक ही ईश्वर की संतान किसे माना जाता है?

(अ) सभी मनुष्यों को (ब) धनवान लोगों को
(स) समान पेशे वाले लोगों को (द) एक ही जाति के लोगों को।

उत्तर– (अ) सभी मनुष्यों को।

(27) प्राचीन भारतीय में वर्ण व्यवस्था किस आधार पर की गई?

(अ) जन्म के आधार पर (ब) जाति के आधार पर
(स) कर्म के आधार पर (द) धर्म के आधार पर।

उत्तर– (स) कर्म के आधार पर।

(28) कौनसे व्यवहार सामाजिक बन्धुत्व की भावना को दर्शाते हैं–

(अ) समरसता और आत्मीयता (ब) संघर्ष और अलगाव
(स) भेदभाव और नफरत (द) असमानता और अलगाव।

उत्तर– (अ) समरसता और आत्मीयता।

(29) सामाजिक समरसता का घटक कौनसा है?

(अ) सहिष्णुता (ब) बन्धुता
(स) आत्मीयता (द) उपरोक्त सभी।

उत्तर– (द) उपरोक्त सभी।

(30) समानता के मुख्य आयाम कितने होते हैं?

(अ) दो (ब) तीन
(स) चार (द) पाँच।

उत्तर– (ब) तीन।

(31) भीमराव अम्बेडकर के निर्वाण दिवस को किस दिन के रूप में मनाया जाता है–

(अ) सामाजिक समरसता दिवस (ब) मानवीय एकता दिवस
(स) मानवीय स्वतंत्रता दिवस (द) सामाजिक एकता दिवस।

उत्तर– (अ) सामाजिक समरसता दिवस।

(32) सुन्दर यानि जो आनन्द प्रदान करती है, उसे .... कहते हैं।

(अ) वीथिका (ब) कला
(स) संस्कृत (द) प्रकृति।

उत्तर– (ब) कला।

(33) अन्य कला रूपों से अलग करने को .... कहते हैं।

(अ) गायन कला (ब) दृश्य कला
(स) वीभत्स कला (द) उत्प्रेरण कला।

उत्तर– (ब) दृश्य कला।

(34) कला का जनक किसे माना जाता है?

(अ) भगवान कृष्ण (ब) भगवान शिव
(स) भगवान राम (द) भगवान गणेश।

उत्तर– (ब) भगवान शिव।

(35) संगीत कला, वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला तथा कविता में .... व्यक्त किया जाता है।

(अ) मानवीय भावनाओं को (ब) दुःखों को
(स) आगन्तुकों को (द) उत्साह को।

उत्तर– (अ) मानवीय भावनाओं को।

(36) कुछ ऐसा जो कल्पना और कौशल के साथ बनाया गया हो, जो सुन्दर हो या महत्वपूर्ण विचारों, भावनाओं को व्यक्त करता हो, उसे .... कहते हैं।

(अ) कौशल (ब) कला
(स) विचाराभिव्यक्ति (द) भावनाभिव्यक्ति।

उत्तर– (अ) कला।

(37) भारत में कितनी कलायें हैं?

(अ) दो (ब) चार
(स) आठ (द) अनेक।

उत्तर– (द) अनेक।

(38) शुक्रनीति सार के अनुसार कलाओं की संख्या होती है।

(अ) 24 (ब) 44
(स) 64 (द) 84

उत्तर– (स) 64

(39) शैव तंत्र के अनुसार कला की .... कलायें हैं।

(अ) 28 (ब) 56
(स) 64 (द) 84

उत्तर– (स) 64

(40) ललित विस्तर के अनुसार .... कलायें होती हैं।

(अ) 64 (ब) 86
(स) 96 (द) 108

उत्तर– (ब) 86

(41) कला का सबसे महत्वपूर्ण तत्व .... है।

(अ) सीमा (ब) रेखा
(स) वादन (द) गायन।

उत्तर– (ब) रेखा।

(42) निम्न से किसे कला नहीं माना जाता?

(अ) मूर्ति (ब) संगीत
(स) चित्रकारी (द) अंकशास्त्र।

उत्तर– (द) अंकशास्त्र।

(43) 'कला' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(अ) जो सुन्दर नहीं है (ब) जो कुरूप है
(स) जो उबाऊ है (द) जो सुन्दर है।

उत्तर– (द) जो सुन्दर है।

(44) पाठ के अनुसार, कला प्रायः .... अनुकरण करती है।

(अ) शिल्प का (ब) मूल का
(स) तकनीक का (द) प्रकृति का।

उत्तर– (ब) मूल का।

(45) किसी कलाकृति को बनाने के लिए जरूरी है–

(अ) नकल कौशल में निपुणता (ब) प्रयुक्त तकनीक की जानकारी
(स) शिल्प कौशल का ज्ञान (द) कला में एम.ए. करना।

उत्तर– (स) शिल्प कौशल का ज्ञान।

(46) मूर्तिकला एवं वस्तु शिल्प किस श्रेणी में आते हैं?

(अ) शिल्प (ब) तकनीक
(स) नकल (द) कौशल।

उत्तर– (अ) शिल्प।

(47) साहित्य कितने प्रकार का होता है?

(अ) दो (ब) तीन
(स) चार (द) छः।

उत्तर– (ब) तीन।

(48) किसी भाषा के वाचिक और लिखित शास्त्र समूह को ...... कहते हैं।
(अ) साहित्य (ब) निबंध
(स) वादन (द) गायन।
उत्तर– (अ) साहित्य।

(49) साहित्य के प्रमुख कितने प्रकार हैं?
(अ) राग, द्वेष, वैश्य साहित्य (ब) गद्य, पद्य, चम्पू साहित्य
(स) क्रोध, वैमनस्य, दुख (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (ब) गद्य, पद्य, चम्पू साहित्य।

(50) साहित्य किसके द्वारा रचा जाता है?
(अ) गायन (ब) भाषा
(स) नृत्य (द) वादन।
उत्तर– (ब) भाषा।

(51) साहित्य का मानव जीवन पर क्या प्रभावशाली प्रभाव पड़ा है?
(अ) पारम्परिक प्रथाओं को बल मिला है
(ब) लोग समझदार हो रहे हैं
(स) समाज पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है
(द) क्रान्तिकारी परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं।
उत्तर– (अ) पारम्परिक प्रथाओं को बल मिला है।

(52) सबसे पुराना साहित्य कौनसा है?
(अ) वेद (ब) रामायण
(स) पुराण (द) महाभारत।
उत्तर– (अ) वेद।

(53) अच्छा साहित्य किसी व्यक्ति के चरित्र पर क्या प्रभाव डाल सकता है?
(अ) चरित्र का बिगड़ना (ब) चालाकी सिखाना
(स) चरित्र उत्थान (द) कोई प्रभाव नहीं।
उत्तर– (स) चरित्र उत्थान।

(54) मनोरंजन और सौन्दर्यपरक आनन्द के लिए क्या लिखा जाता है?
(अ) कविता (ब) निबंध
(स) साहित्य (द) आत्मकथा
उत्तर– (स) साहित्य।

(55) गद्य प्रबंध कितने प्रकार के होते हैं?
(अ) दो (ब) चार
(स) छः (द) आठ।
उत्तर– (ब) चार।

(56) वेद के बाद किस ग्रंथ की रचना हुई?
(अ) स्मृतियाँ (ब) अरण्यक
(स) उपनिषद् (द) पुराण।
उत्तर– (स) उपनिषद्।

(57) सबसे प्राचीन वेद कौनसा है?
(अ) अथर्ववेद (ब) यजुर्वेद
(स) सामवेद (द) ऋग्वेद।
उत्तर– (द) ऋग्वेद।

(58) अष्टांग मार्ग .... धर्म से सम्बन्धित है।
(अ) जैन (ब) हिन्दू
(स) सिक्ख (द) बौद्ध।
उत्तर– (ब) हिन्दू।

(59) धर्म .... होता है–
(अ) तर्क–प्रधान (ब) नीति–प्रधान
(स) सत्य–प्रधान (द) भावना–प्रधान।
उत्तर– (द) भावना–प्रधान।

(60) 'आध्यात्मिक शक्ति पर विश्वास होना' यह किसने कहा है?
(अ) ऑगबर्न ने (ब) मजूमदार ने
(स) टायलर ने (द) दुर्खीम ने।
उत्तर– (स) टायलर ने।

(61) परमात्मा और आत्मा से सम्बन्ध रखने वाले सम्बन्ध को .... कहते हैं।
(अ) मित्रता (ब) दर्शन
(स) आध्यात्म (द) धर्म।
उत्तर– (स) आध्यात्म।

(62) आध्यात्मिक ज्ञान कैसे प्राप्त होता है?
(अ) सुनने से (ब) गायन से
(स) शिक्षण से (द) अनुभव से।
उत्तर– (द) अनुभव से।

(63) आध्यात्मिक होने का आशय है–
(अ) नीरसता से परे (ब) दीनता से परे
(स) शौर्यता से परे (द) भौतिकता से परे।
उत्तर– (द) भौतिकता से परे।

(64) भक्ति समाधि, योग समाधि, ज्ञान समाधि किसके प्रकार हैं?
(अ) वेद (ब) उपनिषद
(स) स्मृतियाँ (द) आध्यात्म।

उत्तर– (द) आध्यात्म।

(65) आत्म कितने प्रकार के होते हैं?

(अ) दो (ब) तीन
(स) चार (द) पाँच।

उत्तर– (ब) तीन।

(66) आदि शंकराचार्य का जन्म भारत में किस राज्य में हुआ?

(अ) काशी में (ब) केरल में
(स) मध्यप्रदेश में (द) गुजरात में।

उत्तर– (ब) केरल में

(67) आदि शंकराचार्य के गुरु कौन थे?

(अ) स्वामी विवेकानन्द (ब) रामकृष्ण परमहंस
(स) आचार्य गोविन्द भगतपाद (द) महर्षि दयानन्द।

उत्तर– (स) आचार्य गोविन्द भगतपाद

(68) पाठ के अनुसार अध्यात्म का संबंध किससे है?

(अ) बाहरी दुनिया से (ब) शारीरिक सुख से
(स) चमत्कार का अनुभव करने से (द) हमारे आन्तरिक जीवन से।

उत्तर– (द) हमारे आन्तरिक जीवन से।

(69) संस्कृत भाषा में 'आध्यात्मिकता' शब्द का अर्थ है–

(अ) ध्यान का अभ्यास करना (ब) आध्यात्मिक चिंतन करना
(स) दिव्य आनंद का अनुभव करना (द) स्वयं के अस्तित्व से जुड़ना।

उत्तर– (स) स्वयं के अस्तित्व से जुड़ना।

(70) आध्यात्मिकता किसी व्यक्ति को क्या अनुभव करा सकती है?

(अ) पूर्व जन्म का (ब) दिव्य आनंद का
(स) परमात्मा की शक्ति का (द) पूर्ण आत्मज्ञान का।

उत्तर– (द) पूर्ण आत्मज्ञान।

(71) आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित मठ कौनसा नहीं है?

(अ) श्रृंगेरी शारदा पीठम् (ब) ज्योतिपीठ पीठम्
(स) हाबरक पीठम् (द) गोवर्धन पीठम्।

उत्तर– (स) हाबरक पीठम्

(72) हिन्दू धर्म के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति आदि शंकराचार्य द्वारा चारों दिशाओं द्वारा चारों दिशाओं में स्थापित चारों मठों की यात्रा कर लेता है तो वह–

(अ) प्रसन्नता प्राप्त करता है
(ब) कभी मरता नहीं अमर रहता है
(स) आशीर्वाद प्राप्त करता है
(द) मोक्ष की प्राप्ति की ओर अग्रसर रहता है।

उत्तर– (द) मोक्ष की प्राप्ति की ओर अग्रसर रहता है।

(73) भारतीय संस्कृति में पहला पुरुषार्थ कौन–सा माना गया है?

(अ) काम (ब) मोक्ष
(स) धर्म (द) अर्थ।

उत्तर– (स) धर्म।

(74) अद्वैत सिद्धान्त के प्रवर्तक दार्शनिक हैं–

(अ) आदि शंकराचार्य (ब) माधवाचार्य
(स) गोविंदाचार्य (द) बल्लभाचार्य।

उत्तर– (अ) आदि शंकराचार्य।

(75) 'अहं ब्रह्मास्मि' कौन–से सिद्धान्त का महावाक्य है?

(अ) अद्वैत (ब) विशिष्टाद्वैत
(स) द्वैत (द) द्वैताद्वैत।

उत्तर– (अ) अद्वैत।

(76) अद्वैत सिद्धान्त के अनुसार परम तत्व कौन–सा है?

(अ) माया (ब) जीव
(स) ब्रह्म (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (स) ब्रह्म।

(77) 'आत्मन्' शब्द का क्या अर्थ है?

(अ) ध्यान का अभ्यास (ब) दिव्य आनंद की अनुभूति
(स) एक उच्च शक्ति में विश्वास
(द) आत्मा जिसमें जीवन और संवेदना का सिद्धान्त शामिल है

उत्तर– (द) आत्मा जिसमें जीवन और संवेदना का सिद्धान्त शामिल है।

(78) अध्यात्म में 'अधि' उपसर्ग का क्या अर्थ है?

(अ) आत्मा (ब) आधा
(स) ब्रह्म (द) वर्तमान में, किसी से ऊपर।

उत्तर– (द) वर्तमान में, किसी से ऊपर।

(79) अध्यात्म का उद्देश्य क्या है?

(अ) पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना
(ब) दिव्य आनंद का अनुभव करना
(स) धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या करना
(द) स्वयं के अस्तित्व से जुड़ना और उसकी सूक्ष्म व्याख्या करना।

उत्तर– (द) स्वयं के अस्तित्व से जुड़ना और उसकी सूक्ष्म व्याख्या करना।

(80) ब्रह्म का स्वरूप लक्षण है– 'सच्चिदानंद', सच्चिदानंद में सत् का अर्थ है–

(अ) चेतना (ब) आनंद
(स) अस्तित्व में होना (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (स) अस्तित्व में होना।

(81) आदि शंकराचार्य के गुरु का नाम है–

(अ) गौड़पादाचार्य (ब) मध्वाचार्य
(स) गोविंदाचार्य (द) बल्लभाचार्य।

उत्तर– (स) गोविंदाचार्य।

(82) शंकराचार्य ने कितने ज्योतिर्लिंगों की स्थापना की?

(अ) 11 (ब) 7
(स) 9 (द) 12

उत्तर– (द) 12

(83) शृंगेरी मठ, कहाँ पर है?

(अ) दक्षिण भारत (ब) उत्तर भारत

(स) पश्चिम भारत (द) पूर्वी भारत।

उत्तर– (अ) दक्षिण भारत।

(84) भारतीय भाषाओं में रामकथा का जिन आयामों में वर्णन किया गया है, उसे कहते हैं–

(अ) रामकथा (ब) रामोपाख्यान

(स) रामचरितमानस (द) रामसागर।

उत्तर– (ब) रामोपाख्यान।

(85) रामकथा का मूल आधार है–

(अ) बाल्मीकि रामायण (ब) बरवै रामायण

(स) कम्ब रामायण (द) राघव चरित।

उत्तर– (अ) बाल्मीकि रामायण।

□□□

कृपया ध्यान दें

VVP विश्वविद्यालय प्रकाशन, ग्वालियर द्वारा नई शिक्षा नीति पर प्रकाशित बी.ए., बी.कॉम. तथा बी.एस-सी. तृतीय वर्ष की '20 प्रश्न' पुस्तकें खरीदते समय प्रत्येक पेज पर 2024 छपा देखकर, सही तथा असली पुस्तक ही खरीदें। बी.कॉम. तथा बी.एस-सी. अंग्रेजी माध्यम में भी प्रकाशित हैं।